"समग्र शिक्षा के तहत निःशुल्क वितरित"

कक्षा: छठी

विषय: सामाजिक विज्ञान

इतिहास

हमारा भारत-I

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

कक्षा छठी के लिए इतिहास
की पाठ्य पुस्तक

2022

मौलिक शिक्षा विभाग, हरियाणा

ई-पाठशाला

क्यूआर (QR) कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए उपयोगकर्ताओं के लिए चरणबद्ध मार्गदर्शिका

प्रत्येक अध्याय के पहले पृष्ठ पर स्थित कोड बॉक्स को क्विक रिस्पांस कोड – क्यूआर (QR) कोड कहते हैं। यह आपको अध्याय में दिए गए विषयों से संबंधित ई-सामग्री, जैसे ऑडियो, वीडियो, मल्टीमीडिया, पाठ्य-सामग्री आदि को प्राप्त करने में सहायता करेगा। पहला क्यूआर कोड संपूर्ण ई-पाठ्यपुस्तक प्राप्त करने के लिए है और प्रत्येक अध्याय में दिए गए क्यूआर कोड उस अध्याय से संबंधित ई-सामग्री प्राप्त करने में मदद करेंगे। यह प्रक्रिया आपको आनंदपूर्ण तरीके से सीखने में मदद करेगी।

अपने मोबाइल फ़ोन या टेबलेट द्वारा निम्नवत् चरणों का पालन कर और ई-पाठशाला के माध्यम से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1	2	3	4	5
प्ले स्टोर से ई-पाठशाला स्कैनर एप इंस्टॉल करें और इसे खोलें	क्यूआर कोड स्कैनिंग विंडो को तैयार रखें	स्कैनर से क्यूआर कोड को स्कैन करें	लिंक को सिलेक्ट एवं क्लिक करें	उपलब्ध ई-सामग्री का प्रयोग करें

डेस्कटॉप या लैपटॉप पर ई-पाठशाला द्वारा ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे दिए गए चरणों का पालन करें— https://epathshala.nic.in/topics.php पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

दीक्षा

दीक्षा एप को गुगल प्लेस्टोर से डाउनलोड करें फिर नीचे दिए गए चरणों का पालन करें। **दीक्षा** का उपयोग करते हुए आप अपने स्मार्टफोन या टेबलेट से ई-सामग्री प्राप्त करें।

1	2	3	4	5	6
अपनी पसंदीदा भाषा का चयन करें	अपनी भूमिका चुनें–शिक्षक या विद्यार्थी	पहुँच प्रदान करें और एप को अनुमति दें	क्यूआर कोड को स्कैन करने के लिए टैप करें	कैमरा पाठ्यपुस्तक के क्यूआर कोड पर फोकस करें	क्लिक करके क्यूआर कोड से संबद्ध ई-सामग्री प्ले करें

डेस्कटॉप या लेपटॉप पर दीक्षा का उपयोग करते हुए ई-सामग्री प्राप्त करने के लिए नीचे बताए गए चरणों का पालन करें– https://diksha.gov.in/resources पर जाएँ और क्यूआर कोड के नीचे दिए गए एल्फान्यूमेरिक कोड को दर्ज करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

जन-गण-मन

जन-गण-मन अधिनायक जय हे
भारत-भाग्य-विधाता।
पंजाब सिंध गुजरात मराठा
द्राविड़ उत्कल बंग।
विंध्य हिमाचल यमुना गंगा,
उच्छल जलधि तरंग।
तव शुभ नामे जागे,
तव शुभ आशिष माँगे;
गाहे तव जय गाथा।
जन-गण मंगलदायक जय हे,
भारत-भाग्य-विधाता।
जय हे, जय हे, जय हे,
जय जय जय जय हे।।

भारत माता की जय।

सामाजिक विज्ञान

इतिहास

हमारा भारत-I

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

कक्षा छठी के लिए पाठ्यपुस्तक

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
Board of School Education Haryana

मूल संस्करण :

© हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

संस्करण : **प्रथम - 2022**

संख्या : 1,50,000

मूल्य :

सर्वाधिकार सुरक्षित

- प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, इस प्रकाशन के किसी भी भाग को छापना तथा इलैक्ट्रॉनिकी, मशीनी, फोटो प्रतिलिपि, रिकार्डिंग अथवा किसी विधि से पुनः प्रयोग पद्धति द्वारा इसका संग्रहण और प्रसारण वर्जित है।

- इस पुस्तक की बिक्री इस शर्त के साथ की गई है कि प्रकाशक की पूर्व अनुमति के बिना, यह पुस्तक अपने मूल आवरण अथवा जिल्द के अलावा किसी अन्य प्रकार से व्यापार द्वारा उधारी पर पुन:विक्रय या किराये पर न दी जायेगी और न ही बेची जायेगी।

- सभी मानचित्र ArcGIS सॉफ्टवेयर के माध्यम से तैयार किए गए हैं। इस प्रक्रिया में कई मुक्त स्रोतों से जुटाए गए भू-आकृतिक आंकड़ों का प्रयोग किया गया है। सभी मानचित्रों का प्रति सत्यापन कर लिया गया है एवं अशुद्धियों को न्यूनीकृत करने का यथासम्भव प्रयत्न किया गया है, यद्यपि आधार मानचित्र की शुद्धता के आधार पर सीमांकन में बहिर्वेशन अथवा अंतर्वेशन की संभावना से इंकार नहीं किया जा सकता। यद्यपि आधिकारिक और स्थापित मानचित्रों को ही आधार मानचित्रों के रूप में प्रयुक्त किया गया है तथापि मानचित्रों में कोई असंगतता सुधी पाठकों के ध्यान में आती है, तो वे यथोचित प्रमाणों के साथ उसे शुद्धिकरण हेतु प्रस्तुत करने की कृपा करें।

- पाठ्यपुस्तक में प्रयुक्त चित्रों को विभिन्न पुस्तकों, संग्रहालयों और इंटरनेट पर उपलब्ध मुक्त स्रोतों से संग्रहीत किया गया है। चित्रों के प्रयोग का उद्देश्य विषयवस्तु का स्पष्टीकरण तथा छात्रों का घटनाओं, पात्रों और स्थानों से जुड़ाव करवाने का है। इन चित्रों को मात्र सामान्य सूचना एवं शैक्षिक उद्देश्यों के लिए ही प्रयोग किया गया है।

- इस प्रकाशन का सही मूल्य इस पृष्ठ पर मुद्रित है। रबड़ की मुहर अथवा चिपकाई गई पर्ची (स्टीकर) या किसी अन्य विधि द्वारा अंकित कोई भी संशोधित मूल्य मान्य नहीं होगा।

सचिव

मुद्रक : **सुप्रीम ऑफसेट प्रेस**, 133, उद्योग केंद्र एक्स.-1, ग्रेटर नोएडा, उ.प्र.

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

प्राक्कथन

समय परिवर्तन के साथ-साथ राष्ट्रीय उद्देश्यों को ध्यान में रखते हुए शिक्षा में परिवर्तन अति आवश्यक है ताकि विकास तीव्रतम गति से हो। विद्यालयी शिक्षा को प्रभावशाली, सकारात्मक व सुरुचिपूर्ण बनाने हेतु पाठ्यचर्या में समय-समय पर सकारात्मक बदलाव करना एक आवश्यक कदम है। वर्तमान में नि:शुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा के अंतर्गत समस्त शिक्षण अथवा शैक्षणिक क्रियाओं के केन्द्र में छात्र हैं। इसलिए छात्रों की सीखने के प्रति रुचि बढ़ाने, उनका स्थानीय, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय विषयों पर स्वतन्त्र चिंतन विकसित करने के उद्देश्य से भी पाठ्यचर्या में परिवर्तन आवश्यक है। इस कार्य में शिक्षक की सहयोगी एवं मार्गदर्शक की भूमिका अपेक्षित रहती है।

इस प्रकार पाठ्यचर्या में बदलाव की आवश्यकता को देखते हुए, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड ने इतिहास विषय के विशेषज्ञों (जिनमें विद्यालय से लेकर विश्वविद्यालय स्तर तक के शिक्षक शामिल थे) से विचार-विमर्श करके कक्षा छठी से दसवीं तक के इतिहास विषय के पाठ्यक्रम का विश्लेषण करते हुए नया पाठ्यक्रम तैयार किया है। इस पाठ्यक्रम को तैयार करते समय राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 की उस भावना को ध्यान में रखा गया है जिसके अन्तर्गत विभिन्न विद्यालयी विषयों के माध्यम से छात्रों को भारत का उपयुक्त ज्ञान कराने की अनुशंसा की गई है। इस परिधि में भारतवासियों की सफलता की गाथाएँ तथा भविष्य की चुनौतियों का उल्लेख व भारत के सुदूर क्षेत्रों में बसने वाले समाज की ज्ञान परम्पराओं का विशेष समावेश करने की बात कही गई है। शिक्षा नीति-2020 के निर्देशों की अनुपालना इतिहास की इन पुस्तकों के माध्यम से करने का सार्थक प्रयत्न किया गया है।

परिवर्तित पाठ्यक्रम के अनुसार छठी कक्षा से लेकर दसवीं कक्षा तक क्रमश: हमारा भारत-I (कक्षा-6), हमारा भारत-II (कक्षा-7), हमारा भारत-III (कक्षा-8), हमारा भारत-IV (कक्षा-9) और भारत एवं विश्व (कक्षा-10) नाम से नई पाठ्यपुस्तकों को तैयार करवाते समय यह भी ध्यान रखा गया कि ये सरल, सुरुचिपूर्ण, सुग्राह्य व आकर्षक हों, ताकि छात्र आसानी से इनमें उपलब्ध ज्ञान को आत्मसात् कर स्थानीय एवं राष्ट्रीय तथा सामाजिक व सांस्कृतिक परिवेश से जुड़ें। छात्र ऐतिहासिक व सांस्कृतिक गौरव, राष्ट्र और संविधान के प्रति निष्ठा, आत्मसम्मान व स्वाभिमान से ओत-प्रोत होकर स्वयं को एक सुसभ्य, सुसंस्कृत तथा सकारात्मक नागरिक के रूप में स्थापित कर सकें।

बोर्ड को इन पुस्तकों को प्रस्तुत करते हुए अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है, साथ ही यह विश्वास भी है कि ये पाठ्यपुस्तकें छात्रों व शिक्षकों के लिए उपयोगी सिद्ध होंगी। ये पाठ्यपुस्तकें अध्ययन-अध्यापन के साथ-साथ छात्रों के व्यक्तित्व के चहुंमुखी विकास में प्रभावी मार्गदर्शन करेंगी। पुस्तकों को भविष्य में श्रेष्ठतर तथा गुणवत्तापूर्ण बनाने के लिए आपके बहुमूल्य सुझाव आमंत्रित हैं।

अध्यक्ष
हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
भिवानी

उपाध्यक्ष
हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड
भिवानी

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

इतिहास बोध

सामाजिक विज्ञान के अंतर्गत आने वाले सभी विषय यथा इतिहास, भूगोल, अर्थशास्त्र, नागरिक शास्त्र इत्यादि हमें दुनिया को समझने में मदद करते हैं। इस समझ के आधार पर हम अपने व्यक्तिगत तथा सामाजिक जीवन को भविष्य में श्रेष्ठतर बनाने का सपना संजोते हैं और उसके लिए यथेष्ट उद्यम करते हैं। आज की दुनिया एकाएक निर्मित नहीं हुई, अपितु हजारों वर्षों से बहुत धीरे-धीरे समाज में घटने वाले परिवर्तनों का परिणाम है। इन परिवर्तनों की कहानी को उनके यथार्थ स्वरूप में समझना ही सम्यक् इतिहास बोध है।

प्रायः दो प्रकार के लोग हमारे ध्यान में आते हैं- एक वे लोग, जिन्होंने ऐसे सामाजिक परिवर्तनों को प्रारम्भ किया और उनका नेतृत्व किया तथा दूसरे वे जिनके जीवन इन परिवर्तनों से प्रभावित हुए। एक स्वाधीन और संप्रभु राष्ट्र के नागरिकों के लिए यह बहुत आवश्यक है कि वे अपनी विद्यालयी शिक्षा के दौरान ही इतिहास की घटनाओं और काल-क्रम के परिवर्तनों को वस्तुपरक ढंग से समझें और उसी समझ के आधार पर राष्ट्र के भविष्य का मार्ग प्रशस्त करने में अपना योगदान दें। किन्तु यह भी एक कटु सत्य है, कि दुनिया के अनेक देश लंबे समय तक औपनिवेशिक ताकतों की दासता के बंधक रहे हैं। इन ताकतों ने न केवल अपने अधीनस्थ राष्ट्रों के संसाधनों पर कब्जा करने के कुत्सित प्रयास किये, अपितु उन देशों के नागरिकों की इतिहास संबंधी समझ को भी नियंत्रित करने का प्रयत्न किया। इस नियंत्रण के लिए विद्यालयों में पढ़ाई जाने वाली इतिहास की विद्यालयी पाठ्यपुस्तकों को एक उपकरण के रूप में प्रयोग किया जाता रहा है। भारत भी लंबे समय तक औपनिवेशिक दासता से ग्रसित रहा। औपनिवेशिक शासकों ने भारतीय समाज को उसकी अस्मिता से विमुख करने के लिए हमारे नायकों, योद्धाओं, क्रांतिकारियों, संतों के योगदान को तोड़-मरोड़कर पाठ्यपुस्तकों में प्रस्तुत किया, वहीं दूसरी ओर विदेशी आक्रांताओं और विस्तारवादी शक्तियों के कृत्यों को उचित ठहराने तथा उनके भीषण प्रभावों को कम करके दिखाने की कोशिश भी इसी माध्यम से की गयी।

इस स्थिति के आलोक में यह आवश्यक हो जाता है कि स्वाधीन देश में इतिहास के प्रसंगों को वस्तुपरक ढंग से विद्यालयों में प्रारम्भ से ही छात्रों के सम्मुख प्रस्तुत किया जाये तथा उनके वर्तमान को समझने और भविष्य की कल्पना बुनने की क्षमता का निर्माण करना इतिहास की पाठ्यपुस्तकों का एक प्रमुख दायित्व है।

प्रस्तुत पाठ्यपुस्तकें इसी दिशा की ओर एक कदम हैं।

अध्यक्ष

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड

भिवानी

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

पाठ्यपुस्तक निर्माण समिति
कक्षा छठी से दसवीं

संरक्षक

प्रो. जगबीर सिंह, अध्यक्ष, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

डॉ. ऋषि गोयल, निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, हरियाणा, गुरुग्राम

मुख्य समन्वयक

डॉ. रमेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, अहड़वाला, बिलासपुर (यमुनानगर)

समन्वयक

डॉ. लक्ष्मी नारायण, प्राध्यापक (इतिहास), राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ततारपुर इस्तमुरार (रेवाड़ी)

लेखक मंडल

डॉ. रमेश कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, अहड़वाला, बिलासपुर (यमुनानगर)

डॉ. लक्ष्मी नारायण, प्राध्यापक (इतिहास), राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ततारपुर इस्तमुरार (रेवाड़ी)

डॉ. गुरमेज सिंह, असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), डी.ए.वी. महाविद्यालय, सढौरा (यमुनानगर)

डॉ. संजीव कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, छछरौली (यमुनानगर)

डॉ. मनमोहन शर्मा, पूर्व अध्यक्ष (इतिहास विभाग), बाबा मस्तनाथ विश्वविद्यालय, अस्थल बोहर (रोहतक)

डॉ. सुरेन्द्र कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), वैश्य महाविद्यालय, भिवानी

डॉ. यशवीर सिंह, प्राचार्य, जनता विद्या मंदिर गणपत राय रासीवासिया महाविद्यालय, चरखी दादरी

डॉ. नरेन्द्र परमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), पुरातत्व एवं इतिहास विभाग, हरियाणा केन्द्रीय विश्वविद्यालय, महेन्द्रगढ़

डॉ. सुखवीर सिंह, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), बंसीलाल राजकीय महाविद्यालय, लोहारू (भिवानी)

डॉ. बी.बी. कौशिक (दिवंगत), सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), पी.आई.जी. राजकीय महिला महाविद्यालय, जीन्द

श्री राम कुमार केसरिया, एक्सटैंशन लेक्चरर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, जीन्द

डॉ. राकेश कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, मातनहेल (झज्जर)

डॉ. अशोक कुमार, एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), राजकीय महिला महाविद्यालय, गुरावड़ा (रेवाड़ी)

श्री विपिन शर्मा, पी.जी.टी. (इतिहास), महाराजा अग्रसैन कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सिरसा

श्री कुन्दन लाल कालड़ा, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, भटौली (यमुनानगर)

श्री सुरेश पाल, सेवानिवृत्त प्रधानाचार्य, राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, भंभौल (यमुनानगर)

डॉ. दिलबाग बिसला, असिस्टेंट प्रोफेसर (गेस्ट फैकल्टी), चौ. रणबीर सिंह विश्वविद्यालय, जीन्द

डॉ. दलजीत बिसला, पी.जी.टी. (इतिहास), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, बराह कलां (जीन्द)

डॉ. धीरज कौशिक, असिस्टेंट प्रोफेसर (इतिहास) (अनुबंधित), दयाल सिंह कॉलेज, करनाल

डॉ. मनोज कुमार, पी.जी.टी. (इतिहास), राजकीय वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, ग्योंग (कैथल)

डॉ. विनोद कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (राजनीति शास्त्र), आर.के.एस.डी. कॉलेज, कैथल

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

श्री अजय सिंह, एक्सटेंशन लेक्चरर (इतिहास), राजकीय महाविद्यालय, बिरोहड़ (झज्जर)
श्रीमती पूजा छाबड़ा, पी.जी.टी. (इतिहास), गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र
डॉ. नीरज कांत, पी.जी.टी. (इतिहास), राजकीय मॉडल संस्कृति वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, सांघी (रोहतक)
श्री पिरथी सैनी, प्रधानाचार्य, राजकीय कन्या वरिष्ठ माध्यमिक विद्यालय, जगाधरी (यमुनानगर)
डॉ. हरीश चन्द्र झंडई, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर (इतिहास), एम.एल.एन. कॉलेज, यमुनानगर

सम्पादक मंडल

डॉ पवन कुमार, असिस्टेंट प्रोफेसर (भूगोल विभाग) चौ. बंसीलाल विश्वविद्यालय, भिवानी
श्रीमती सुरिन्द्र कौर सैनी, पी.जी.टी. (अर्थशास्त्र), गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र
श्री जोगिन्द्र सिंह, पी.जी.टी. (हिन्दी), राजकीय उच्च विद्यालय, सिधनवा, बहल (भिवानी)
श्रीमती मीना रानी, हिन्दी अधिकारी, गुरु जम्भेश्वर विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, हिसार
डॉ. मुदिता वर्मा, सेवानिवृत्त एसोसिएट प्रोफेसर, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, हिसार
श्री अरविंद कुमार, पी.जी.टी. (अंग्रेजी), राजकीय उच्च विद्यालय, सांचला (फतेहाबाद)
श्रीमती सीमा गुप्ता, टी.जी.टी (सामाजिक अध्ययन), गीता निकेतन आवासीय विद्यालय, कुरुक्षेत्र
श्री नीरज अत्री, प्रेजीडेंट, नेशनल सेंटर फॉर हिस्टोरीकल एंड कम्पारेटीव स्टड्ीज, पंचकूला
श्री अश्विनी शाडिल्य, पी.जी.टी. (हिन्दी), जिला शिक्षा एवं प्रशिक्षण संस्थान, पंचकूला
श्री राजेश कुमार, डी.टी.पी. ऑपरेटर, चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार

समन्वय सहायक

श्री चांद राम शर्मा, सहायक सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी
श्रीमती सन्तोष नरवाल, सहायक सचिव, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी
श्री नेपाल सिंह, अधीक्षक, हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, भिवानी

तकनीकी सहयोग, ग्राफिक्स एवं साज-सज्जा

श्री कुलदीप कुमार, ग्राफिक डिजाइनर (अनुबंधित), चौ. चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
श्री भारत सैनी, ग्राफिक डिजाइनर, कुरुक्षेत्र

पुनरीक्षण एवं अनुमोदन समिति

प्रो. के. रत्नम, सदस्य सचिव, भारतीय ऐतिहासिक अनुसंधान परिषद (आई.सी.एच.आर.), नई दिल्ली
प्रो. ज्ञानेश्वर खुराना, सेवानिवृत प्रोफेसर (मध्यकालीन इतिहास) व भूतपूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय, कुरुक्षेत्र
प्रो. विघनेश कुमार त्यागी, प्रोफेसर, इतिहास विभाग, चौ. चरण सिंह विश्वविद्यालय, मेरठ (उत्तर प्रदेश)
डॉ. प्रियतोश शर्मा, अध्यक्ष, इतिहास विभाग, पंजाब विश्वविद्यालय, चण्डीगढ़
प्रो. सुरजीत कौर जॉली, सेवानिवृत प्राचार्या, श्यामा प्रसाद मुखर्जी महाविद्यालय, नई दिल्ली
डॉ. प्रशान्त गौरव, एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग, राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय, चण्डीगढ़
डॉ. अंजलि जैन, एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, इतिहास विभाग, वैश्य महिला महाविद्यालय, रोहतक
डॉ. पी. सी. चान्दावत, सेवानिवृत प्राचार्य, एन.डी.बी. राजकीय महाविद्यालय, नोहर, हनुमानगढ़ (राजस्थान)

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आभार

ये पुस्तकें अनेक इतिहासकारों, शिक्षाविदों और शिक्षकों के सामूहिक प्रयत्नों का प्रतिफल है। इन पुस्तकों के लेखन और संशोधन में लम्बा समय लगा है। ये पुस्तकें विभिन्न कार्यशालाओं एवं बैठकों में हुई चर्चाओं और विचारों के आदान-प्रदान से उपजी हैं। इस प्रक्रिया में विभिन्न लोगों ने अपनी-अपनी क्षमता और योग्यता के अनुरूप पूर्ण सहयोग दिया है।

हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् हरियाणा ने इन पुस्तकों के निर्माण की प्रेरणा पद्म भूषण श्री दर्शन लाल जैन (दिवंगत) एवं प्रख्यात इतिहासकार प्रोफेसर सतीश चंद्र मित्तल (दिवंगत) से ली। शिक्षा बोर्ड, प्रदेश के शिक्षा मंत्री श्री कंवर पाल तथा विद्यालयी शिक्षा के अतिरिक्त मुख्य सचिव डॉ. महावीर सिंह, भा.प्र.से. का आभार व्यक्त करता है, कि उन्होंने पुस्तकों को तैयार कराने का महत्वपूर्ण उत्तरदायित्व हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड को दिया। इन पुस्तकों को तैयार करने में अनेकों व्यक्तियों, संस्थाओं एवं संगठनों ने मदद की है। इस कार्य में दिए गए सहयोग के लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड एवं राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद् (हरियाणा), दिल्ली, पंजाब, हरियाणा और राजस्थान में स्थित विभिन्न संग्रहालय एवं पुस्तकालय के संचालकों का आभार व्यक्त करता है। पुस्तकों में लिए गए व्यक्तियों, अभिलेखों, स्मारकों, मूर्तियों, खुदाई में मिले पुरातात्विक अवशेषों, मिट्टी के बर्तनों, उपकरणों के व अन्य चित्रों के लिए हरियाणा विद्यालय शिक्षा बोर्ड, राज्य शैक्षणिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद्, हरियाणा पुरातत्व सर्वेक्षण विभाग, लोकसभा गैलरी एवं विभिन्न इंटरनेट वेबसाइट्स का भी आभार व्यक्त करता है।

हमने पुस्तक में सहयोग के लिए सभी के आभार-ज्ञापन का प्रयास किया है लेकिन अगर किसी व्यक्ति या संस्था का नाम छूट गया है तो इस भूल के लिए हम क्षमाप्रार्थी हैं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

निदेशक
राज्य शैक्षणिक अनुसंधान
एवं प्रशिक्षण परिषद हरियाणा
गुरुग्राम

[1][भाग 4क]

मूल कर्त्तव्य

51 क. मूल कर्त्तव्य–भारत के प्रत्येक नागरिक का यह कर्त्तव्य होगा कि वह–

क) संविधान का पालन करे और उसके आदर्शों, संस्थाओं, राष्ट्र ध्वज और राष्ट्रगान का आदर करे।

ख) स्वतंत्रता के लिए हमारे राष्ट्रीय आंदोलन को प्रेरित करने वाले उच्चच आदर्शों को हृदय में संजोए रखे और उनका पालन करे।

ग) भारत की प्रभुता, एकता और अखण्डता की रक्षा करे और उसे अक्षुण्ण रखे।

घ) देश की रक्षा करे और आह्वान किए जाने पर राष्ट्र की सेवा करे।

ङ) भारत के सभी लोगों में समरसता और समान भ्रातृत्व की भावना का निर्माण करे जो धर्म, भाषा और प्रदेश या वर्ग पर आधारित सभी भेदभाव से परे हो, ऐसी प्रथाओं का त्याग करे जो स्त्रियों के सम्मान के विरुद्ध है।

च) हमारी सामासिक संस्कृति की गौरवशाली परंपरा का महत्व समझे और उसका परिरक्षण करे।

छ) प्राकृतिक पर्यावरण की, जिसके अंतर्गत वन, झील, नदी और वन्य जीव हैं, रक्षा करे और उसका संवर्धन करे तथा प्राणि मात्र के प्रति दयाभाव रखे।

ज) वैज्ञानिक दृष्टिकोण, मानववाद और ज्ञानार्जन तथा सुधार की भावना का विकास करे।

झ) सार्वजनिक संपत्ति को सुरक्षित रखे और हिंसा से दूर रहे।

ञ) व्यक्तिगत और सामूहिक गतिविधियों के सभी क्षेत्रों में उत्कर्ष की ओर बढ़ने का सतत प्रयास करे जिससे राष्ट्र निरन्तर बढ़ते हुए प्रयत्न और उपलब्धि की नई ऊंचाइयों को छू ले।

[2][ट) यदि माता-पिता या संरक्षक है, छह वर्ष से चौदह वर्ष तक की आयु वाले अपने, यथास्थिति, बालक या प्रतिपाल्य के लिए शिक्षा के अवसर प्रदान करे।

---

1. संविधान (बयालीसवां संशोधन) अधिनियम, 1976 की धारा 11 द्वारा (3-1-1977 से) अंत:स्थापित।
2. संविधान (छियालीसवां संशोधन) अधिनियम, 2002 की धारा 4 द्वारा (1-4-2010 से) अंत:स्थापित।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

इतिहास की पृष्ठभूमि

आज समाज में जो सामाजिक संगठन, राजनैतिक उत्थान, धार्मिक मान्यताएं, आर्थिक क्रियाकलाप, सांस्कृतिक विकास तथा वैज्ञानिक प्रगति दिखाई देती है, इनका मूल, मानव है। यह जानने की इच्छा सदा हमारे मन में रहती है कि ये सभी उपलब्धियाँ मानव ने कैसे प्राप्त की और वह स्वयं इस स्थिति तक कैसे पहुंचा? इन सबका उत्तर इतिहास देता है।

ब्रिटिश प्रकृति वैज्ञानिक 'चार्ल्स डार्विन' ने 1871 ई. में अपनी पुस्तक 'द डिसेंट ऑफ मैन' में पहली बार वर्णन किया कि मानव का विकास बंदरों से हुआ है। यदि मानव प्रजाति का विकास बंदरों से हुआ, तो फिर प्रश्न उठना स्वाभाविक है कि बंदरों से ही यह विकास क्यों हुआ? बंदरों में ऐसी क्या विशेषताएं हैं, जिसका विकास हम जैसे बुद्धिमान प्राणी के रूप में हुआ। हालांकि पशु जगत को देखें तो चिम्पैंजी, गोरिल्ला और ओरांगउटान आदि में मानव से काफी समानताएं दिखाई देती हैं, किंतु फिर भी यह बता पाना मुश्किल है कि दोनों का सांझा पूर्वज कैसा दिखाई देता होगा?

1. पुरापाषाण काल

मानव के प्रारंभिक तकनीकी विकास के आरंभिक काल को पाषाण काल कहते हैं। जिसमें मानव केवल पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था। पाषाण काल को पुरापाषाण काल, मध्यपाषाण काल तथा नवपाषाण काल में बांटा जा सकता है। भारत में सर्वप्रथम 15 मई 1863 को रॉबर्ट ब्रुर्सफुत ने तमिलनाडु के पल्लवरम नामक स्थान से पुरापाषाण कालीन उपकरण प्राप्त किए थे। हालांकि भारत में मानव के प्रारंभिक उपकरण 15 से 17 लाख वर्ष पुराने तमिलनाडु के अतिरमपक्कम से प्राप्त हुए हैं। इस काल में मानव छोटे-छोटे समूह में घुमन्तु जीवन में रहते थे और शिकार करके तथा कंद-मूल को इकट्ठा करके जीवन-यापन करते थे। भारत में पुरापाषाण काल को निम्न पुरापाषाण काल, मध्य पुरापाषाण काल और उच्च पुरापाषाण काल तीन उपकालों में विभाजित किया जाता है। उत्तर भारत के गांगेय क्षेत्र और केरल को छोड़कर देश के अधिकांश भागों से निम्न पुरापाषाण काल के उपकरण प्राप्त हुए हैं। मध्य पुरापाषाण काल के उपकरण केरल, गांगेय क्षेत्र, सिक्किम, असम आदि को छोड़कर भारत के अधिकांश भागों से मिलते हैं। उच्च पुरापाषाण काल के अवशेष मुख्य रूप से उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, आंध्रप्रदेश, कर्नाटक, गुजरात और राजस्थान में मिलते हैं। इस काल में हड्डी की बनी मातृदेवी की मूर्ति उत्तर प्रदेश के प्रयागराज जिले से प्राप्त हुई है। उच्च पुरापाषाण काल में पत्थरों पर चित्रकला के प्रमाण भी मिले हैं। हरियाणा में भी पुरापाषाण काल के उपकरण फरीदाबाद तथा गुरुग्राम जिले की अरावली की पहाड़ियों और पंचकुला जिले में शिवालिक की पहाड़ियों में मिले हैं।

पुरापाषाण काल के उपकरण

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

2. मध्यपाषाण काल

मध्यपाषाण काल का जीवनयापन

मध्यपाषाण काल के उपकरण

मध्यपाषाण काल के शिला चित्र

इस काल में वातावरण में तापमान की वृद्धि हुई, जिससे पशुओं और वनस्पति में काफी बदलाव आए और मानव के लिए नए क्षेत्रों की ओर बढ़ना सम्भव हुआ। भारत में पुरापाषण काल में मानव का निवास पर्वतीय तथा पठारी भागों तक ही सीमित था, जबकि मध्यपाषाण काल में मानव ने रेतीले क्षेत्र, समुद्रतटीय क्षेत्र, गुफाएं, नदी तथा झीलों के तटों पर निवास करना प्रारम्भ कर दिया था। इस काल में मानव ने छोटे-छोटे समूह में रहकर लघु पाषाण उपकरणों का उपयोग करना शुरू कर दिया था। इसी काल में गोलाकार झोपड़ियों, गर्त चूल्हे और मानव के कंकाल को दफनाने के प्रमाण भी प्रकाश में आए हैं। मध्यपाषाण काल में मिट्टी के बर्तन, सींग और हड्डी के बने आभूषण, पत्थर के सिल एवं लोढे भी प्राप्त हुए हैं। सांभर, चीतल, बारहसिंगा, जंगली सूअर, गैंडा, हाथी, कछुआ, मछली आदि के शिकार के साथ-साथ पशुपालन के प्रमाण भी मिलते हैं। मध्यपाषाण काल में चट्टानों पर चित्रकला में पशुओं को दौड़ते, शिकारियों द्वारा पीछा करते, घात लगाकर शिकार करते हुए दिखाया गया है। हरियाणा में भी मध्यपाषाण काल के उपकरण फरीदाबाद तथा गुरुग्राम जिले की अरावली की पहाड़ियों में मिले हैं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

3. नवपाषाण काल

नवपाषाण काल में स्थाई जीवन, कृषि का आरम्भ, पहिए का अविष्कार, अग्नि की खोज और औद्योगिक गतिविधियों के शुरू होने के कारण मानव जीवन में एक महत्वपूर्ण बदलाव आया। इस काल में मानव शिकार एवं भोजन इकट्ठा करने की स्थिति से भोजन उत्पादक बन गया था। मानव घर बनाने के लिए झोपड़ियों के साथ-साथ मिट्टी की दीवार तथा मिट्टी की ईंटों का प्रयोग करने लग गया था। इस काल में हाथ से बने बर्तनों के साथ-साथ चाक पर भी बर्तन बनाने लगा था। कुल्हाड़ियाँ, छेनियाँ, बसूले, खुरपा तथा कुदाल आदि इस काल के प्रमुख उपकरण थे। इस काल में कृषि और पशुपालन की मिश्रित अर्थव्यवस्था का प्रचलन था। मुख्य रूप से जौ, गेहूँ, मसूर, मटर, चना और मूंग आदि की खेती की जाती थी। इस काल में भेड़, बकरी, गाय और बैल को पालतू बना लिया गया था। साथ ही सूअर, खरगोश, हिरण, भेड़िया तथा भालू आदि जंगली जानवरों के भी प्रमाण मिले हैं। नवपाषाण काल में मनुष्यों के पूर्ण तथा आंशिक शवाधान के साक्ष्य भी मिलते हैं। अब तक उसकी धार्मिक आस्था का विकास हो गया था।

नवपाषाण काल के उपकरण

इस प्रकार नवपाषाण काल तक मानव ने सामूहिक जीवन, उत्पादन प्रक्रिया, आर्थिक गतिविधियां, तकनीकी प्रगति, कलात्मक रुचि तथा धार्मिक विश्वासों का आधार बना लिया था, जिस पर आधुनिक विकास खड़ा हुआ है।

विषय सूची

अध्याय 1	सरस्वती–सिंधु सभ्यता	01–11
अध्याय 2	वैदिक काल	12–27
अध्याय 3	रामायण व महाभारत काल	28–42
अध्याय 4	16 महाजनपद	43–51
अध्याय 5	गौतम बुद्ध, महावीर और जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का जीवन और शिक्षाएं	52–65
अध्याय 6	मौर्य साम्राज्य	66–82
अध्याय 7	विदेशियों के आक्रमण एवं उनका भारतीय संस्कृति में समावेश	83–94
अध्याय 8	गुप्तकाल : विजय एवं राज्य विस्तार	95–107
अध्याय 9	गुप्तकाल : शासन, समाज एवं संस्कृति	108–120

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

भारत का संविधान

भाग–3 (अनुच्छेद 12–35)

(अनिवार्य शर्तों, कुछ अपवादों और युक्तियुक्त निर्बंधान के अधीन)

द्वारा प्रदत्त

मूल अधिकार

समता का अधिकार

- विधि के समक्ष एवं विधियों के समान संरक्षण।
- धर्म, मूलवंश, जाति, लिंग या जन्मस्थान के आधार पर।
- लोक नियोजन के विषय में।
- अस्पृश्यता और उपाधियों का अंत।

स्वातंत्र्य-अधिकार

- अभिव्यक्ति, सम्मेलन, संघ, संचरण, निवास और वृत्ति का स्वातंत्र्य।
- अपराधों के लिए दोष सिद्धि के संबंध में संरक्षण।
- प्राण और दैहिक स्वतंत्रता का संरक्षण।
- छः से चौदह वर्ष की आयु के बच्चों को निःशुल्क एवं अनिवार्य शिक्षा।
- कुछ दशाओं में गिरफ्तारी और निरोध से संरक्षण।

शोषण के विरुद्ध अधिकार

- मानव के दुर्व्यापार और बलात्श्रम का प्रतिषेध।
- परिसंकटमय कार्यों में बालकों के नियोजन का प्रतिषेध।

धर्म की स्वतंत्रता का अधिकार

- अंत:करण की और धर्म के अबाध रूप से मानने, आचरण और प्रचार की स्वतंत्रता।
- धार्मिक कार्यों के प्रबंध की स्वतंत्रता।
- किसी विशिष्ट धर्म की अभिवृद्धि के लिए करों के संदाय के संबंध में स्वतंत्रता।
- राज्य निधि से पूर्णतः पोषित शिक्षा संस्थाओं में धार्मिक शिक्षा या धार्मिक उपासना में उपस्थित होने के संबंध में स्वतंत्रता।

संस्कृति और शिक्षा संबंधी अधिकार

- अल्पसंख्यक-वर्गों को अपनी भाषा, लिपि या संस्कृति विषयक हितों का संरक्षण।
- अल्पसंख्यक-वर्गों द्वारा अपनी शिक्षा संस्थाओं का स्थापन और प्रशासन।

सांविधानिक उपचारों का अधिकार

- उच्चतम न्यायालय एवं उच्च न्यायालय के निर्देश या आदेश या रिट द्वारा प्रदत्त अधिकारों को प्रवर्तित कराने का उपचार।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

1 सरस्वती-सिंधु सभ्यता

आओ जानें

- नदियों का सभ्यता से संबंध
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता - नगर योजना, भवन निर्माण, जनजीवन, शिल्प कला एवं व्यापार

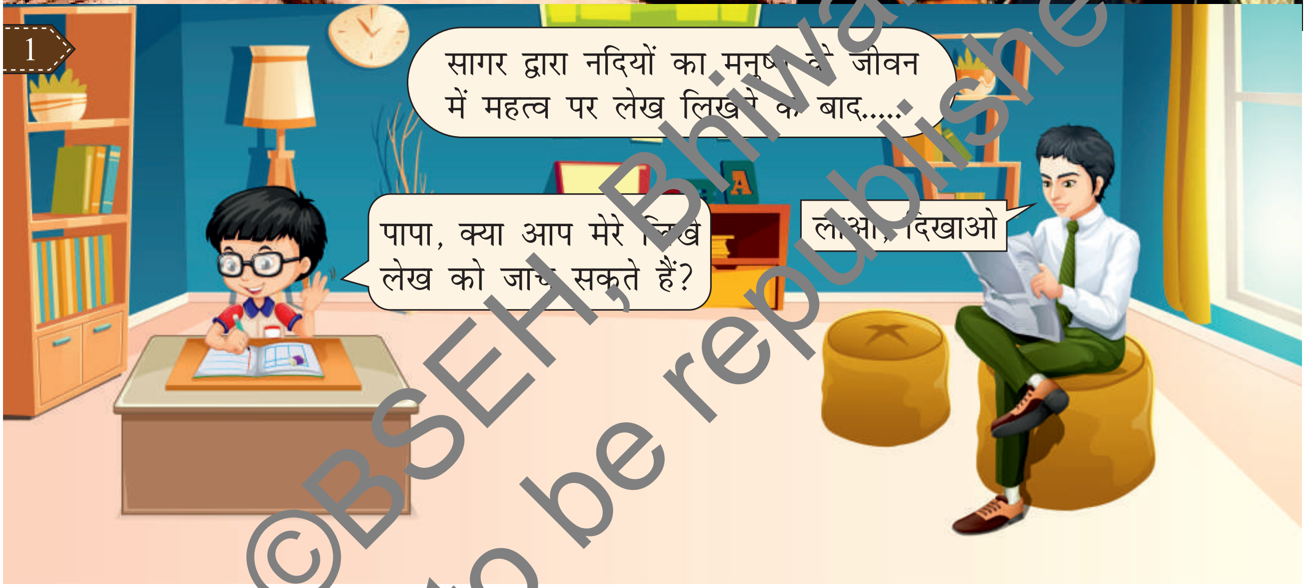

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

नदियों से मनुष्य को जल की आपूर्ति होती थी। पूरे वर्ष यहां कृषि और मवेशियों के लिए पानी आसानी से उपलब्ध रहता था। विश्व की सभी सभ्यताएं जल स्रोतों विशेषकर नदियों के किनारों पर ही पनपी हैं।

सरस्वती नदी भारत की प्राचीनतम नदियों में से एक थी, जो आज विलुप्त हो चुकी है। इस नदी की अनेक शाखाएं भी थी। विभिन्न प्रमाणों से इस नदी की उपस्थिति 5000 वर्ष पूर्व तक मानी जाती है। भू-आकृतिक अवशेषों एवं उपग्रहों द्वारा प्राप्त चित्रों से पैलियोचैनल द्वारा सरस्वती नदी का प्रवाह निश्चित होता है। खुदाई में सबसे अधिक सन् 1500 के लगभग पुरातात्विक स्थल इन्हीं नदियों के किनारे मिले हैं। सरस्वती नदी आदिबद्री से निकलकर हरियाणा के यमुनानगर, अंबाला, कुरुक्षेत्र, कैथल, जींद, हिसार, फतेहाबाद, सिरसा से बहती हुई राजस्थान व गुजरात होती हुई अरब सागर में गिरती थी। दूसरी नदी सिंधु नदी है जो आज भी बहती है। इसका अधिकतर प्रवाह वर्तमान पाकिस्तान में है। मोहनजोदड़ो, चन्हुदड़ो व बालाकोट जैसे प्रमुख स्थल इसी नदी के किनारे पर स्थित है।

पैलियोचैनल : नदियों का पूर्वकलिक प्रवाह

सरस्वती-सिंधु एवं इनकी सहायक नदियों के किनारे मिले अनेक नगर अवशेषों (पुरास्थल) के आधार पर ही इस सभ्यता को 'सरस्वती-सिंधु सभ्यता' कहा जाता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

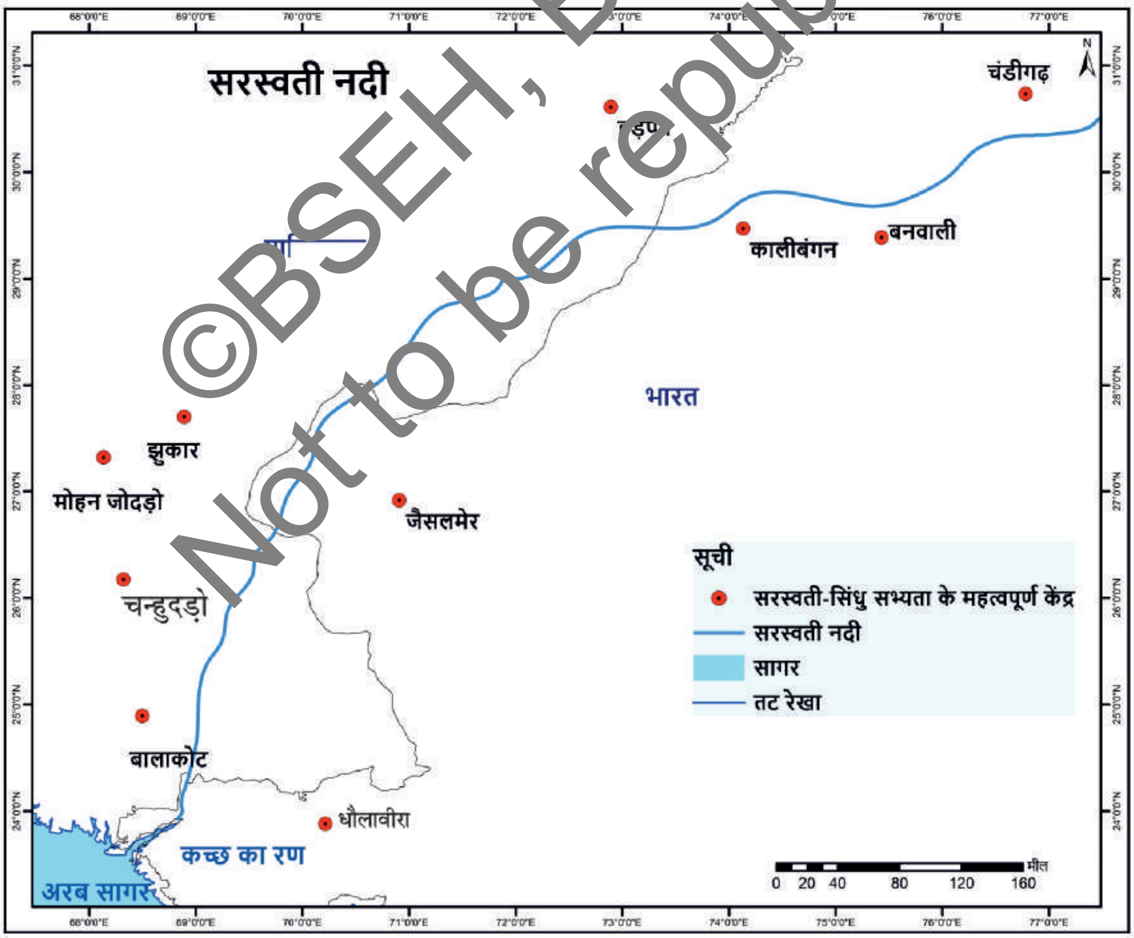

मानचित्र 1.1 – सरस्वती नदी

क्या आप जानते हैं?

प्राचीन भौतिक अवशेष अपनी कहानी स्वयं बताते हैं। पहली बार ये अवशेष हड़प्पा में देखे, जब वहां रेल लाईन बिछाने के लिए रोड़े चाहिंए थे। मजदूर वहां नजदीक एक टीले से ईंटों के रोड़े उठा लाए तब पहली बार अंग्रेज अधिकारियों के ध्यान में यह जगह आई। 1921 ई. में दयाराम साहनी के नेतृत्व में जब रावी नदी के किनारे हड़प्पा की खुदाई करवाई गई, तब एक विशाल नगर के अवशेष निकले। 1922 में राखालदास बनर्जी के नेतृत्व में सिंधु नदी के किनारे मोहनजोदड़ो से भी इसी प्रकार के अवशेष प्राप्त हुए।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

नगर-योजना

चित्र 1.1 चित्र में ऊंचे नगर के अवशेष के साथ ही विशाल स्नानागार (सरोवर)

नगर-योजना : सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के अवशेष हमें दो भागों में मिले हैं। पश्चिमी भाग छोटा था परंतु ऊँचाई पर बना था। इसे दुर्ग क्षेत्र (नगरदुर्ग) कहा गया है। पूर्वी भाग बड़ा था जिसे निचला नगर कहा गया। अधिकतर पुरास्थलों के दोनों हिस्सों को चार दीवारी से घेरा गया था। जिसे पक्की ईंटों से बनाया गया था। वे इतनी मजबूत दीवारें थी कि आज भी खड़ी हैं। कुछ सार्वजनिक निर्माण कार्य भी मिले हैं। मोहनजोदड़ो में एक बड़ा स्नानागार मिला है। इसमें पानी का रिसाव रोकने के लिए प्लास्टर के ऊपर चारकोल की परत चढ़ाई गई थी। इस सरोवर में दो तरफ से उतरने के लिए सीढ़ियां बनी हैं, चारों ओर कमरे बनाए गए हैं। कुएं से पानी निकालकर इसे भरा जाता था। इसे खाली करने के लिए नाली बनी है। ऐसा लगता है कि धार्मिक पर्व पर इसमें स्नान किया जाता होगा।

सड़कें और नालियां

सड़कें 13 फुट से 33 फुट तक चौड़ी होती थीं व गलियों की चौड़ाई 9 से 12 फुट होती थी। सड़कें एक दूसरे को समकोण पर काटती थीं।

चित्र 1.2 एक दूसरे को समकोण पर काटती सड़कें

सड़कों के दोनों ओर नालियां बनी थीं। घरों में प्रयुक्त पानी इन नालियों में आकर गिरता था। ये नालियां ईंटों से ढकी होती थी, जिनको हटाकर असानी से नालियां साफ की जा सके। ये नालियां मुख्य नाले में जाकर गिरती थीं, जो नगर से बाहर पानी को ले जाता था। विश्व की एक मात्र सभ्यता है, जिसमें इतनी व्यवस्थित नालियों की व्यवस्था मिली है।

चित्र 1.3 घर की नालियां बड़े नाले में मिलती हुई जो पानी को नगर के बाहर ले जाता था

भवन निर्माण योजना

घरों का निर्माण एक निश्चित योजना से होता था। आमतौर पर घर दो मंजिल के होते थे। घर में आंगन होते थे तथा रसोईघर, स्नानागार व शौचालय की सुविधा होती थी। दरवाजे मुख्य सड़कों की ओर न खुलकर गली में खुलते थे। कई घरों में कुंए भी मिले हैं।

चित्र 1.4 कितना सुंदर ईंट निर्माण कार्य तथा गली की तरफ खुलते दरवाजे-खिड़की

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

सरस्वती-सिंधु सभ्यता कितनी पुरानी है?

गार्डन चाइल्ड के अनुसार यह सभ्यता 4000 वर्ष पुरानी मानी गई है। जबकि मार्टिमर व्हीलर ने इसका अनुमान 2000 ई.पू. से 1500 ई.पू. के बीच माना है। परंतु नवीन खोजों के अनुसार यह सभ्यता 8000 साल पुरानी है।

जनजीवन

कृषि

नगरों को देखकर लगता है कि ये लोग समृद्ध और खुशहाल थे। लोग नगरों के अतिरिक्त गांवों में भी रहते थे। गांव में रहने वाले लोग कृषि करते थे। खुदाई में मिले अवशेषों से पता चलता है कि ये लोग गेहूं, जौ, दालें, मटर, धान, तिल और सरसों उगाते थे। कृषि बैल और ऊंटों की सहायता से हल से की जाती थी। नदियों व तालाबों से सिंचाई करते थे।

चित्र 1.5 खिलौना-हल

चित्र 1.6 कृषि उपकरण

पशुपालन

लोग ऊंट, बैल, गाय, भैंस, भेड़, बकरी व हाथी आदि पशु पालते थे। बत्तख, खरगोश, हिरण, मुर्गा व तोता आदि पक्षी भी पालते थे। ये सभी जानवर उनके कृषि कार्य, यातायात व भोजन में सहायक थे। पशुओं को वे झुण्डों में चराने के लिए दूर-दूर ले जाते थे।

माप तोल

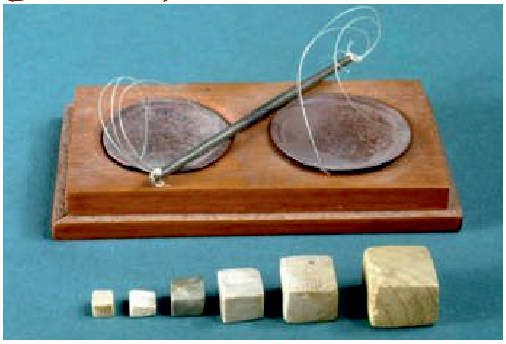

चित्र 1.7 तराजू व तोलने के लिए बाट

चित्र 1.8 धातु के बर्तन

चित्र 1.9 मिट्टी के बर्तन

सुंदर आकार के चर्ट पत्थर के बाट जो अनेक स्थानों से मिले हैं उनका माप एक समान है। इन्हें शायद बहुमूल्य पत्थर और धातुओं को तोलने के लिए बनाया होगा। बड़ी और भारी वस्तुओं को तोलने के बाट भी मिले हैं। पत्थर, शंख, तांबे, कांसे, सोने और चांदी से बनी अनेक चीजें मिली हैं। धातुओं को गलाना, ढालना व मिश्रण करना वे अच्छी तरह से जानते थे। तांबे और कांसे से औजार, हथियार, गहने और बर्तन बनाए जाते थे। सोने और चांदी से भी गहने और बर्तन बनाते थे। मिट्टी के बहुत ही सुंदर बर्तन बनाने में वे लोग प्रवीण थे।
यहां से सुंदर मनकों के गहनों के अतिरिक्त अनेक बाट और फलक भी मिले हैं।

? क्या आपने पत्थर के बाट देखे हैं?

? आपने कांसे के बर्तनों का प्रयोग अपने घर में देखा है?

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

सामूहिक गतिविधि

शिक्षक कक्षा को तीन से चार विद्यार्थियों के समूहों में विभाजित करें एवं समूहों को अपनी पसंद के अनुसार मिट्टी की सहायता से खिलौने या गहने बनाने के लिए कहें।

हार- श्रृंगार

बहुत ही सुंदर आकार के सोने, चांदी और पत्थरों के गहने मिले हैं। चित्र में देखिए मनकों को कितना सुंदर तराशा गया है। अनेक मनके कार्नीलियन पत्थरों से बनाए गए हैं जिनमें माला बनाने के लिए छेद किए जाते थे।

चित्र 1.10 तांबे का दर्पण

चित्र 1.11 कंघा

चित्र 1.12 खुदाई मे मिले गहनें

? चित्र में बने गहनों को ध्यान से देखिए और पता कीजिए की ऐसे गहने आज भी पहनते हैं क्या?

मोहनजोदड़ो से कपड़ों के टुकड़ों के कुछ अवशेष, चांदी के एक फूलदान के ढक्कन तथा कुछ अन्य तांबे की वस्तुओं से चिपके मिले हैं। पक्की मिट्टी तथा फेयांस से बनी तकलियां सूत कताई का संकेत देती हैं। संभवतः 7000 साल पहले मेहरगढ़ में कपास की खेती होती थी।

चित्र 1.13

चित्र 1.14

इस चित्र में कपड़े का छापा कितना सुंदर है। दाढ़ी व सिर के बाल कितने सुंदर बनाए हैं। माथे पर तिलक है। पुरातत्त्वविद् इसे पुरोहित या राजा मानते हैं।

? चित्र में पगड़ी का पिछला हिस्सा देखिए क्या ऐसी पगड़ी आज भी बांधते हैं जो पीछे की ओर गर्दन से नीचे तक लटकती हो।

व्यापार

आयात-निर्यात व कच्चे माल की प्राप्ति

कच्चा माल उन पदार्थों को कहते हैं जो या तो प्राकृतिक रूप से मिलते हैं या फिर किसान या पशुपालक उनका उत्पादन करते हैं। जैसे धातुएं प्राकृतिक रूप से मिलती हैं जबकि कपड़ा बनाने के लिए कपास किसान के द्वारा उत्पादित होती है। तांबा, टिन, सोना, चांदी और बहुमूल्य पत्थरों को वे दूर-दूर के क्षेत्रों से मंगवाते थे। तांबा राजस्थान व पश्चिमी देश ओमान से मंगवाते थे। कांसा बनाने के लिए तांबे के साथ मिलाई जाने वाली धातु टिन का आयात आधुनिक ईरान व अफगानिस्तान से किया जाता था। सोने का आयात आधुनिक कर्नाटक और बहुमूल्य पत्थरों का आयात गुजरात, ईरान और अफगानिस्तान से किया जाता था।

फयांस : खुदाई में फयांस से बनी मूर्तियां, मनके, चूड़ियां, बाले और छोटे बर्तन मिले हैं। फेयांस को कृत्रिम रूप से तैयार किया जाता था। बालू या स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर उनसे वस्तुएं बनाई जाती थी। उसके बाद इन वस्तुओं पर एक चिकनी परत चढ़ाई जाती थी। इस चिकनी परत के रंग प्रायः नीले या हल्के हरे होते थे।

चित्र 1.15
मोहनजोदड़ो से प्राप्त बंदर की फेयांस की मूर्ति

चित्र 1.16

चित्र में लोथल बंदरगाह के अवशेष जहां समुद्र से आने वाली नावों से सामान उतारा व चढ़ाया जाता था।

हड़प्पा, मोहनजोदड़ो और लोथल जैसे कुछ नगरों में बड़े-बड़े भण्डार-गृह मिले हैं। लोथल व धौलावीरा में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं जो यह प्रमाणित करते हैं कि विदेशों से भी व्यापार होता था।

चित्र 1.17

चित्र में भंडार-गृह, इसमें सामान अलग-अलग बने चबूतरों पर रखा जाता था जो पहले अलग-अलग कक्ष के रूप में थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

गतिविधि

सरस्वती-सिंधु सभ्यता का सबसे विस्तृत स्थान राखीगढ़ी (हिसार) में है। राखीगढ़ी व अन्य स्थानों का भ्रमण करके इस सभ्यता के बारे में जानकारी प्राप्त करें।

मुहरें : हड़प्पा के लोग सेलखड़ी की मुहरें बनाते थे। ज्यादातर मुहरें आयताकार हैं जिन पर सामान्यत: जानवरों के चित्र मिलते हैं। मुहरों का प्रयोग एक जगह से दूसरी जगह भेजे जाने वाले सामान से भरे डिब्बों या थैलों को चिह्नित करने के लिए किया जाता होगा। थैलों पर मुहरबन्दी के लिए लाख आदि जैसी वस्तुओं का प्रयोग करके इन मुहरों से छाप लगाते होंगे जिससे यदि कोई सामान के साथ छेड़-छाड़ करे तो छाप टूट जाती होगी।

चित्र 1.18 चित्र में बिना कूबड़ वाले बैल की मुहर

चित्र 1.19 चित्र में एक अपरिचित पशु की मुहर जिसको पुरातत्त्वविदों ने पूजनीय माना है

चित्र 1.20 – 1.24

चौपड़ के पासे

बच्चों के खिलोने

शतरंज

विभिन्न प्रकार के बच्चों के खिलौने

मनोरंजन के साधन : खुदाई में बच्चों के मिट्टी के खिलौने व बड़ों के द्वारा खेले जाने वाले शतरंज व चौपड़ के पासे मिले हैं। अन्य मनोरंजन के साधनों के अवशेष भी मिले हैं।

? क्या आपने यातायात में बैलगाड़ी व ऊँट का प्रयोग देखा है?

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

इतिहास में तिथियां कैसे पढ़ें

अंग्रेजी में बी.सी. जिसे हम हिंदी में ई.पू. कहते हैं। बी.सी. का अर्थ होता है 'बिफोर क्राइस्ट' व ई.पू. का अर्थ होता है 'ईसा पूर्व।'

कभी-कभी हम तिथियों से पहले ए.डी. लिखा पाते हैं और हिंदी में ए.डी. की जगह ई. लिखते हैं। ए.डी. का अर्थ होता है 'एनो डॉमिनी' जो लैटिन शब्दों से बना है तथा इसका तात्पर्य ईसा मसीह के जन्म के वर्ष से है। इसका सामान्य अर्थ ईसा के बाद के वर्षों के लिए किया जाता है। हिंदी में ई. से अर्थ हुआ 'ईसा के जन्म से' कभी-कभी ए.डी. की जगह सी.ई. तथा बी.सी. की जगह बी.सी.ई. का प्रयोग होता है। सी.ई. अक्षरों का प्रयोग 'कॉमन एरा' तथा बी.सी.ई. का प्रयोग बिफोर क्राइस्ट एरा के लिए होता है।

हम इन शब्दों का प्रयोग इसलिए करते हैं क्योंकि विश्व के अधिकांश देशों में अब 'क्रिश्चियन एरा' का प्रयोग सामान्य हो गया। भारत में तिथियों के इस रूप का प्रयोग लगभग दो सौ वर्ष पूर्व आरम्भ हुआ था। कभी-कभी अंग्रेजी के बी.पी. अक्षरों का प्रयोग भी होता है जिसका तात्पर्य 'बिफोर प्रेजेंट' (वर्तमान से पहले) है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

कुछ अवशेषों का सूक्ष्म निरीक्षण

क्या ऐसा आज भी है? चित्र के सामने 'हां' या 'नहीं' में जवाब दें

सरस्वती-सिंधु सभ्यता में हमें वट वृक्ष की पूजा के अनेकों प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी हम वट वृक्ष की पूजा करते हैं?

खुदाई में संन्यासी के कमण्डल मिले हैं।

क्या आज भी संन्यासी कमण्डल रखते हैं?

खुदाई में हमें तुलसी की पूजा के प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी तुलसी-पूजा की यह परंपरा है?

अनेकों हवन कुण्ड हमें खुदाई में मिले हैं।

क्या हवन (यज्ञ) करने की परंपरा आज भी है?

सात महिला व पुरुषों द्वारा मांगलिक कार्यों में परम्परा निभाने के प्रमाण मिले हैं।

क्या यह सत्त लगियों का रिवाज आज भी है?

शिवलिंग की पूजा के प्रमाण हमें मिले हैं।

क्या आज भी भारत में शिवलिंग की पूजा होती है?

चित्र में एक महिला दो शेरों को अपने दोनों हाथों से पकड़े हुए है। जो दुर्गा के आरंभिक रूप को दिखाता है। क्या आज भी दुर्गा पूजा होती है?

शिव की पूजा के अनेक प्रमाण मिले हैं।

क्या आज भी शिव की पूजा होती है?

खुदाई में देवी की पूजा के अनेक प्रमाण मिले हैं।

क्या देवी की पूजा आज भी करते हैं?

सरस्वती सिंधु सभ्यता के लोग कूबड़ वाले नंदी की पूजा करते थे।

क्या आज भी हम नंदी की पूजा करते हैं?

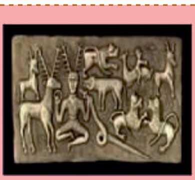

एक व्यक्ति जो अनेक जानवरों के साथ है तथा सर्प को हाथ में पकड़े हुऐ है। जिसे पशुपति शिव माना है।

क्या सर्प पूजा आज भी है?

मोहनजोदड़ो से खुदाई में कांसे की नर्तकी की मूर्ति मिली है जो अपने पूरे हाथों में आभूषण पहने हुए है।

क्या आपने ऐसे आभूषण धारण करने वाली महिलाएं देखी हैं?

कुछ महत्वपूर्ण तिथियां

- मेहरगढ़ में कपास की खेती लगभग 7000 साल पहले होती थी।
- नगरों की स्थापना की शुरुआत लगभग 4700 साल पहले आरंभ हो गई थी।
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के अंत की शुरुआत लगभग 3900 साल पहले हो गई थी।
- सरस्वती-सिंधु सभ्यता लगभग 8000 वर्ष पुरानी है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. .... ई. में दयाराम साहनी के नेतृत्व में हड़प्पा की खुदाई करवाई गई।
   क) 1922 ख) 1923 ग) 1921 घ) 1920

2. बी.सी. का अर्थ है ....।
   क) बिफोर क्राइस्ट (ई.पू.) ख) बिफोर कॉमन
   ग) बिटवीन कॉमन घ) इन में से कोई नहीं

3. निम्नलिखित में से किसकी पूजा सरस्वती-सिंधु सभ्यता में नहीं होती थी?
   क) शिव ख) विष्णु ग) पीपल घ) मातृदेवी

4. बहुमूल्य पत्थरों का आयात गुजरात, ईरान और .... से किया जाता था।
   क) पाकिस्तान ख) अफगानिस्तान ग) भूटान घ) नेपाल

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. बालू व स्फटिक पत्थरों के चूर्ण को गोंद में मिलाकर .... तैयार किया जाता है।
2. तांबा व टिन मिलाकर .... तैयार किया जाता है।
3. खुदाई में सबसे अधिक नगर.................... नदी घाटी में मिले हैं।
4. नगरों की बनावट के .... समान थे।
5. .... नगर की खुदाई में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं।

उचित मिलान करो :

1. तांबा	क) गुजरात
2. सोना	ख) अफगानिस्तान
3. टिन	ग) राजस्थान
4. बहुमूल्य पत्थर	घ) कर्नाटक

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाएं :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में बैल और ऊंटों की सहायता से हल से कृषि की जाती थी। ( )
2. अनेक मनके कार्नेलियन पत्थरों से बनाए गए थे। ( )

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

3. धौलावीरा में बंदरगाह के अवशेष मिले हैं जहां से प्रमाणित होता है कि विदेशों से भी व्यापार होता था। ( )
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता का सबसे विस्तृत स्थान राखीगढ़ी गुरुग्राम में है। ( )

लघु प्रश्न :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के अवशेष कहां-कहां से प्राप्त हुए हैं?
2. नदियों का सभ्यता से क्या संबंध है।
3. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नगरों के बारे में लोगों को कैसे पता चला?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधन क्या थे?
5. सरस्वती-सिंधु सभ्यता की मुहरों का आकार कैसा था और उनकी आवश्यकता क्यों पड़ती थी?

आइए विचार करें :

1. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में उत्पादन के लिए कच्चा माल किन-किन क्षेत्रों से मंगवाते थे?
2. सरस्वती-सिंधु सभ्यता कालीन नगर निर्माण योजना का विश्लेषण कीजिए।
3. किन आधारों पर कहा जा सकता है कि सरस्वती-सिंधु सभ्यता में कपड़े का प्रयोग किया जाता था?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के निवासियों के महत्वपूर्ण व्यवसाय 'कृषि' और 'पशुपालन' पर टिप्पणी कीजिए।
5. इतिहासकारों के अनुसार सरस्वती-सिंधु सभ्यता के नष्ट होने के क्या कारण है?

आओ करके देखें

1. उन देवी-देवताओं व धार्मिक क्रियाकलापों की सूची बनाओ जो आज हैं परंतु सरस्वती-सिंधु काल में वे नहीं थे।
2. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के भोजन की सूची बनाओ व आज उनमें आए बदलावों पर चर्चा करो।
3. सरस्वती-सिंधु सभ्यता के लोगों के मनोरंजन के साधनों की सूची बनाओ व आज के मनोरंजन के साधनों से वे कितने भिन्न हैं?
4. सरस्वती-सिंधु सभ्यता में ग्रामीण लोगों के जीवन में कृषि एवं पशुपालन का क्या महत्व था?

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

2 वैदिक काल

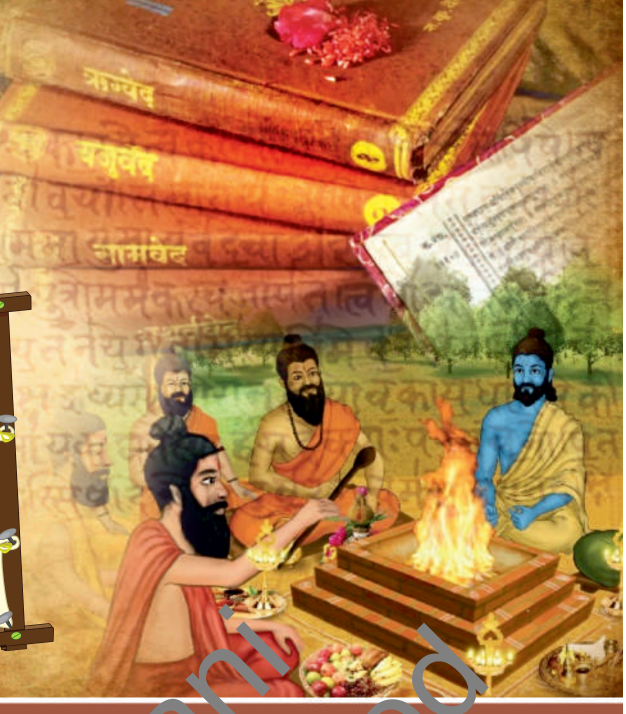

आओ जानें

- ऋग्वैदिक काल – राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन, धार्मिक जीवन एवं आर्थिक जीवन
- उत्तर वैदिक काल – राजनीतिक जीवन, सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन एवं धार्मिक जीवन

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

भारत के अतीत का अध्ययन करने के लिए वैदिक साहित्य का अत्यधिक महत्व है। इस काल की जानकारी के प्रमुख स्रोत वेद होने के कारण इसको वैदिक काल कहते हैं।

वैदिक काल को दो भागों में विभाजित किया जाता है

- ऋग्वैदिक काल
- उत्तर वैदिक काल

ऋग्वैदिक काल

ऋग्वेद विश्व का सबसे प्राचीनतम ग्रन्थ है। इसमें 10 मण्डल और 1028 सूक्त हैं।

चित्र 2.

इसकी रचना गृत्समद, विश्वामित्र, वामदेव, अत्रि, भारद्वाज, वशिष्ठ, कण्व व अंगिरा आदि ऋषियों ने सरस्वती व दृषद्वती नदियों के किनारे पर की है।

ऋग्वेद की तिथि प्राय: 6000 ई.पू. से लेकर 1500 ई.पू. के बीच में मानी जाती है।

सरस्वती नदी ऋग्वैदिक काल की सबसे पवित्र नदी है।

इसमें सिन्धु, झेलम, चिनाब, रावी, सतलुज, यमुना तथा गंगा आदि नदियों का तथा सप्तसैन्धव प्रदेश के भौगोलिक क्षेत्र का भी वर्णन मिलता है। जिसका प्रसार अफगानिस्तान से लेकर गंगा घाटी तक माना जाता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

ऋग्वेदकालीन राजनीतिक जीवन

- राजनीतिक दृष्टि से ऋग्वैदिक काल की सबसे बड़ी इकाई जन थी। जन विशों में बटें हुए थे। विश ग्रामों में, ग्राम कुलों में और कुल परिवारों में बटें हुए थे। सबसे छोटी इकाई 'परिवार' का मुखिया पिता या बड़ा भाई होता था, जिसको कुलप कहा जाता था। कई कुलों से मिलकर ग्राम बनता था। ग्राम के मुखिया को ग्रामणी कहा जाता था। ग्राम से बड़ी संस्था विश होती थी जिसका स्वामी विशपति कहलाता था। कई विशों के समूह को जन कहा जाता था। **ऋग्वेद में पांच जनों पुरु,**

इकाई	प्रधान
परिवार या कुल	कुलप या गृहपति
ग्राम	ग्रामणी
विश	विशपति
जन	जनपति

राजा ⇨ पुरोहित ⇨ विशपति ⇨ ग्रामणी ⇨ कुलप

चित्र 2.2

तुर्वस, यदु, अनु और द्रुहु का वर्णन मिलता है।

- देश के लिए 'राष्ट्र' शब्द का प्रयोग किया गया है। जनों के आपसी संघर्ष को 'दशराज्ञ युद्ध' कहा गया है, जिसमें सुदास ने दस राजाओं के संघ को हराया था। आर्यों की सेना में रथों व पैदल सैनिक होते थे। धनुष-बाण मुख्य हथियार थे। बाणों के अग्रभाग धातु निर्मित और नुकीले होते थे। तलवार व फरसे आदि का भी प्रयोग होता था। युद्ध के भी नियम निर्धारित थे। युद्ध आरम्भ करने से पहले शंखनाद करना, ढोल और बिगुल बजाना जरूरी था। निशस्त्र शत्रु पर, घायल होने पर तथा युद्ध से भागने वाले पर आक्रमण करना अनुचित कार्य माना जाता था।
- जन के अधिपति को राजन कहा जाता था। राजन निरंकुश नहीं थे। 'सभा, समिति और विदथ' नामक संस्थाए उन पर अंकुश रखती थी। कई अवसरों पर वे राजा का चुनाव भी करती थीं और राजा को हटा भी देती थी। राजा शपथ लेते हुए बोलता था कि "यदि मैं विश्वासघात करूँ तो मुझे अपने सभी अच्छे और धार्मिक कर्मों का फल न मिले और मैं अपने स्थान, पद, जीवन और यहां तक की अपनी संतान से भी वंचित हो जाऊँ।"
- शांति स्थापित करना, झगड़ों का निपटारा करना, बाहरी आक्रमणों से रक्षा करना और भौतिक आवश्यकताओं की पूर्ति व आध्यात्मिक उन्नति के लिए यज्ञ-हवन करवाना राजा के प्रमुख कर्तव्य माने जाते थे। राजा की सहायता के लिए पुरोहित, सेनापति, ग्रामणी आदि होते थे जो राजा और प्रजा के बीच में मध्यस्थ का काम करते थे। इन्हें अपने-अपने भू-भाग में शासन व न्याय के अधिकार प्राप्त थे।
- उस समय चोरी, बेईमानी एवं धोखाधड़ी करना अपराध की श्रेणी में आता था। जिनके लिए अपराधी को शारीरिक और आर्थिक दण्ड दिए जाते थे। मृत्यु दण्ड की प्रथा नहीं थी।
- अग्नि को अत्यंत पवित्र माना जाता था। यह सभी घरों में निरन्तर रखी जाती थी। हरियाणा के गांवों में आज भी घरों में ऐसे मिलते हैं, जिनमें हर समय अग्नि प्रज्वलित रहती है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

ऋग्वेदकालीन सामाजिक जीवन

- **सामाजिक व्यवस्था :** ऋग्वैदिक समाज का आधार संयुक्त परिवार होता था जिसमें पिता या बड़ा भाई परिवार का स्वामी होता था। उसके अधिकार असीमित होते थे। वह परिवार के सदस्यों को कठोर से कठोर दण्ड भी दे सकता था। लेकिन ऐसा होता नहीं था वह बहुत ही प्यार से परिवार चलता था।
- राज्य लोगों के पारिवारिक जीवन में हस्तक्षेप नहीं करता था। उस समय जीवन बहुत ही शिष्ट, सात्विक व सदाचारपूर्ण होता था। उस काल के गांव भी छोटे-छोटे होते थे। लोग मिट्टी, लकड़ी व घास-फूस के बने मकान में रहते थे।

वर्ण व्यवस्था : समाज को सुचारू रूप से चलाने के लिए कर्म पर आधारित वर्ण व्यवस्था की स्थापना की गई। वर्णों में कोई कठोरता नहीं थी। हमें ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं, जिनका जन्म किसी वर्ण में हुआ, परन्तु कर्मों के द्वारा वे दूसरे वर्ण में चले गए।

ब्राह्मण | क्षत्रिय | वैश्य | शूद्र

आश्रम व्यवस्था : मनुष्य के जीवन को चार आश्रमों में बांटा गया था– 1 से 25 वर्ष तक ब्रह्मचर्य आश्रम, 25 से 50 वर्ष तक गृहस्थ आश्रम, 50 से 75 वर्ष तक वानप्रस्थ आश्रम व 75 से 100 वर्ष तक संन्यास आश्रम। इन अवस्थाओं में ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए शिक्षा ग्रहण करना, गृहस्थ जीवन में विवाह करना व धन कमाना, वानप्रस्थ में समाज हित के कार्य करना व संन्यास आश्रम में मोक्ष प्राप्ति के लिए प्रयास करना होता था। मनुष्य के जीवन के धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष आदि उद्देश्य भी निर्धारित थे।

> **क्या आप जानते हैं?**
> जैसे विश्वामित्र क्षत्रिय थे ब्राह्मण बने, नाभानेदिष्ठ वैश्य थे ब्राह्मण बने अर्थात् मनुष्य के कर्म के अनुसार ही उसका वर्ण निर्धारित होता था।

- मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक अनेक संस्कार भी बताए गए हैं।

खान पान : उस काल में दूध, घी और दही आदि का भोजन में विशेष महत्व था।

वेशभूषा : शरीर का ऊपरी भाग एक वस्त्र से ही ढका जाता था, जिसे वास कहते थे। सिर पर पहनी जाने वाली पगड़ी को अधिवास तथा नीचे (पैरों पर) पहने जाने वाले वस्त्र को नीवी कहते थे।

- आभूषणों में स्त्रियां केशबन्ध, कानों में बालियां, गले में हार, बाजूबंद तथा पैरों में कड़े आदि पहनती थीं। केशों को संवारने के लिए चोटी रखना, तेल लगाना, फूल के गजरे आदि लगाए जाते थे। पुरुष भी आभूषणों का प्रयोग करते थे।

मनोरंजन : आखेट, रथदौड़, घुड़दौड़ तथा संगीत की तीनों विधाओं– गायन, वाद्य व नृत्य इत्यादि से भी मनोरंजन किया जाता था।

शिक्षा : शिक्षा के लिए गुरु के घर जाना पड़ता था। शिक्षा मौखिक होती थी, जिसका मूल उद्देश्य ज्ञान प्राप्त करना, श्रेष्ठ आचरण रखते हुए एक श्रेष्ठ नागरिक बनाना होता था। वैदिक ऋषि सभी की मंगल कामना करते थे। ऋग्वेद के संज्ञान सूक्त में प्रार्थना है– "हे भगवान हमें ऐसी बुद्धि दे जिससे हम सब मिलकर रहें, प्रिय बोलें, सहृदयी

©BSEH Bhiwani Not to be republished

बनकर मिल-बांटकर धन-धान्य का उपयोग करें। हमारी प्रवृत्ति राग-द्वेष रहित व प्रेम पूर्वक हो।" एक अन्य स्थान पर ऋग्वेद में मातृभूमि की सेवा करने का उल्लेख है। ऋग्वेद में अनेक मंत्र मिलते हैं जो राष्ट्र की रक्षा करने लिए लिखे गए हैं। ऋग्वेद के इन्द्र सूक्त में ऐसी संतान की कामना है जो अपने देश की रक्षा के लिए, धन-धान्य से परिपूर्ण हो व प्रत्येक जन व जन-समूह पर कल्याणकारी गुणों को बरसाने वाली हो।

स्त्रियों की स्थिति : स्त्रियों की समाज में स्थिति अच्छी थी। विवाह परिपक्व अवस्था में ही होते थे। उन्हें भी स्वतन्त्रतापूर्वक घूमने-फिरने, पढ़ने-लिखने व पति को चुनने का अधिकार था। पर्दा प्रथा का प्रचलन नहीं था और स्त्रियों की शिक्षा-दीक्षा की समुचित व्यवस्था थी। विवाह को पवित्र और स्थायी सम्बन्ध माना जाता था। विवाह के बाद पत्नी जब घर आती थी तो गृहस्वामिनी कहकर उसका स्वागत किया जाता था। कुछ स्त्रियां विवाह नहीं करती थीं, जैसे- अपाला, विश्ववारा, घोषा आदि। धार्मिक कार्य स्त्री के बिना पूर्ण नहीं होते थे। उनकी उपस्थिति अनिवार्य होती थी।

ऋग्वेदकालीन आर्थिक जीवन

- **कृषि और पशुपालन :** ऋग्वैदिक आर्यों की आय के प्रमुख साधन कृषि और पशुपालन थे। व्यक्तिगत भूमि को उर्वरा तथा शामलाती या साझी भूमि को खिल्य कहते थे, जिसे पशुओं को चराने के लिए प्रयोग किया जाता था। उस समय लोग फसलों की जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई को जानते थे। बैलों से चलाने वाले हलों का प्रयोग होता था। वैसे तो सिंचाई का मुख्य साधन वर्षा था परन्तु कुओं से भी सिंचाई होने का उल्लेख मिलता है।

ऋग्वेद	होतृ
सामवेद	उद्गाता
यजुर्वेद	अध्वर्यु
अथर्व वेद	ब्रह्मा

- पशुपालन में मुख्य रूप से गाय, बैल, भेड़, बकरी, घोड़ा, कुत्ता आदि पशु पाले जाते थे। पशु पालकों को गोप कहा जाता था। गाय का दूध मुख्य आहार था। बैल हल चलाने व बैलगाड़ी खीचने के काम में लिए जाते थे। घोड़ों का रथों व युद्ध क्षेत्र में प्रयोग होता था। शिकार के लिए कुत्ते काम में लिए जाते थे। जिसके पास जितने ज्यादा पशु होते थे, वह उतना ही धनी माना जाता था। आखेट (शिकार) करना भी प्रमुख कार्य था जो धनुष-बाण व जाल फैलाकर किया जाता था।

- **उद्योग :** उद्योग एवं शिल्प भी बड़ी मात्रा में प्रचलन में थे। ऋग्वेद में लकड़ी उद्योग, कपड़ा उद्योग, चर्म उद्योग, धातु उद्योग और कुम्भकार आदि का उल्लेख मिलता हैं। लकड़ी की वस्तुओं में विशेषकर रथ, बैलगाड़ी आदि का निर्माण किया जाता था। कपड़ा उद्योग में सूत, रेशम और ऊन के वस्त्र बनाए जाते थे। चमड़े के कोड़े, लगाम, डोरी तथा थैले आदि बनाये जाते थे। धातु को गला कर वस्तुएँ बनाने के प्रमाण भी मिलते हैं। उस समय में मिट्टी के बर्तन बनाने वाले कुम्हार, बाल काटने वाले नाई, शल्य चिकित्सक, गायक, वादक, नर्तक आदि का भी उल्लेख मिलता है। च्यवन ऋषि द्वारा प्रदत्त शल्य विद्या से अनेक लोगों की चिकित्सा की गई थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

- उस काल में व्यापार भी होता था। व्यापारियों को पणि कहा जाता था। व्यापार जल और स्थल दोनों मार्गो से होता था। व्यापार वस्तु विनिमय से होता था। वस्तु विनिमय का मुख्य साधन गाय होती थी। उस काल में गण, व्रात शब्दों का भी उल्लेख मिलता है, जो सम्भवत: व्यापारिक संघों के लिए प्रयोग किये जाते थे। ये सम्भवत: ब्याज का लेनदेन भी करते थे, जिसको अच्छा नहीं माना जाता था।

ऋग्वेदकालीन धार्मिक जीवन

- ऋग्वैदिक धर्म में बहुदेववाद के दर्शन होते हैं। उस समय के देवता प्राकृतिक शक्तियों के ही प्रतीक थे। इसलिए उस काल के धर्म को प्राकृतिक धर्म कहना ज्यादा उचित लगता है। उस समय के देवी-देवताओं का तीन भागों में वर्गीकरण किया गया था। ये सभी अपने अपने वर्ग के प्रमुख देवता हैं। इस काल के देवी-देवताओं में कोई छोटा-बड़ा नहीं होता था।
- ऋषि दीर्घतमस के अनुसार 'एकं सद् विप्रा: बहुदा वदन्ति'। अर्थात् सत्य एक है विद्वान उसे अलग-अलग बताते हैं।
- कई देवताओं के वाहनों का भी उल्लेख मिलता है जैसे सूर्य के अश्व और इन्द्र का हाथी।
- अपने देवताओं को प्रसन्न करने के लिए वे खुले स्थान पर जाकर यज्ञ हवन करते थे व समाज के सभी वर्गों के लोग उनमें शामिल होते थे। आज भी हरियाणा में वर्षा न होने पर जैसे गांव के लोग इकट्ठे होकर पुण्य करते हैं, ठीक उसी प्रकार ऋग्वैदिक आर्य भी मिलकर यज्ञ-हवन किया करते थे।
- ऋग्वेद में कहीं भी मूर्ति-पूजा, मन्दिर आदि का उल्लेख नहीं मिलता है।
- प्रतीत होता है कि प्रकृति को सजीव मानते हुए उसका मानवीकरण किया गया। अग्नि के तीन रूपों का वर्णन मिलता है जैसे- पृथ्वी पर अग्नि, सूर्य की अग्नि, वायुलोक में बादलों में कड़कने वाली विद्युत अग्नि। इसी प्रकार अलग-अलग रूपों में, अलग-अलग नामकरण हो जाता है।

अंतरिक्ष के देवता : इन्द्र, रुद्र, वायु

पृथ्वी के देवता : अग्नि, पृथ्वी, सोम

आकाश के देवता : सूर्य, वरुण, आदित्य

चित्र 2.3 हवन-यज्ञ

ऋग्वैदिक मानव देवताओं की पूजा-अर्चना शत्रुओं के दमन के लिए करता था। उस काल के शत्रुओं को असुर कहते थे। जैसे- वृत्रासुर। वृत्रासुर सम्भवत: एक प्रकृति की घटना थी जिसमें रेत का बवंडर उठता हो और जहां पानी की कमी हो। दूसरे मनुष्यों के शत्रु जिन्हें राक्षस माना जाता था। ये राक्षस/दस्यु सम्भवत: वे लोग थे जो पूजा-अर्चना में विश्वास नहीं रखते थे। जंगलों में रहते हुए मांस भक्षण किया करते थे और यज्ञ-हवनों में बाधा पहुंचाते थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

जैसा कि पहले लिखा जा चुका है कि यज्ञ-हवन करने वाले व ऋचाओं को बनाने वाले ऋषि-मुनि होते थे जो सभी वर्णों से होते थे। उस काल में धार्मिक कट्टरता नहीं थी। किसी भी वर्ण का व्यक्ति अपने कर्मों के द्वारा दूसरे वर्ण में जा सकता था। उस काल में छुआछूत भी नहीं थी। ऋग्वेद में सभी वर्णों की रचना की प्रार्थना की गई है। ऋग्वेद में पुनर्जन्म व कर्मवाद में विश्वास भी झलकता है।

उत्तर वैदिक काल

ऋग्वैदिक संस्कृति के आधार पर विकसित यजुर्वेद, सामवेद, अथर्ववेद, वेदों पर लिखी टीकाएं ब्राह्मण ग्रन्थ तथा आरण्यक ग्रन्थ, उपवेद-आयुर्वेद, धनुर्वेद, गन्धर्व वेद, शिल्पवेद, उपनिषद् व छह वेदांग-शिक्षा, कल्प, व्याकरण, ज्योतिष, निरुक्त व छन्द आदि से उत्तर वैदिक काल की संस्कृति की जानकारी मिलती है। उत्तर वैदिक काल की तिथि प्रायः 1500 ई.पू. से लेकर 1000 ई.पू. के बीच में मानी जाती है। यह समय आर्यों की प्रगति का काल था। संख्या की दृष्टि से बढ़ने के साथ-साथ भौगोलिक दृष्टि से भी उनका विस्तार हो रहा था। उन्होंने गंगा-यमुना नदी को पार कर लिया था और पूर्व में बंगाल तक फैल चुके थे तथा दक्षिण में भी विंध्याचल पर्वत माला पार कर ली थी। इस काल की विशेषताओं को निम्न प्रकार से देखा जा सकता है :

राजनीतिक जीवन

इस काल में ऋग्वेद की तुलना में राज्य बड़े हो चुके थे, जिनमें कुरु, पांचाल, काशी, कौशल, विदेह, इत्यादि थे। पुरु व भरत से मिलकर कुरु वंश बना। इनके राज्य में आधुनिक हरियाणा भी शामिल था। हस्तिनापुर इनकी राजधानी थी। परीक्षित व जनमेजय इस वंश के महत्वपूर्ण शासक थे। जनमेजय की राजधानी आसनधीवत (आधुनिक असन्ध) थी। पांचालों का राज्य गंगा-यमुना के उत्तर में था व काम्पिल्य इसकी राजधानी थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

राजा : इस काल में राजाओं की शक्तियों में वृद्धि हुई। इस काल में राजा अनेक उपाधियां धारण करता था। जैसे सम्राट, विराट, राजाधिराज आदि। इनके द्वारा अश्वमेध, राजसूय तथा वाजपेय बड़े-बड़े यज्ञों का भी आयोजन किया जाता था। राजतंत्रात्मक शासन प्रणाली तथा राजा का पद वंशानुगत होता था। उसकी शक्तियां निरंकुश होती थी परंतु फिर भी वह प्रजा के हित में कार्य करता था।

इस काल में मातृभूमि की रक्षा और देशभक्ति के प्रमाण के रूप में अनेक प्रसंग मिलते हैं। अथर्ववेद में वर्णित भूमिसूक्त (12:1) का उल्लेख किया जा सकता है जिसमें लिखा है "भूमि मेरी माता है और मैं उसका पुत्र हूं। पृथ्वी विभिन्न जातियों, धर्म-कर्म करने वालों का भरण पोषण करती है।" यजुर्वेद (9:40) में विद्वानों व साधारण लोगों से प्रार्थना की गई है कि वे ऐसे श्रेष्ठ क्षत्रिय को राजा चुनें जो अपने राज्य का विस्तार करें, उसमें विद्वान लोगों को आश्रय दें, धन सम्पदा से समृद्ध करें तथा सबकी सहमति लेकर बिना किसी भेदभाव के विनम्रता से कार्य करें व अपने भू-भाग को शत्रुओं से रहित करें।

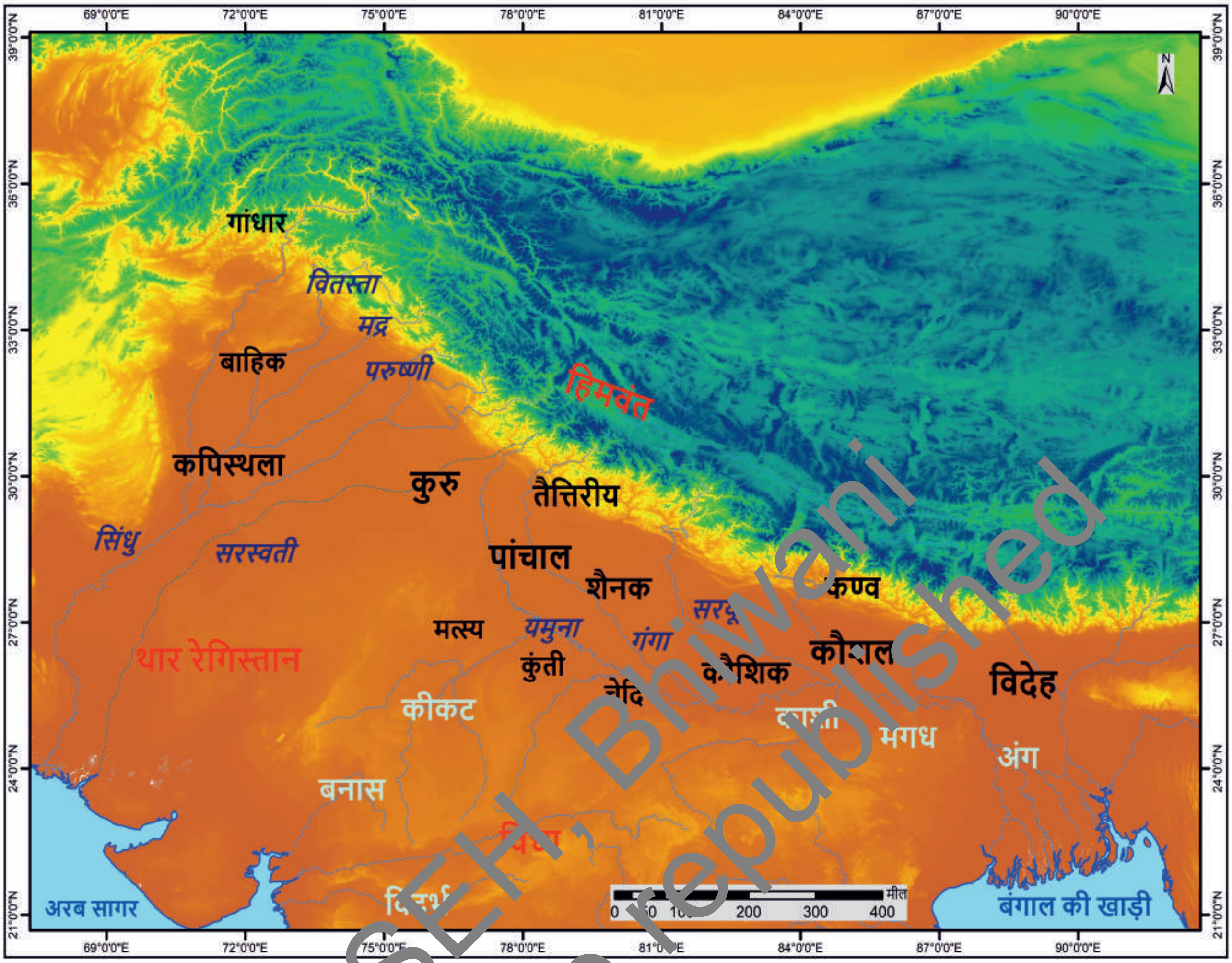

मानचित्र 2.1 – वैदिक कालीन उत्तर भारत

राजा से यह भी आशा की जाती थी कि वह धर्म-ऋतु या नियम के अनुसार कार्य करे क्योंकि सारा संसार नियमों व धर्म से ही बंधा हुआ था। धर्म की रक्षा का भार राजा पर था परन्तु वह स्वयं धर्म से ऊपर नहीं था और वह धर्म के सिद्धांतों को बदल नहीं सकता था। अधर्मी और स्वेच्छाचारी राजाओं की निंदा का भी उल्लेख मिलता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

राजा के कार्य इस प्रकार हैं

- राज्य व प्रजा की रक्षा एवं युद्धों में सेना का नेतृत्व करना।
- न्याय करना
- प्रजा के हित में कार्य करना।

राजा प्रजा से विभिन्न प्रकार के कर लेता था जिसे अधिकारियों को वेतन देने, सुरक्षा करने, प्रजाहित के कार्य करने तथा राजमहल की आवश्यकताओं पर खर्च किया जाता था। उत्तर वैदिक काल में सभा तथा समिति का महत्व कम हो गया था। इसके अतिरिक्त राजा अपनी सहायता के लिए भागदुह (कर एकत्रित करने वाला), संग्रहीता (खजांची), सूत (सारथी), द्वारपाल (सन्देश लाने-ले जाने वाला), पालागल, पुरोहित और युवराज आदि अधिकारियों की नियुक्ति भी करता था।

सैनिक प्रबंध : इस काल में राजाओं ने अपनी स्थायी सेना रखनी आरंभ कर दी थी। युद्ध में हाथियों का प्रयोग भी होने लगा था। उनके अस्त्र-शस्त्र में प्रमुख धनुषबाण होता था। इनके बाणों के नुकीले अग्रभाग कई बार विष से बुझे भी होते थे। सैनिक युद्धों के अतिरिक्त कृषि जैसे असैनिक कार्य भी करते थे।

न्याय व्यवस्था : छोटे झगड़ों का निपटारा ग्रामणी ही किया करते थे। निर्दोष सिद्ध करने के लिए अग्नि, जल आदि परीक्षाएं भी होती थीं। मृत्यु दंड नहीं दिया जाता था। अपराधों के लिए आर्थिक व शारीरिक दंड ही दिये जाते थे।

सेनानी	सेनापति	क्षता	प्रतिहारी
सूत	राजा का सारथी	गोविकर्तन	जंगल विभाग के प्रधान
ग्रामणी	गांव का मुखिया	महिषी	मुख्य रानी
भागदुह	कर संग्रहकर्ता	पुरोहित	धार्मिक कार्य करने वाला
संग्रहीता	कोषाध्यक्ष	युवराज	राजकुमार

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

सामाजिक जीवन

- समाज की सबसे छोटी इकाई परिवार होती थी। परिवार पितृसत्तात्मक थे अर्थात् पुत्र को पिता के गोत्र से ही जाना जाता था। परिवार के बड़े पुरुष को ही परिवार का मुखिया माना जाता था तथा उसका घर की सारी सम्पत्ति तथा सदस्यों पर पूरा नियंत्रण होता था।
- अथर्ववेद में लिखी एक कामना से यह सिद्ध हो जाता है : पुत्र अपने पिता के प्रति भक्तिवान हो, अपनी माता के प्रति एक मन वाला हो, पत्नी अपने पति से सदा मधुर एवं विनम्रवाणी में बोले। भाई-भाई से तथा बहन-बहन से घृणा न करे, खाना-पीना साथ हो, एक होकर यज्ञाग्नि के चारों ओर शामिल हों। जैसे चक्र के अरें धुरी से जुड़े रहते हैं।

- **वर्ण व्यवस्था :** ऋग्वेद की भांति समाज वर्णों में विभाजित था परंतु उसका आधार अब भी कर्म ही था। शूद्रों के साथ भेदभाव नहीं होता था। छूआछूत की भावना भी नहीं थी। वैश्वदेव यज्ञ में लगे आर्यों के लिए शूद्रों द्वारा भोजन बनाने का प्रावधान था। अथर्ववेद में सभी वर्णों की कीर्ति के लिए कामना मिलती है।

- वर्ण व्यवस्था आगे चलकर जन्म पर आधारित होने लगी थी फिर भी वे परिवर्तनशील थे। हमें अनेक उदाहरण मिलते हैं जिनसे पता लगता है कि ब्राह्मण कुल में जन्म लेकर बाद में वह क्षत्रिय बन गए। वैश्यकुल में जन्म हुआ परंतु ब्राह्मण कहलाए।

चित्र 2.4 वर्ण व्यवस्था

आश्रम व्यवस्था : उत्तर वैदिक काल में मनुष्य की आयु को सौ वर्ष मानकर उसको चार आश्रमों में बांटा गया हैं।

- ब्रह्मचर्य (1 से 25 वर्ष): जिसमें मनुष्य को ब्रह्मचर्य का पालन करते हुए नीतियों/नियमों को सीखना और शिक्षा ग्रहण करनी होती थी।
- गृहस्थ (25 से 50 वर्ष): इस काल में मनुष्य को जीविका तथा अपने बच्चों के पालन-पोषण के कार्य निर्धारित थे।
- वानप्रस्थ (50 से 75 वर्ष): इस अवस्था में मनुष्य के लिए सामाजिक कार्य निर्धारित थे। जैसे गृहस्थ आश्रम में मनुष्य अपने बच्चों का पालन पोषण करता था। इसी प्रकार अब समाज को अपना समझते हुए उसकी उन्नति के लिए प्रयास करने थे।
- संन्यास (75 से 100 वर्ष): इस अवस्था में मनुष्य से आशा की जाती थी कि वह मोक्ष की प्राप्ति के लिए घर, समाज को छोड़कर जंगलों में चला जाए और मोक्ष की प्राप्ति के लिए अपने प्रयास करे।
- मनुष्य के जीवन का उद्देश्य चार पुरुषार्थ माने जाते थे। 1. धर्म 2. अर्थ 3. काम 4. मोक्ष। इन्हें इन आश्रमों में ही पूरा करना होता था।

संस्कार : जन्म से लेकर मृत्यु तक 16 संस्कारों को करने का प्रचलन था।

खान-पान : इस काल में सात्विक भोजन होता था। भुने हुए अन्न का भी प्रयोग होता था। इस काल में सत्तू, तिल, खीर, खिचड़ी आदि का सेवन आम बात थी।

वेशभूषा : इस काल में रंगीन वस्त्रों का प्रचलन हो गया था। केसर आदि प्राकृतिक तरीकों से ही वस्त्रों को रंगा जाता था। सुगंधित द्रव्यों का भी प्रयोग किया जाता था। लोगों को सजने-संवरने का शौक था। स्त्रियां अनेक प्रकार के आभूषण धारण करती थीं। पुरुष भी बाजूबंद और विभिन्न प्रकार की मालाएं पहनते थे।

मनोरंजन के साधन : बाहर खेले जाने वाले खेल जैसे रथदौड़, घुड़दौड़, शिकार करना, मल्लयुद्ध, पशुओं की लड़ाई करवाना आदि से मनोरंजन होता था। घर में खेले जाने वाले खेल जैसे चौपड़, संगीत, नाटक आदि से भी मनोरंजन होता था।

स्त्रियों की स्थिति : समाज में स्त्रियों की स्थिति अच्छी थी। धनी और राज परिवारों में बहुविवाह प्रथा प्रचलित थी। सती, बाल विवाह और पर्दा प्रथाएं प्रचलित नहीं थीं। वे शिक्षा ग्रहण करती थीं। गार्गी-याज्ञवल्क्य वाद-विवाद से सिद्ध होता है कि उस काल में स्त्रियों को भी पढ़ने-लिखने का अधिकार था और वे विदूषी होती थीं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

नैतिक पतन : इस काल में समाज का नैतिक पतन होना आरंभ हो गया था। राजभवनों में शराब, नाच, गाना, जुआ आदि का प्रचलन हो रहा था।

गतिविधि

शिक्षक अपनी कक्षा में सभी छात्रों को एक अलग राज्य आवंटित करें। छात्र उस राज्य और हरियाणा के त्योहारों, खान-पान और वेश-भूषा के बारे में जानकारी एकत्रित कर तुलनात्मक अध्ययन करेंगें और चित्रों के साथ संग्रह पुस्तिका (स्क्रैप) बुक तैयार करेंगे।

आर्थिक जीवन

कृषि : इस काल में आय का प्रमुख साधन कृषि था। इस काल में कृषि की जोत बहुत बढ़ गई थी। हल का आकार बड़ा था और इसका उपयोग बड़े पैमाने पर होने लगा था। ऐसे हलों का प्रयोग मिलता है जिसे 24 बैल मिलकर खींचते थे। जौ, चावल, मूंग, उड़द, तिल और गेहूं आदि प्रमुख अन्न थे। ऋतुओं के अनुसार फसल को बोया और काटा जाता था। जौ (यव) सर्दियों में बोया जाता था और गर्मियों में काटा जाता था। शतपथ ब्राह्मण में कृषि के विभिन्न कार्य जुताई, बुआई, सिंचाई, कटाई, ओसाई आदि का उल्लेख मिलता है। उत्पादन बढ़ाने के लिए गोबर की खाद का प्रयोग होता था। सिंचाई के लिए वे वर्षा पर ही निर्भर थे। कुएं और नदियों के जल का भी प्रयोग करते थे। ज्यादा बारिश का आना या कम बारिश का होना व अन्य प्राकृतिक आपदा के आने का किसानों में भय बना रहता था। कृषि को रोगों या ऐसी आपदाओं से बचाने के लिए तंत्र-मंत्र का प्रयोग किया जाता था।

पशुपालन : इस काल में गाय का महत्व काफी बढ़ गया था और उसे श्रद्धा की दृष्टि से देखा जाता था। इस काल में हाथी और ऊंट भी पाले जाते थे। इसके अतिरिक्त घोड़ा, सूअर, गधा, कुत्ता, तथा अन्य काम आने वाले पशुओं को पाला जाता था।

उद्योग धंधे : वाजसनेयी संहिता में हमें विभिन्न व्यवसायों का उल्लेख मिलता है। जिनमें रथकार, स्वर्णकार, चर्मकार, लुहार, कुम्भकार, जुलाहे, धोबी, वधिक, नट, गायक, गोप, सूत, नाई, ज्योतिषी इत्यादि प्रमुख थे।

धातु उद्योग : इस काल में सोना (हिरण्य), लोहा (कृष्ण अयस्क), तांबा (लाल अयस्क), चांदी, टिन, शीशा आदि धातुओं के प्रयोग का पता चलता है। धातुओं से आभूषण, कृषि संबंधी उपकरण, बर्तन तथा लड़ाई के लिए अस्त्र-शस्त्र बनाए जाते थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

व्यापार : इस काल में समान व्यवसाय करने वाले एक संघ में संगठित हो जाते थे। साहित्य में ऐसे अनेक संघों का उल्लेख मिलता है और इनके अध्यक्ष को श्रेष्ठि कहा जाता था। इस काल के निष्क, शतमान, कार्षापण आदि मुद्रा की विभिन्न इकाइयों के उल्लेख मिलते हैं। व्यापार, जल और स्थल मार्गों से होता था। सौ पतवारों वाली बड़ी-बड़ी नावों का उल्लेख भी मिलता है। पहाड़ी प्रदेशों से भी व्यापार होता था। सामान को एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने के लिए बैलगाड़ी का प्रयोग आम था।

धार्मिक जीवन

इस काल में पहले के प्राकृतिक देवताओं इंद्र, वरुण तथा अग्नि का महत्व घट गया था तथा नए देवताओं की आराधना आरम्भ हो गई थी। अब ब्रह्मा-विष्णु-महेश का स्थान सबसे ऊपर हो गया था।

यज्ञों की प्रधानता : इस काल में यज्ञों की प्रधानता हो गई थी। यज्ञवेदियों की रचना, उनके संचालन के लिए पुरोहितों का होना कई दिनों तक चलने के कारण यज्ञ आम जनता की पहुंच से दूर हो गये थे। उत्तर वैदिक काल में कर्मकांडों ने प्रधानता बना ली थी, जिनमे घर के कार्यों के साथ-साथ महायज्ञों के ऐसे विधान बनाए गए थे जिनकी कल्पना साधारण मनुष्य की सोच से बाहर थी। इन कर्मकांडों में मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक का ही विधान नहीं था बल्कि उससे अलग कई दिवंगत आत्मा की शांति के लिए भी बताए गए थे।

चित्र 2.5 **ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश**
(काल्पनिक चित्र)

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

तपस्या : इस काल में शरीर को कष्ट देने अर्थात् तपस्या की भावना का भी विकास हुआ। सत्य की उत्पत्ति तप से ही हुई और तप के द्वारा देवताओं को भी वश में किया जा सकता है। तपस्या के द्वारा ही शक्ति प्राप्त करके अनेक मनुष्यों ने स्वर्ग को जीता। प्रजापति ने भी तप के द्वारा सृष्टि की रचना की थी। इस काल में अनेक ऋषियों द्वारा घोर तपस्या का उल्लेख मिलता है।

क्या आप जानते हैं?

इस काल में लोगों में अंधविश्वास बढ़ने लगा था। लोग भूत-प्रेतों में विश्वास रखने लगे थे। जादू टोनों व मंत्रों में उनका विश्वास दृढ़ हो गया था। अथर्ववेद में भूतप्रेतों से रक्षा के लिए तंत्र-मंत्र का विस्तृत उल्लेख है। रोगों को दूर करने के लिए भी तंत्र-मंत्र का सहारा लिया जाता था।

दार्शनिकता : इस काल में जहां एक ओर कर्मकांड तथा घोर तपस्या की क्रियाएं हो रही थीं वहीं दूसरी ओर ऐसा भी वर्ग था जो शांति और ज्ञान की खोज में लगा था। उपनिषदों में इस आध्यात्मिक चिन्तन का विस्तृत वर्णन मिलता है। आत्मा, परमात्मा, सृष्टि, मोक्ष आदि इनके प्रमुख विषय थे।

- दर्शन की छह आस्तिक व्याख्याएं ढूंढी जा सकती हैं। जिनमें 1. सांख्य दर्शन 2. योग दर्शन 3. वैशेषिक दर्शन 4. न्याय दर्शन 5. पूर्व मीमांसा और 6. उत्तर मीमांसा। उत्तर मीमांसा को ही वेदांत कहते हैं अर्थात वेदों का निचोड़।
- ये सभी व्याख्याएं संसार को मायाजाल मानती हैं। ब्रह्म एवं जीव को समझने के लिए छान्दोग्य उपनिषद में पिता-पुत्र संवाद का वर्णन है, जिसमें उद्दालक (पिता) अपने पुत्र श्वेतकेतु को समझाता है कि कोई न कोई वस्तु अवश्य है जिससे जगत की उत्पत्ति हुई। उसकी कल्पना की जा सकती है और वह ही सत्य है। जब उसने सोचा कि एक से अनेक बनूं तो उसी से अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, व अन्य जीव बने। अतः जो कुछ भी दिखता है, वह वही है, तो हे श्वेतकेतु तुम भी वही हो।
- मनुष्य का अंतिम लक्ष्य मोक्ष प्राप्त करना है। मोक्ष से अभिप्राय है जन्म मरण के चक्र से छुटकारा। मोक्ष से जीव का विनाश नहीं होता बल्कि वह ब्रह्म में विलीन हो जाता है। जिसका वह अंश होता है, यह एक चरमशांति की स्थिति होती है, जो हमें ज्ञान से प्राप्त होती है।

अश्वमेध यज्ञ	साम्राज्य सीमा वृद्धि के लिए, घोड़े को स्वतंत्र रूप से छोड़ दिया जाता था
राजसूय यज्ञ	राजा के राज्याभिषेक से संबन्धित
अग्निष्टोम यज्ञ	पापों के क्षय व स्वर्ग की ओर ले जाने वाली नाव के रूप में वर्णित
वाजपेय यज्ञ	शक्ति प्रदर्शन के लिए रथ दौड़ का आयोजन

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप - विद्यार्थी पुनरावृत्ति करते हुए स्वयं भरें

ऋग्वैदिक काल	उत्तर वैदिक काल
राजनीतिक जीवन	राजनीतिक जीवन
सामाजिक जीवन	सामाजिक जीवन
धार्मिक जीवन	धार्मिक जीवन

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. ऋग्वेद में .... मंडल और .... सूक्त हैं।

   क) 8,1000　　ख) 10,1028　　ग) 10,1050　　घ) 20,5000

2. ग्राम से बड़ी संस्था .... होती थी।

   क) राष्ट्र　　ख) जन　　ग) विश　　घ) इन में से कोई नहीं

3. मनुष्य का जीवन .... आश्रमों में बांटा गया था।

   क) 4　　ख) 5　　ग) 2　　घ) 3

4. पांचालों का राज्य गंगा, यमुना के उत्तर में था व ....इसकी राजधानी थी।

   क) आसनधिवत　　ख) कांपिल्य　　ग) हस्तिनापुर　　घ) पांचालों का राज्य

5. उत्तर मीमांसा को ही ....कहते हैं।

   क) उपनिषद　　ख) वेदांत　　ग) सांख्य दर्शन　　घ) इन में से कोई नहीं

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. .... यज्ञ में शक्ति प्रदर्शन के लिए रथ दौड़ का आयोजन होता था।
2. .... काल को आर्यों की प्रगति का काल कहा जाता था।
3. उत्तर वैदिक काल में राजा के कर एकत्रित करने वाले अधिकारी को .... कहा जाता था।
4. .... नदी ऋग्वैदिक काल की सबसे पवित्र नदी थी।

उचित मिलान करें :

1. अंतरिक्ष के देवता	क) इंद्र
2. गृहस्थ आश्रम	ख) प्राचीनतम ग्रन्थ
3. राजसूय यज्ञ	ग) जीविका अर्जित करना एवं बच्चों का पालन–पोषण
4. महिषी	घ) राजा के राज्याभिषेक से संबंधित
5. ऋग्वेद	ड.) मुख्य रानी

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाएं :

1. वैदिक काल में जीवन को चार भागों में विभाजित किया जाता है। ( )
2. वैदिक काल में सभा और समिति संस्थाएं राजाओं पर अंकुश रखती थी। ( )

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

3. संन्यास आश्रम में समाज हित के लिए प्रयास करना होता था। ( )
4. वैदिक काल में व्यक्तिगत भूमि को उर्वरा तथा शामलात भूमि को खिल्य कहते थे। ( )
5. उत्तर वैदिक काल में बाणों के नुकीले अग्रभाग कई बार विष से भी बुझे होते थे ( )

लघु प्रश्न :

1. विश्व का सबसे प्राचीन ग्रंथ कौन-सा है?
2. राजा और प्रजा के बीच में मध्यस्थता का कार्य कौन-कौन करते थे?
3. ऋग्वेद की रचना किसने और कहां की थी?
4. उत्तर वैदिक काल के प्रमुख राज्यों के नाम लिखो।
5. उत्तर वैदिक काल में शासन की कुशलता के लिए राजा द्वारा किन-किन अधिकारियों की नियुक्ति की जाती थी? उनके कार्यों का उल्लेख करें।

आइए विचार करें :

1. उत्तर वैदिक काल के सामाजिक जीवन पर एक नोट लिखें।
2. ऋग्वैदिक काल में पारिवारिक संरचना किस प्रकार की थी? वर्णन करें!
3. उत्तर वैदिक काल के आर्थिक जीवन का विश्लेषण करें।
4. ऋग्वेद काल की राजनीतिक व्यवस्था का विश्लेषण करें।
5. दर्शन की छह आस्तिक व्याख्याएं कौन-कौन सा है? इनके अनुसार संसार क्या है?

आओ करके देखें

1. नारी की वर्तमान स्थिति और ऋग्वेद काल की स्थिति का तुलनात्मक अध्ययन कीजिए।

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

3 रामायण व महाभारत काल

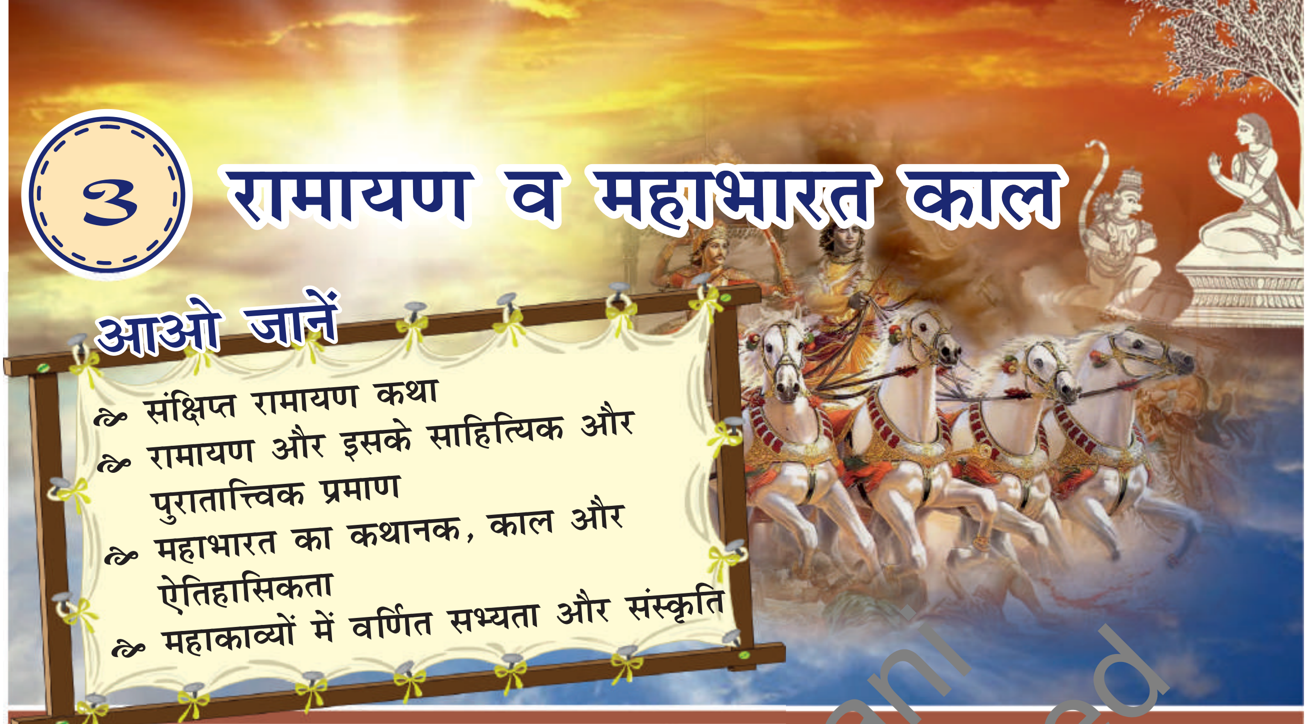

आओ जानें

- संक्षिप्त रामायण कथा
- रामायण और इसके साहित्यिक और पुरातात्त्विक प्रमाण
- महाभारत का कथानक, काल और ऐतिहासिकता
- महाकाव्यों में वर्णित सभ्यता और संस्कृति

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

रामायण और महाभारत दो ऐसे ग्रंथ हैं जिनके प्रति भारतीय जन-मानस में अगाध श्रद्धा का भाव पाया जाता है। ये दोनों ग्रंथ विश्व की उच्च कोटि की रचनाओं में शामिल हैं। इन दोनों ग्रंथों को महाकाव्य कहकर संबोधित किया जाता है। यद्यपि कई पश्चिमी व भारतीय विद्वान इन्हें कपोल कल्पना कहते हैं, लेकिन वर्तमान में बहुत से पुरातात्विक व अन्य वैज्ञानिक शोधों से इनकी ऐतिहासिकता प्रमाणित हुई है।

संक्षिप्त रामायण कथा

रामायण की रचना महर्षि बाल्मीकि ने की थी, इसलिए उन्हें दुनिया का आदिकवि माना जाता है। सूर्यवंशी राजा दशरथ कौशल राज्य पर शासन करते थे। इनकी राजधानी अयोध्या थी। उनकी तीन रानियां थी। कौशल्या, जिसके पुत्र श्रीराम थे, दूसरी सुमित्रा, जिसके पुत्रों के नाम लक्ष्मण और शत्रुघ्न थे। सबसे छोटी कैकेयी थी, जिसके पुत्र का नाम भरत था। श्रीराम सबसे बड़े और सर्वगुण सम्पन्न होने के कारण जनप्रिय थे। उस काल में राक्षस लोग जंगल में रहने वाले ऋषि-मुनियों को तंग करते थे और उनके यज्ञ-हवनों में बाधा डालते थे। ऋषि विश्वामित्र श्रीराम और लक्ष्मण अपनी सुरक्षा के लिए अपने साथ ले गए। उन्होंने उनकी देख-रेख में शिक्षा ग्रहण की और ऋषि-मुनियों को सुरक्षा प्रदान की। श्रीराम का विवाह राजा जनक की पुत्री सीता से हुआ। राजा दशरथ श्रीराम को अपना उत्तराधिकारी बनाना चाहते थे परन्तु भरत की माता कैकेयी ने राजा दशरथ से दो वर मांगे - भरत को राजगद्दी दी जाए तथा श्रीराम को 14 वर्षों के लिए वनवास के लिए भेजा जाए। राजा दशरथ के लिए यह स्वीकार करना मुश्किल था परन्तु श्रीराम ने इसे सहर्ष स्वीकार किया और उनके साथ उनकी धर्मपरायण पत्नी सीता तथा भाई लक्ष्मण भी चले गए। राजा दशरथ अपने ज्येष्ठ पुत्र श्रीराम के वियोग को सहन नहीं कर सके और इसी दु:ख में वे स्वर्ग सिधार गए।

चित्र 3.1

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.2

राजा दशरथ, रानियों एवं राजकुमारों सहित (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.3

श्रीराम द्वारा यज्ञ-हवनों की सुरक्षा (काल्पनिक चित्र)

ज्येष्ठ पुत्र : बड़ा पुत्र

चित्र 3.4

श्रीराम द्वारा ऋषि-मुनियों की सुरक्षा (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.5

श्रीराम का वन गमन (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.6

पुत्र वियोग में राजा दशरथ (काल्पनिक चित्र)

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

संक्षिप्त रामायण कथा

चित्र 3.7 **रावण द्वारा साधु वेष में सीता हरण** (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.8 **भरत द्वारा श्रीराम की पादुकाएं स्थापित कर राज्य संभालना** (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.9 **अशोक वाटिका** (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.10 **सेतु (पुल) निर्माण** (काल्पनिक चित्र)

चित्र 3.11 **रावण वध** (काल्पनिक चित्र)

कैकेयी के पुत्र भरत उन दिनों अपने नाना के घर गए थे। उन्हें बुलाने गए संदेश वाहक हरियाणा के कुरुक्षेत्र से गुजरे थे। अयोध्या लौटने पर जब उन्हें सारी घटना का पता चला तो उन्होंने अपनी माता की काफी आलोचना की और राजा बनने से भी मना कर दिया। वे अपने मंत्रियों सहित श्रीराम से मिलने गए और उनसे राज्य संभालने की प्रार्थना की। परन्तु श्रीराम ने मना किया और भरत ने भी राजगद्दी लेने से मना कर दिया। वापिस जाते समय भरत को श्रीराम ने अपनी पादुकाएं दी और भरत उन पादुकाओं को रखकर श्रीराम के नाम से राज्य करने लगे। वनवास काल के दौरान लंका नरेश रावण सीता को छल-कपट से उठाकर ले गया। श्रीराम ने सीता की तलाश शुरू की। इसी दौरान श्रीराम की हनुमान व सुग्रीव से भेंट हुई। हनुमान ने सीता को अशोक वाटिका में खोज निकाला। संधि के सभी प्रयास विफल होने पर श्रीराम ने किष्किन्धा के राजा सुग्रीव और उनकी सेना की सहायता से लंका जाने के लिए एक सेतु तैयार किया और रावण का वध करके विभीषण को लंका का राजा घोषित किया। तब वे रावण के 'पुष्पक' विमान में सीता और लक्ष्मण सहित अयोध्या लौट आए और अयोध्या वासियों ने उनका बड़ी धूमधाम से स्वागत किया। मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम ने जो नियम बनाए थे, वे आज भी आदर्शों के तौर पर माने जाते हैं। उन्होंने बाली को परास्त करके उस के भाई सुग्रीव को और लंका के शासक रावण को परास्त करके उसके भाई विभीषण को राज्य सौंपा था और किसी राज्य को नहीं हड़पा।

वाल्मीकि रामायण के प्रक्षेप अंश

वाल्मीकि रामायण के मूल रूप में चौबीस हजार श्लोक थे जिन्हें 500 सर्गों व 6 काण्डों में लिखा गया था जबकि अब उसमें पच्चीस हजार श्लोक, 658 सर्ग व 7 काण्ड हो चुके हैं। रामायण रावण वध तक ही लिखी गई थी और उत्तर काण्ड का उसमें कोई उल्लेख नहीं है।

ཅ पादुकाएँ : खड़ाऊ

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

मानचित्र 3.1 – राम का वन-गमन मार्ग अयोध्या से श्रीलंका तक

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

रामायण की ऐतिहासिकता के लिखित प्रमाण

- रामायण में वर्णित अनेक घटनाओं का उल्लेख महाभारत, पुराणों, रघुवंश आदि में मिलता हैं। ऋग्वेद में इक्ष्वाकु वंश का उल्लेख मिलता है।
- बौद्ध परंपरा में दशरथ जातक, अनामक जातक कथाएं मिलती हैं जो मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीराम से सम्बन्धित हैं।

जैन धार्मिक साहित्य :

- विमल सूरि द्वारा रचित पद्म चरित्र (प्राकृत)
- रविषेण आचार्य द्वारा रचित पद्म पुराण (संस्कृत)
- स्वयंभू कृत पद्मचरित्र (अपभ्रंश भाषा)
- श्रीराम चरित्र प्रमाण इत्यादि।

जैन परंपरा में श्रीराम का मूल नाम पद्म मानते हैं।

भारत की अन्य भाषाओं में भी रामकथा मिलती है।

हिन्दी में 11	मराठी में 8	बांग्ला में 25
तमिल में 12	तेलुगु में 5	उड़िया में 6

इनके अतिरिक्त भी अनेक विद्वानों और संतों ने अपनी-अपनी रचनाएं और व्याख्याएं दी हैं।

विदेशों में रामायण के विभिन्न रूप

- इण्डोनेशिया की ककविन रामायण
- खोतानी रामायणें
- जावा में सेरतराम
- तिब्बती रामायण
- इण्डोचाइना में रामकेर्ति

बर्मा व थाइलैण्ड में भी रामायण विभिन्न रूपों में मिलती है।

सबसे महत्वपूर्ण प्रमाण इण्डोनेशिया में माना गया। 1949 ई. में डच सरकार ने इण्डोनेशिया को जब आजादी दी तो उसमें न्यूगिनी द्वीप नहीं दिया तो इण्डोनेशिया के लोगों ने न्यूगिनी को लेकर आंदोलन किए और प्रमाण के लिए वाल्मीकि रामायण के किष्किन्धा काण्ड 40.30/31 को प्रस्तुत किया जिसके अनुसार सुग्रीव ने सीता की खोज में पूर्व दिशा में गए वानर दल को संबोधित करते हुए कहा- तुम यत्नशील होकर सात राज्यों से सुशोभित (जावा) स्वर्णदीप, रूप्यदीप में भी ढूंढने का प्रयास करना। यवद्वीप को लांघकर आगे जाने पर एक शिशिर नामक पर्वत मिलता है जिस पर देवता व दानव निवास करते हैं। वह पर्वत अपने उच्च शिखर से स्वर्ग लोक को स्पर्श करता है और यह शिशिर पर्वत न्यूगिनी में है। इस प्रमाण को सत्य मानकर डचों ने न्यूगिनी भी इण्डोनेशिया को दे दिया।

श्री लंका की संसद में विभीषण का राजतिलक दिखाया गया है। अशोक वाटिका को एक पर्यटक स्थल बनाया हुआ है।

थाईलैण्ड में राजा को आज भी राम कहा जाता है जबकि वे बौद्ध धर्म को मानने वाले हैं।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

रामायण की ऐतिहासिकता के पुरातात्विक प्रमाण

- भारत में भी रामायण में वर्णित अनेक स्थलों को पहचाना जा चुका है।
- रामायण से सम्बन्धित असंख्य मिट्टी की मूर्तियां उत्तर प्रदेश, बंगाल, बिहार, उड़ीसा, राजस्थान इत्यादि स्थानों से मिलती हैं। हरियाणा में भी जीन्द, सिरसा, हिसार, हाट, सुध, यमुनानगर इत्यादि स्थानों से अनेक मूर्तियां मिली हैं जिनमें रामायण की कथाओं को दिखाया गया है।

चित्र 3.12 राम सेतु का उपग्रह से लिया गया चित्र

चित्र 3.13

राम-सीता और जटायु नचारखेड़ा हिसार से प्राप्त मिट्टी की मूर्ति

चित्र 3.14 गुरुमुखी में राम लिखा चांदी का सिक्का

चित्र 3.15 अकबर द्वारा जारी सोने के सिक्के

- श्रीराम से सम्बन्धित अनेक त्योहार जैसे रामनवमी, रावण पर विजय का प्रतीक, विजयदशमी काफी उल्लास से मनाया जाता है। रामलीला सदियों से भारत के हर प्रदेश में दिखाई जाती है।
- नासा, अमरीकी एजेंसी ने यह सिद्ध कर दिया है कि भारत और लंका को जोड़ने वाला पुल मानव निर्मित है जिसे श्रीराम द्वारा निर्मित माना जाता है और उसका समय सात हजार ईसा पूर्व के लगभग है।

सामूहिक गतिविधि

विद्यार्थी समूह बनाकर रामायण के किसी प्रकरण को अभिनय के माध्यम से कक्षा अथवा स्कूल की प्रार्थना सभा में प्रस्तुत करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

महाभारत

महाभारत के रचयिता वेद व्यास हैं। आधुनिक महाभारत से पहले हमें इस महाकाव्य के अन्य रूप भी मिलते हैं। 'जय ग्रंथ' में कौरव और पांडवों के युद्ध का मूल कथानक है। इसके मूल में केवल आठ हजार आठ सौ श्लोक थे। जय ग्रंथ में भरत वंश के इतिहास का अंश जोड़ने पर यह 'भारत ग्रंथ' बना जिसकी वजह से इसमें श्लोकों की संख्या चौबीस हजार हो गई। भारत ग्रंथ में अनेक नीतिपरक अंश तथा आख्यानों को जोड़ने पर यह 'महाभारत' ग्रंथ बना। इसमें एक लाख के लगभग श्लोक हैं। इस प्रकार महाभारत का वर्तमान रूप अपने में अनेक शताब्दियों के विकास को संजोए हुए है।

चित्र 3.16 महर्षि वेदव्यास (काल्पनिक चित्र)

पुणे के भण्डारकर ओरिएंटल संस्था में रखा गया महाभारत का संस्करण सबसे ज्यादा प्रामाणिक माना जाता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

- महाभारत ग्रंथ के बारे में कहा जाता है कि इस ग्रंथ में जो कुछ है वह सभी स्थानों पर है परन्तु जो इसमें नहीं है वह कहीं भी नहीं है।
- इसे हिन्दू धर्म का विश्वकोश भी माना जाता है। इसे पंचम वेद भी कहा गया है।
- इसे धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, काम शास्त्र, नीति शास्त्र और मोक्ष शास्त्र भी माना जाता है।
- अध्ययन की दृष्टि से यह अनुपम ग्रंथ है। इसमें श्रीमद्भगवद्गीता, अनु गीता, पाराशर गीता, मोक्ष धर्म आदि महत्वपूर्ण अंश संकलित हैं।
- नीति और लोक शिक्षा से सम्बन्धित संजयनीति, विदुरनीति, भीष्मनीति आदि का समावेश है।
- शांति पर्व में राजधर्म, आपदधर्म और मोक्ष धर्म का भी वर्णन है।
- मूल कथानक कौरव और पांडवों के बीच युद्ध का है परन्तु इसके अतिरिक्त अनेक ऐतिहासिक कथाओं का भी उल्लेख मिलता है।

चित्र 3.17 श्रीमद्भगवद्गीता उपदेश (काल्पनिक चित्र)

महाभारत का काल

- पश्चिमी इतिहासकार इसका समय 900 ईसा पूर्व से 1500 ईसा पूर्व में रखते हैं परन्तु भारतीय इतिहासकारों ने अपनी गणनाओं से इसे काफी प्राचीन सिद्ध किया है।
- गुप्त कालीन गणितज्ञ वराहमिहिर ने अपनी गणनाओं के हिसाब से इसका समय 2449 ईसा पूर्व माना है।
- गुप्त कालीन गणितज्ञ आर्यभट्ट ने इसकी तिथि 18 फरवरी 3102 ईसा पूर्व मानी है।
- चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के 'ऐहोंल' शिलालेख से महाभारत की तिथि 3100 ईसा पूर्व निकलती है।
- पी.वी. होले ने ग्रह नक्षत्रों की गणना के अनुसार महाभारत की तिथि 13.11.3143 ईसा पूर्व मानी है।
- एन.एस. राजाराम, के. सदानन्द, सुभाष काक आदि इतिहासकारों ने इसका समय 3067 ईसा पूर्व माना है।
- उपर्युक्त वर्णन तथा आधुनिक पंचागों में लिखे हुए कलि सम्वत के हिसाब से भी महाभारत की तिथि 3100 ईसा पूर्व के लगभग बनती है।

महाभारत की ऐतिहासिकता

महाभारत में वर्णित स्थानों की पहचान लगभग हो चुकी है।

यह युद्ध कुरुक्षेत्र में हुआ था, जो आधुनिक कुरुक्षेत्र ही है क्योंकि इसकी दूरी सतलुज और यमुना के मध्य बताई गई है।

दिल्ली के पुराने किले में भी महाभारत से सम्बन्धित अवशेष मिले हैं।

गुजरात में अरब सागर में कृष्ण की द्वारका नगरी भी ढूंढी जा चुकी है।

बरनावा में लाक्षागृह के अवशेष मिले हैं।

सनोली की खुदाई से भी महाभारत की पुष्टि में सहायता मिलती है।

महाभारत के नायकों व अन्य स्थानों की पहचान पौराणिक व अन्य साहित्य से भी मिलती है। इस प्रकार महाभारत के बारे में संदेह नहीं रहता।

चित्र 3.18 अरब सागर में मिली द्वारका नगरी के अवशेष

चित्र 3.19 शुग (यमुनानगर) से प्राप्त विद्या ग्रहण करते हुए बालक की मूर्ति

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

महाकाव्यों में वर्णित सभ्यता और संस्कृति

महाकाव्यों में वर्णित सभ्यता को किसी काल विशेष में नहीं बांधा जा सकता क्योंकि इनके वर्तमान रूप कई बार बदले गए हैं; फिर भी हम उस काल का अनुमान लगा सकते हैं जब ये घटनाएं घटित हुई थी जो इस प्रकार हैं :

आर्यों का प्रसार : रामायण में आर्यो ने विंध्याचल पर्वत श्रृंखला को पार कर लिया था और महाभारत में तो दक्षिण के राजाओं ने युद्ध में भाग लिया था। महाभारत में भीष्म पर्व में विश्व और भारतवर्ष के भूगोल का वर्णन मिलता है।

राजा की उत्पत्ति : महाभारत के शांतिपर्व में लिखा है कि प्रारंभ में न राज्य था और न राजा, न दण्ड था और न ही दण्ड देने वाला। धर्म से ही एक दूसरे की रक्षा की जाती थी। परन्तु नैतिक पतन होने के बाद समाज में अराजकता की स्थिति पैदा हुई और राजा की आवश्यकता बनी। एक समझौता हुआ जिसमें प्रजा ने राजा को कर देना स्वीकार किया और राजा ने प्रजा की रक्षा का वचन दिया और इस प्रकार एक शक्तिशाली राज्य बनने की कल्पना की गई।

राजनीतिक चिंतन : रामायण में आदर्शवाद एवं उच्च नैतिक मापदण्डों की स्थापना का प्रयास है जबकि महाभारत में यथार्थ और जीवन की व्यवहारिकता पर ज्यादा जोर किया। महाभारत में भीष्म ने सामाजिक जीवन के निर्वाह के लिए राजधर्म की भूमिका पर जोर दिया। उनके अनुसार सब लोकों की परमगति राजधर्म है। राजधर्म सब धर्मों से श्रेष्ठ है यदि यह लुप्त हो जाता है तो सभी वर्ण और आश्रमों के धर्म समाप्त हो जाएंगे।

राज्य के सात अंग : राज्य के सात अभिन्न अंग माने जाते थे : राजा, अमात्य (मंत्री), जनपद, दुर्ग, कोष, दण्ड (सेना) और मित्र। राज्य सेना पर आश्रित होते थे। इनके बिना राज्य को अराजक माना जाता था। अतः एक राष्ट्र का शक्तिशाली होना बहुत जरूरी माना जाता था क्योंकि इनके बिना जीवन सम्पत्ति, परिवार, धर्म सुरक्षित नहीं रख सकते।

राजा के प्रमुख कर्तव्य

निरंकुश होते हुए भी राजा का प्रमुख कर्तव्य प्रजापालन और प्रजा की रक्षा करना होता था। राजा से अपेक्षा की जाती थी कि वह अपनी प्रजा से ऐसा ही व्यवहार करे जैसा घर में पिता पुत्रों के साथ करता है। शांति पर्व में लिखा है कि राजा दुर्बल पर अत्याचार न करे क्योंकि दुर्बल की हाय राजा को समाप्त कर देती है। धर्म का उल्लंघन करने वाले राजा की कठोर शब्दों में निन्दा की गई है। भीष्म ने रक्षा न करने वाले अत्याचारी राजा के विरुद्ध सक्रिय विद्रोह की भी अनुमति दी है।

जनमत : जनता का विचार

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

जनमत की शक्ति : राजा का पद वंशानुगत होता था। परन्तु उत्तराधिकार के मामले में कई बार जनमत की शक्ति का भी उल्लेख मिलता है। जैसे राजा प्रतीक ने अपने पुत्र देवापि को राजा बनाना चाहा, तो जनता ने विरोध करके उसे रुकवा दिया। रामायण तथा महाभारत से पता चलता है कि राज्य अभिषेक के समय समाज के सभी वर्गों को आमंत्रित किया जाता था।

नारी की स्थिति : महाकाव्य काल में स्त्रियों के मान सम्मान में कुछ कमी आ गई थी परन्तु फिर भी समाज में उनको सम्मान प्राप्त था। महाभारत के आदि पर्व में पत्नी को मनुष्य का आधा अंग माना गया है। वह सखी है, वह ही धर्म-अर्थ-काम की मूल है। महाभारत के अनेक स्त्री पात्रों का सम्भाषण उस युग की नारी की विद्वता और तेजस्विता का बोध कराता है। विवाह को भी एक पवित्र बंधन माना गया है। सामान्यत: नारी के लिए एक पति का ही विधान था। पतिव्रता स्त्रियों की बड़ी प्रशंसा की गई है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

सामाजिक जीवन :

- रामायण की भांति महाभारत में भी चारों वर्णों की उत्पत्ति ब्रह्म के विभिन्न अंगों से मानी गई है। ब्राह्मणों की श्रेष्ठता के अनेक प्रमाण मिलते हैं परन्तु अब क्षत्रियों की प्रधानता हो गई है। महाभारत में स्वाध्याय तप से रहित और वर्ण विरुद्ध कार्य करने वाले ब्राह्मण को शूद्र से अधिक निन्दनीय माना गया है। वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म के बदले कर्म बताया गया है। सर्पराज के प्रश्न के उत्तर में युधिष्ठिर कहते हैं – 'शूद्र के गुण यदि ब्राह्मणों में होंगे तो मैं उसे शूद्र कहूंगा और ब्राह्मण के गुण शूद्र में होंगे तो मैं उस शूद्र को ब्राह्मण कहूंगा।'
- अनुशासन पर्व 143/46, 47 में उमा-महेश्वर संवाद में कहा है कि जो सच्चरित्र, दयालु, अतिथि परायण, निरहंकार गृहस्थ है, वह नीच जाति में जन्म लेने पर भी द्विजत्व लाभ प्राप्त करता है और जो ब्राह्मण होकर भी चरित्रहीन, सर्वभक्षी और निन्दितकर्म वाला होता है, वह शूद्रत्व प्राप्त करता है। इन विचारों से शूद्रों के प्रति मानवीय एवं उदारता के रुख का पता चलता है। विदुर, काव्य और मतंग जैसे जन्मजात शूद्रों को अच्छे आचरण के कारण सम्मानपूर्ण स्थान प्राप्त था। उस काल की विदेशी जातियां, यवन, किरात, गन्धर, शबर, शक, तुषर, पल्हव, पुलिन्द, कम्बोज व अन्य जातियों को वर्ण व्यवस्था में शामिल किया गया।

आर्थिक जीवन :

- कृषि, शिल्प और वाणिज्य के अतिरिक्त धन कमाने का श्रेष्ठ साधन और कोई नहीं होता। महाभारत के सभा पर्व के अनुसार किसानों को संतुष्ट रखना, कृषि के लिए जलाशय खुदवाना, दरिद्र किसानों को बीज आदि का दान करना और राजकोष से कृषकों को अनुग्रह देना राजा के प्रमुख कर्तव्य थे।
- पशुपालन मुख्य व्यवसाय था और महाभारत में पशुओं की चिकित्सा विद्या का उल्लेख मिलता है।
- उस काल में शिल्प भी अधिक उन्नति पर था। शिल्पकार अलग-अलग श्रेणियों में संगठित थे और उनका अपना प्रधान होता था जैसे चांदी, सोना, लोहा, हाथी दांत, मणि मुक्ता, वास्तुशिल्प आदि।
- विदेशी व्यापारियों की आय-व्यय का ध्यान रखकर राज्य द्वारा कर लगाए जाते थे। जल और स्थल दोनों मार्गों से व्यापार होता था और व्यापारी अधिक लाभ कमाते थे।
- इस काल में व्यापार बढ़ने से अनेक नए नगरों की स्थापना हो गई थी जैसे हस्तिनापुर, मथुरा, इन्द्रप्रस्थ आदि। ये सभी नगर सड़कों और नहरों से जुड़े हुए थे और व्यापारिक केन्द्र बनते जा रहे थे।

धार्मिक जीवन :

- महाकाव्यों का उद्देश्य अधर्म पर धर्म की विजय स्थापित करना है। जहां धर्म है वहीं विजय है। रावण पर श्रीराम की विजय इस कथन को प्रमाणित करती है। महाभारत में भी कौरव वंश अधर्म के कारण नष्ट हुए। अत: धर्म की स्थापना ही महाकाव्यों का एक मूल वाक्य कहा जा सकता है।

- महाभारत में अनेक सम्प्रदायों का उल्लेख मिलता है। इस काल में भागवत एक महत्वपूर्ण सम्प्रदाय था जिसमें भगवान श्रीकृष्ण को विष्णु एवं नारायण का अवतार माना गया हैं। दूसरा सम्प्रदाय पाशुपत था जो शिव को सर्वोच्च देवता मानता था। सौर सम्प्रदाय में सूर्य देवता की भक्ति का उल्लेख मिलता है। शाक्त मत के अनुसार देवी की उपासना की जाती थी। ब्रह्मा, विष्णु, महेश (त्रिदेव) के विचारों का भी विकास मिलता है। महाभारत में अनेक ऐसे देवी-देवताओं का उल्लेख मिलता है।
- यज्ञ कर्मकाण्डों की प्रधानता इस काल में बढ़ रही थी परन्तु पशु हिंसा के स्थान पर तिल, जौ आदि पर जोर दिया गया। कई स्थलों पर अहिंसा को परम धर्म बताया गया है।
- इस काल में अंधविश्वास भी काफी बढ़ गए थे और लोग शत्रुओं को नष्ट करने और बीमारियों को दूर करने के लिए जादू टोने का आश्रय लेने लग गए थे। इस काल में सर्प पूजा भी प्रचलन में आ गई थी।

पाशुपत : शिव को सर्वोच्च मानने वाले

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप - आओ तुलना से सीखें

ग्रन्थ	रामायण	महाभारत
रचयिता	महर्षि वाल्मीकि	महर्षि वेदव्यास
भाषा	संस्कृत	संस्कृत
श्लोक संख्या	चौबीस हजार	लगभग एक लाख
भाग	छ: सर्ग	अठारह पर्व
प्रमुख विषय	नैतिकता, दर्शन, प्रशासन, राजनीति, मनोविज्ञान, भूगोल आदि।	नीतिशास्त्र, धर्मशास्त्र, अर्थशास्त्र, कामशास्त्र, मोक्ष शास्त्र

माइंड मैप - विद्यार्थी पुनरावृत्ति करते हुए स्वयं भरें

संक्षिप्त रामायण कथा 1

आदिकवि महर्षि वाल्मीकि

राजा दशरथ, रानियों एवं राजकुमारों सहित

श्रीराम द्वारा यज्ञ-हवनों की सुरक्षा

श्रीराम द्वारा ऋषि-मुनियों की सुरक्षा

श्रीराम का वन गमन

पुत्र वियोग में राजा दशरथ

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

संक्षिप्त रामायण कथा 2

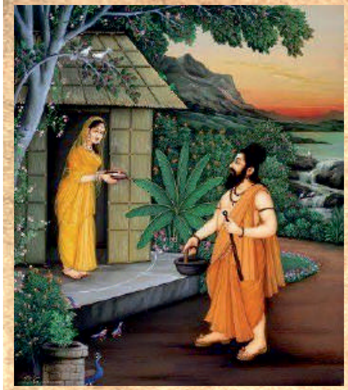

रावण द्वारा सीता हरण

अशोक वाटिका

सेतु (पुल) निर्माण

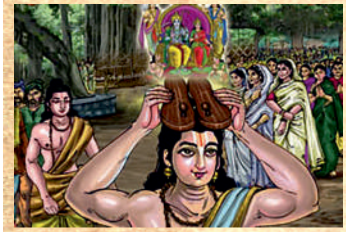

भरत द्वारा श्रीराम की पादुकाएं स्थापित कर राज्य संभालना

रावण वध

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. श्रीराम ने .... के राजा सुग्रीव और उनकी सेना की सहायता से लंका जाने के लिए सेतु तैयार किया।
   क) किष्किंधा ख) मगध ग) इंद्रप्रस्थ घ) अयोध्या
2. .... ग्रंथ में कौरव और पांडवों के युद्ध का मूल कथानक है।
   क) भारत ख) जय ग) अर्थशास्त्र घ) रामायण
3. महाभारत में श्लोकों की संख्या .... है।
   क) लगभग पांच हजार ख) लगभग एक लाख ग) दो लाख घ) चार लाख
4. महाभारत काल में वर्ण व्यवस्था का आधार जन्म के बदले .... को बताया गया है।
   क) जाति ख) धर्म ग) कर्म घ) व्यवहार
5. चालुक्य नरेश पुलकेशिन द्वितीय के .... शिलालेख से महाभारत की तिथि 3100 ईसा पूर्व निकलती है।
   क) टोपरा ख) ऐहोंल ग) येरागुडी घ) सांची

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. श्रीराम ने शस्त्र शिक्षा .... से प्राप्त की।
2. सुग्रीव ने .... से लड़ने में श्रीराम की सहायता की।
3. इंडोनेशिया में रामायण को .... कहते हैं।
4. महाभारत का युद्ध .... नामक स्थान पर हुआ।
5. महाभारत में राज्य के .... अंग माने जाते थे।

उचित मिलान करें :

1. वाल्मीकि	क) गीता
2. रावण	ख) हस्तिनापुर
3. धृतराष्ट्र	ग) लंका
4. कृष्ण	घ) महाभारत
5. व्यास	ग) रामायण

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाएं :

1. सुमित्रा के दो पुत्र लक्ष्मण और भरत थे। ( )
2. बरनावा में लाक्षागृह के अवशेष मिलते हैं। ( )
3. वाल्मीकि रामायण के मूल रूप में 24000 श्लोक थे जिन्हें 500 सर्गों व 6 कांडों में लिखा गया था। ( )
4. रामायण में आर्यों ने अरावली पर्वत को पार कर लिया था। ( )
5. महाभारत में पशुओं की चिकित्सा की विद्या का उल्लेख नहीं मिलता। ( )

लघु प्रश्न :

1. कैकेयी ने राजा दशरथ से कौन से दो वर मांगे थे?
2. अमेरिकी एजेंसी नासा ने रामसेतु के बारे में क्या कहा है?
3. महाभारत के शांति पर्व में राजा की उत्पत्ति के बारे में क्या बताया गया है?
4. रामायण से संबंधित मिट्टी की मूर्तियां कहां-कहां से प्राप्त हुई हैं?
5. मानचित्र देखकर रामायण संबंधित स्थलों की सूची बनाएं।

आइए विचार करें :

1. 'महाभारत का वर्तमान रूप अपने में अनेक शताब्दियों के विकास को संजोए हुए हैं' स्पष्ट करें।
2. रामायण काल के सामाजिक जीवन की व्याख्या करें।
3. महाभारत के समय आर्थिक जीवन की चार विशेषताएं बताइए।
4. महाभारत के अनुसार राजा के प्रमुख कर्तव्य क्या हैं?
5. महाकाव्य काल में राज्य पर जनमत का दबाव किस प्रकार था?

आओ करके देखें

1. कक्षा में रामायण और महाभारत पर आधारित प्रश्नोत्तरी आयोजित करें।
2. रामायण और महाभारत के प्रमुख चरित्रों का विश्लेषणात्मक अध्ययन करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

4 16 महाजनपद

आओ जानें

- जनपद एवं महाजनपद का उदय
- गणतंत्रीय शासन की परम्परा
- मगध का एक विशाल साम्राज्य के रूप में उदय
- मगध के प्रमुख राजवंश

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

जनपद एवं महाजनपद का उदय

भारत में ऋग्वैदिक युग में राज्य-निर्माण प्रक्रिया की शुरूआत हो गई थी। समाज की आरंभिक इकाई परिवार था। परिवार से ग्राम, ग्राम से जन, जन से जनपद तथा जनपद से महाजनपद का निर्माण हुआ। परिवार के लोग प्राय: एक ही पूर्वज की सन्तान होते थे। अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए एक साथ रहते थे।

एक ही पूर्वज से रिश्ता रखने वाले परिवारों के समूह को 'जन' कहा जाने लगा। जन के मुखिया को 'राजन' कहा जाने लगा। वह जन की सुरक्षा की जिम्मेदारी निभाता था। राजन की सहायता के लिए सेनानी, पुरोहित और ग्रामीणी आदि अधिकारी होते थे। राजन की सैन्य सहायता के लिए सेनानी होता था। पुरोहित राजन को धर्म के पालन की शिक्षा देता था। उस युग में गाय जन के लोगों की मुख्य सम्पत्ति होती थी। राजन का मुख्य कार्य जन के लोगों के गोधन की सुरक्षा करना भी होता था।

ग्रामीणी ग्राम का मुखिया होता था। एक जन के क्षेत्र में कई ग्राम शामिल होते थे। प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम होती थी। जन के क्षेत्र को धीरे-धीरे 'जनपद' कहा जाने लगा। एक जनपद में शुरुआत में एक ही जन के लोग रहते थे। आगे चलकर दूसरे जनों के लोग भी जनपद में आकर रहने लगे। समय के साथ इनके बीच सांस्कृतिक रिश्ते स्थापित हो गए। एक जनपद में नगर और ग्राम दोनों शामिल होते थे। जीवन में स्थिरता आने और जनसंख्या बढ़ने के साथ जनपदों का आकार भी बढ़ने लगा। छोटे जनपद बड़े-बड़े जनपदों में बदलने लगे। इनके क्षेत्रफल में भी बढ़ोतरी होने लगी। अब इन्हें महाजनपद कहा जाने लगा। इसी युग को भारत का महाजनपद काल कहा जाता है। वैदिक युग के जन अब 16 बड़े महाजनपदों में बदल गए। सभी महाजनपद गांधार (अफगानिस्तान) से लेकर पूर्व में बंगाल तक तथा उत्तर में हिमालय पर्वत से दक्षिण में दक्कन के पठार तक फैले हुए थे।

छठी शताब्दी ईसा पूर्व तक भारत में केन्द्रीय सत्ता के संगठन की कमी थी। सारा राष्ट्र अनेक छोटे-बड़े राज्यों में विभाजित था जिन्हे महाजनपद कहा जाता था। बौद्ध ग्रन्थ 'अंगुत्तर निकाय' व 'महावस्तु' तथा जैन ग्रन्थ 'भगवती सूत्र' में महाजनपदों की संख्या 16 दी गई है। सम्भवत: इनकी वास्तविक संख्या कहीं अधिक थी। इन महाजनपदों में से कुछ राजतन्त्रीय तथा कुछ गणतन्त्रीय प्रशासनिक ढांचा अपनाए हुए थे।

- **राजतन्त्र : किसी भी राज्य का शासन एक राजा व उसके वंश के उत्तराधिकारियों द्वारा चलाया जाता है।**
- **गणतन्त्र : किसी भी राज्य में शासन लोगों द्वारा चुने गए प्रतिनिधियों द्वारा चलाया जाता है।**

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

महाजनपद व्यवस्था के विकास की कहानी

हमें प्राचीन भारतीय राज्य-व्यवस्था के बारे में जानकारी वैदिक साहित्य से प्राप्त होती है। वेद व ब्राह्मण ग्रंथ भी भारतीय राज्य व्यवस्था की व्यापक जानकारी देते हैं। महाभारत और कौटिल्य का अर्थशास्त्र भी भारतीय राजनीतिक व्यवस्था की गहरी जानकारी प्रदान करते हैं। हमें जानकारी मिलती है कि भारत में सभा और समिति लोकतंत्र की प्राचीन संस्थाएं थीं। प्रसिद्ध इतिहासकार काशीप्रसाद जायसवाल का कथन है कि "सभा और समिति का जन्म ऋग्वैदिक युग में हुआ। सभा और समिति राजा की शक्ति पर अंकुश लगाने का कार्य करती थी। ये संस्थाएं भारत में लोकतंत्रीय मूल्यों के विकास को दिखाती हैं।" ऋग्वैदिक जनपद समय के साथ महाजनपदों में बदल गए। महाजनपद राजतंत्रीय एवं गणतंत्रीय व्यवस्था अपनाए हुए थे। राजतंत्रीय व्यवस्था में राजा का पद वंशानुगत होता था जबकि गणतंत्रीय व्यवस्था में राजा का चुनाव होता था। आगे चलकर महाजनपद काल में साम्राज्यवाद का दौर शुरू हो गया और इस दौर में मगध महाजनपद सबसे आगे निकल गया और मगध एक विशाल साम्राज्य के रूप में स्थापित हो गया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

कुरु इंद्रप्रस्थ	अवंति उज्जयिनी और महिष्मती	शूरसेन मथुरा	पांचाल अहिच्छत्र और कापिल्य

- अंग — चम्पा
- मगध — राजगृह, पाटलिपुत्र
- काशी — वाराणसी
- कौशल — श्रावस्ती
- वज्जि — वैशाली
- मल्ल — कुशीनगर और पावापुरी
- चेदि — शक्तिमती

मानचित्र 4.1 - सोलह महाजनपद

वत्स कौशांबी	मत्स्य विराटनगर	अश्मक पाटेली (पाटेन)	कंबोज हाटक या राजपुर	गांधार तक्षशिला

इन सोलह महाजनपदों में प्रत्येक महाजनपद एक-दूसरे से संघर्षरत था। शक्तिशाली महाजनपद अवसर मिलते ही कमजोर को हड़पने की कोशिश करते था और छोटे-छोटे जनपदों को अपनी स्वतन्त्रता बनाए रखने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ता था। समय के साथ-साथ गणतन्त्रीय शासन की अपेक्षा राजतन्त्र की प्रवृत्ति बढ़ रही थी।

उस समय गणराज्यों को भी आवश्यकतानुसार संघ-राज्यों का निर्माण करना पड़ा था। विभिन्न महाजनपद खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए विवाह संबंधों की मदद लेते थे। जैसे कौशल के राजा ने अपनी पुत्री महाकौशला का विवाह मगध के राजा बिम्बिसार से तथा प्रसेनजित ने अपनी पुत्री वजीरा का विवाह बिम्बिसार के पुत्र अजातशत्रु के साथ किया। उसने शाक्यों के साथ भी विवाह सम्बंध स्थापित किए। वत्स के राजा ने विदेह की राजकुमारी से विवाह किया। अतः विवाह संबंधों से राज्यों में मित्रता स्थापित हो जाती थी।

गतिविधि

शिक्षक 16 महाजनपदों के नाम की पर्चियां तैयार करेगा। उन पर्चियों को एक शीशे के मर्तबान में डालेगा। जार को हिलाने के बाद शिक्षक एक-एक करके छात्रों को बुलाएगा। छात्र एक चिट उठाएगा और पर्ची पर लिखे जनपद की राजधानी का नाम बताएगा।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

भारत में गणतंत्रीय शासन की परम्परा

महाजनपद युग में भारत में एक प्रकार की शासन पद्धति नहीं थी। कहीं राजतंत्रीय शासन प्रणाली थी तो कहीं गणतंत्रीय शासन प्रणाली थी। कहीं-कहीं दोनों प्रकार की शासन प्रणालियों का समन्वय था। गणतंत्रीय शासन प्रणाली में गण का मुखिया निर्वाचित शासक होता था। मल्ल व वज्जि गणतंत्रीय शासन प्रणाली पर आधारित थे। गणतंत्रीय शासन प्रणाली में जनों को समान अधिकार प्राप्त थे। सभी गणतंत्रीय राज्यों में समान शासन व्यवस्था नहीं थी। गणतंत्रीय शासन प्रणाली में नागरिकों की स्वतंत्रता व समानता को महत्व दिया जाता था। इस व्यवस्था में शासन और सत्ता के अधिकार किसी व्यक्ति विशेष के हाथों में न होकर गण अथवा विभिन्न व्यक्तियों के हाथों में होते थे। गणराज्य का सर्वोच्च अधिकारी नायक, प्रधान या राष्ट्रपति होता था। यह गण या संघ की सभा द्वारा सामान्यतः जीवन-काल के लिए निर्वाचित होता था। कभी-कभी गण के मुखिया वंशानुगत भी होते थे।

गणतन्त्रीय शासन प्रणाली में राजा एक प्रतिनिधि परिषद् की अध्यक्षता करता था और गणराज्यों का शासन एक सर्वोच्च परिषद् के हाथ में होता था। इस परिषद् में युवा और वृद्ध दोनों शामिल होते थे। इन सभाओं में वाद-विवाद होता था। इन राज्यों का लम्बे समय तक अस्तित्व बना रहा। लोग गणतंत्र की तुलना मे राजतन्त्रात्मक शासन प्रणाली को अच्छा मानने लगे थे। ऐसी परिस्थितियों में मगध के नेतृत्व में शक्तिशाली राजतंत्र का उदय हुआ।

मगध महाजनपद का एक विशाल साम्राज्य के रूप में उदय

- मगध के शासक बहुत योग्य व साहसी थे। बिम्बिसार, अजातशत्रु, उदयन, शिशुनाग एवं महापद्मनन्द जैसे शक्तिशाली शासकों ने मगध का दूर-दूर तक विस्तार किया।
- उन्होंने एक विशाल सेना तैयार की जिसमें पैदल, रथ, घुड़सवार और हाथी सम्मिलित थे।
- इस क्षेत्र में हाथी प्राकृतिक रूप से बहुतायत में थे। मगध राज्य के उदय में वहां की भौगोलिक स्थिति ने भी अहम योगदान दिया।
- यहां की नदियां गंगा, सोन तथा चम्पा कृषि तथा यातायात को सुदृढ़ आधार प्रदान कर रही थीं।
- मगध में लोहे की बड़ी-बड़ी खदानें थी।
- मगध क्षेत्र की भूमि काफी उपजाऊ थी और इस क्षेत्र में पानी भी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध था।
- नए नगरों के उदय एवं धातु के सिक्कों के प्रचलन ने भी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ किया। यहां साम्राज्य को व्यापारिक उत्पादनों पर चुंगी लगाकर खूब कर प्राप्त होता था।
- इस साम्राज्य का वातावरण अन्य राज्यों की अपेक्षा अधिक स्वतन्त्र था।

मगध के प्रमुख राजवंश

हर्यकवंश

1. **बिम्बिसार :** इस वंश का प्रथम शक्तिशाली शासक बिम्बिसार था जिसने 544 ईसा पूर्व से 492 ईसा पूर्व तक शासन किया। वह साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक था। बिम्बिसार ने अंग राज्य को विजित कर मगध का विस्तार शुरू किया। उन्होंने अपने पुत्र अजातशत्रु को अंग का शासक नियुक्त किया। मगध की आरम्भिक राजधानी गिरिव्रज (राजगृह) थी।

2. **अजातशत्रु :** अजातशत्रु 492 ई.पू. में अपने पिता बिम्बिसार के बाद मगध का शासक बना। वह इतिहास में कुणिक नाम से भी चर्चित है। अजातशत्रु ने दीर्घकालीन संघर्ष के उपरान्त काशी व वज्जि संघ को जीत कर मगध साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया। अजातशत्रु के शासन काल में राजगृह की सप्तपर्णी गुफा में प्रथम बौद्ध सभा (483 ई.पू.) का आयोजन हुआ। अजातशत्रु की 460 ई.पू. में उसके पुत्र उदयन द्वारा हत्या कर दी गई।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

3. उदयन : उदयन ने 460 ई.पू. से 445 ई.पू. तक शासन किया। उसने गंगा व सोन नदियों के संगम पर पाटलिपुत्र (कुसुमपुरा) नामक नगर की स्थापना की व उसे अपनी राजधानी बनाया। वे जैन धर्म के अनुयायी थे। वे अपने पूर्वजों की तरह राष्ट्रवादी शासक थे। हर्यकवंश का अन्तिम शासक नागदशक था, जिसे शिशुनाग नामक अमात्य (मंत्री) ने 412 ई.पू. में समाप्त कर मगध पर अपना प्रभुत्व स्थापित कर शिशुनाग वंश की स्थापना की।

चित्र 4.1 – 4.3 **मगध के प्रमुख शासकों के काल्पनिक चित्र**

बिम्बिसार **अजातशत्रु** **महापद्मनन्द**

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

शिशुनाग वंश (412 ई.पू. – 344 ई.पू.)

इस वंश के संस्थापक एवं शासक शिशुनाग ने अवन्ति तथा वत्स राज्यों को अपने अधिकार में लेकर मगध साम्राज्य का और विस्तार किया। शिशुनाग ने वज्जियों को नियन्त्रण में रखने हेतु पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया। शिशुनाग ने 394 ई.पू. तक शासन किया। उसके बाद उसके पुत्र कालाशोक (काकवर्ण) ने 366 ई.पू. तक शासन किया। उसके शासन काल में 383 ई. पू. वैशाली में दूसरी बौद्ध सभा का आयोजन हुआ। महानन्दिन (नन्दिवर्धन) शिशुनाग वंश का अन्तिम शासक था। उसने 344 ई.पू. तक शासन किया। महापद्मनन्द ने शिशुनाग वंश को उखाड़ फेंका और नए राजवंश की स्थापना की जो नंद वंश के नाम से जाना गया।

नंदवंश (344 ई.पू.-322 ई.पू.)

महापद्मनन्द इस वंश के संस्थापक थे । उसने विशाल सेना बनाई और इसके प्रभाव से इक्ष्वाकु, कुरु, शूरसेन, मथुरा, कलिंग आदि राज्यों पर विजय प्राप्त की। महापद्मनन्द ने साम्राज्य को स्थिरता प्रदान की। महापद्मनन्द की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र पण्डुक शासक बना लेकिन वह अयोग्य था। इनके बाद कई शासक थोड़े-थोड़े समय के लिए गद्दी पर बैठे और अन्त में इस वंश का अन्तिम शक्तिशाली शासक धनानन्द बना। यह सिकन्दर का समकालीन था। उसके पास 2 लाख पैदल, 20 हजार घुड़सवार, 2000 रथ और तीन हजार हाथियों की बहुत बड़ी सेना थी परन्तु वह प्रजा में अलोकप्रिय था। चन्द्रगुप्त मौर्य ने इस स्थिति का लाभ उठाया। उसने कौटिल्य की सहायता से 322 ई.पू. मगध पर आक्रमण कर दिया और धनानन्द को हराकर नंद वंश के साम्राज्य को समाप्त कर दिया तथा भारत में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप - विद्यार्थी पुनरावृत्ति करते हुए स्वयं भरें

महाजनपद काल में शासन व्यवस्था

1.

2.

मगध के प्रमुख राजवंश

1.
क)
ख)
ग)

2.

3.

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. मगध की आरम्भिक राजधानी .... थी।

   क) गिरिव्रज (राजगृह) ख) मथुरा ग) पाटलिपुत्र घ) कलिंग

2. नंदवंश का संस्थापक .... था।

   क) चंद्रगुप्त मोर्य ख) धनानंद ग) पण्डुक घ) महापद्मनन्द

3. बौद्ध ग्रंथ .... में 16 महाजनपदों की जानकारी दी गई है।

   क) भगवती सूत्र ख) आदि पुराण ग) अंगुत्तर निकाय घ) मूलाचार

4. अजातशत्रु को इतिहास में .... नाम से भी जाने जाते हैं।

   क) अशोक ख) पण्डुक ग) कुणिक घ) महापद्मनन्द

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. गणराज्य का सर्वोच्च अधिकारी नायक, ... या .... होता था।
2. हर्यक वंश का प्रथम शासक .... और अंतिम शासक .... था।
3. ....ने वज्जियों को नियंत्रण में रखने हेतु पाटलिपुत्र के अतिरिक्त वैशाली को अपनी दूसरी राजधानी बनाया।
4. चन्द्रगुप्त मौर्य ने नंदवंश के शासक .... को पराजित कर मौर्य वंश की स्थापना की।

उचित मिलान करें :

1. मगध	(क) विराटनगर
2. अवंति	(ख) पाटलिपुत्र
3. मत्स्य	(ग) कौशांबी
4. वत्स	(घ) तक्षशिला
5. गांधार	(ङ) उज्जयिनी

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाएं :

1. दूसरी बौद्ध सभा का आयोजन पांचाल में हुआ। ( )
2. राजतंत्रीय व्यवस्था में राजा का पद वंशानुगत होता है। ( )

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

3. उदयन ने पाटलिपुत्र नामक नगर की स्थापना की। ( )
4. महाजनपद युग में भारत में एक प्रकार की शासन पद्धति थी। ( )
5. गणतंत्रीय शासन-प्रणाली में गण का मुखिया निर्वाचित शासक होता था। ( )

लघु प्रश्न :

1. पहली बौद्ध सभा का आयोजन कहां और किसके शासन काल में हुआ?
2. कौटिल्य द्वारा रचित पुस्तक का क्या नाम है?
3. किन्हीं छः महाजनपदों के नामों की सूची बनाएं।
4. हर्यक वंश के प्रमुख शासकों के नाम लिखें।
5. नंदवंश के शासक धनानंद की सैन्य शक्ति का वर्णन करें।

आइए विचार करें :

1. मल्ल और वज्जि महाजनपद में कैसी शासन प्रणाली थी?
2. मगध अन्य महाजनपदों से शक्तिशाली था। तर्क सहित इस कथन की पुष्टि करें।
3. महाजनपद व्यवस्था के विकास में सभा और समितियों का क्या योगदान था?
4. महाजनपद काल में राजतंत्रीय एवं गणतंत्रीय व्यवस्था थी। इन दोनों व्यवस्थाओं में क्या अंतर होता है स्पष्ट करें।
5. महाजनपदों ने खुद को शक्तिशाली बनाने के लिए विवाह संबंधों का आश्रय लिया उदाहरण सहित स्पष्ट करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ करके देखें

1. आज के आधुनिक राज्य से महाजनपद युग की राजनीतिक व्यवस्था की तुलना करके अपने विचार प्रकट करें।
2. भारत की प्राचीन राजनीतिक संस्थाओं पर विचार कर उनकी आज की आधुनिक लोकतांत्रिक संस्थाओं से तुलना करें।

5 गौतम बुद्ध, महावीर और जगद्गुरु आदि शंकराचार्य का जीवन और शिक्षाएं

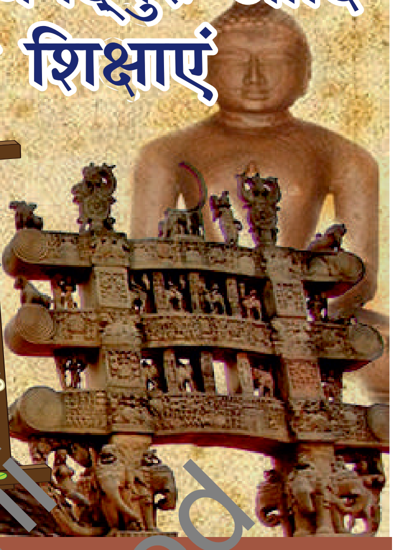

आओ जानें

- बौद्ध धर्म – गौतम बुद्ध, गृहत्याग, ज्ञान की प्राप्ति एवं शिक्षाएं
- जैन धर्म – महावीर स्वामी, गृहत्याग व ज्ञान प्राप्ति एवं शिक्षाएं
- आदि जगद्गुरु शंकराचार्य – जीवन परिचय एवं शिक्षाएं

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

छठी शताब्दी ई.पू. को भारत में सामाजिक बदलाव का काल कहा जाता है। उस समय के समाज में अनेक कुरीतियां आ गई थी। ऐसे समय में भारत में कई सम्प्रदायों का उदय हुआ। इन सम्प्रदायों में बौद्ध तथा जैन सर्वाधिक प्रसिद्ध थें।

गौतम बुद्ध

गौतम बुद्ध बौद्ध धर्म के संस्थापक थे। उनका बचपन का नाम सिद्धार्थ था। उनका जन्म 567 ई.पू. वैशाख पूर्णिमा के दिन लुम्बिनी, नेपाल में हुआ था। उनके पिता शुद्धोधन एक राजा थे। उनकी माता का नाम महामाया था। उनके जन्म के सात दिन बाद माता का निधन हो गया था। उनका पालन पोषण महामाया की छोटी बहन प्रजापति गौतमी ने किया। इसलिए सिद्धार्थ को गौतम भी कहा जाता है। जब गौतम बुद्ध का जन्म समारोह आयोजित किया गया, तब उस समय के प्रसिद्ध भविष्य दृष्टा आसित ने एक भविष्यवाणी की कि यह बच्चा या तो एक महान राजा बनेगा या एक महान पथ प्रदर्शक।

शिक्षा ग्रहण करने के बाद गौतम बुद्ध का विवाह मात्र 16 साल की आयु में राजकुमारी यशोधरा के साथ हुआ था। पिता द्वारा बनाए गए वैभवशाली महल में वे यशोधरा के साथ रहने लगे जहां उनके पुत्र राहुल का जन्म हुआ। परन्तु ये सब सिद्धार्थ को सांसारिक मोह–माया में बांध नहीं सके।

चित्र 5.1 गौतम बुद्ध की सारनाथ स्थित प्रतिमा

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

गृहत्याग

एक दिन नगर की ओर जाते हुए उन्हें चार अलग–अलग दृश्य दिखाई दिए।

- पहले दृश्य में उन्होंने एक वृद्ध पुरुष को देखा। सारथी से पूछने पर उन्हें बताया गया कि हर व्यक्ति वृद्ध होता है।
- दूसरे दृश्य में एक रोगी को देखने पर बताया गया कि बीमारियां भी होती रहती हैं।
- तीसरे दृश्य में एक शव यात्रा को देखने पर सारथी ने बताया कि प्रत्येक मनुष्य का मरण निश्चित है। इन दृश्यों को देखकर उन्हें लगा कि संसार में दु:खों के अतिरिक्त कुछ नहीं है।
- चौथे दृश्य में एक साधु को देखा जो मस्ती में गाता जा रहा था। सारथी ने उसके बारे में बताया कि यह संसार को छोड़कर ज्ञान प्राप्ति में लगा हुआ है।

उन्होंने 29 वर्ष की आयु में आधी रात के समय अपनी पत्नी व पुत्र सहित सभी सुखों को छोड़कर ज्ञान प्राप्ति के लिए घर त्याग कर वनों की ओर प्रस्थान किया।

नाम	सिद्धार्थ (गौतम बुद्ध)
जन्म	567 ईसा पूर्व लुम्बिनी (नेपाल)
पिता का नाम	शुद्धोदन
माता का नाम	महामाया
पालन-पोषण	मौसी प्रजापति गौतमी
सिद्धार्थ का विवाह	राजकुमारी यशोधरा
पुत्र का नाम	राहुल

ज्ञान की प्राप्ति

घर छोड़ने के बाद सिद्धार्थ राजगृह पहुंचे। वहां पर आचार्य अलार कलाम तथा उद्रक रामक दो विद्वानों से ज्ञान के सम्बन्ध में शिक्षा प्राप्त की, किन्तु उनके मन को सन्तुष्टि नहीं हुई। उसके बाद उन्होंने कठोर तपस्या करने का फैसला किया जिससे कि उनका शरीर काफी कमजोर हो गया। इस अनुभव ने उन्हें तपस्या को निरर्थक मानने पर मजबूर किया। इस समय सुजाता नामक कन्या से दूध ग्रहण कर तपस्या के मार्ग को छोड़ दिया। अब वे गया की ओर चल पड़े उस स्थान पर एक पीपल के पेड़ (महाबोधि वृक्ष) के नीचे ध्यान लगाया। 8 दिन की समाधि के पश्चात् 35 वर्ष की आयु में वैशाख मास की पूर्णिमा की रात्रि को उन्हें सच्चे ज्ञान की प्राप्ति हुई, इससे वे बौद्ध (ज्ञानी) अर्थात् 'बुद्ध' कहलाए। वह सर्वप्रथम बनारस के निकट सारनाथ पहुंचे तथा अपना पहला उपदेश अपने उन पांच साथियों को दिया जो गया में उनका साथ छोड़ गये थे। इस घटना को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा जाता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

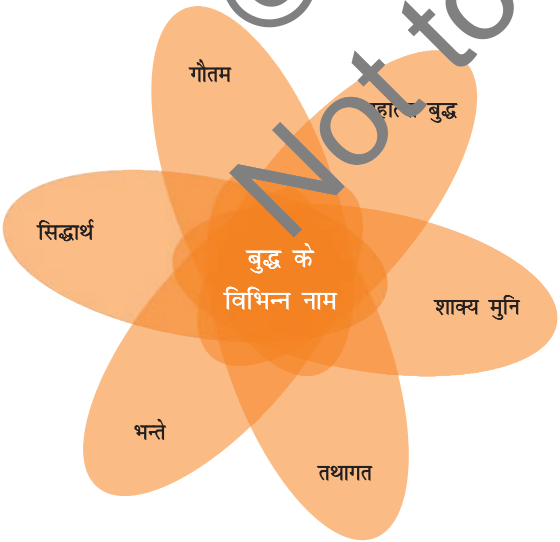

चित्र 5.2

महाबोधि वृक्ष बिहार राज्य के गया जिले में बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर में स्थित एक पीपल का वृक्ष है। इसी वृक्ष के नीचे भगवान बुद्ध को बोध (ज्ञान) प्राप्त हुआ था।

महात्मा बुद्ध की शिक्षाएं

चार आर्य सत्य

- संसार दुखों का घर है।
- सभी दु:खों का कारण इच्छाएं हैं।
- इच्छाओं एवं तृष्णाओं पर नियंत्रण करके ही दु:खों से बचा जा सकता है।
- सांसारिक दु:खों को दूर करने के अष्टमार्ग हैं। इन्हें अष्टमार्ग या मध्यम मार्ग कहा गया है।

अष्टमार्ग

अष्टमार्ग को मध्यमार्ग का नाम भी दिया जाता है। बौद्ध धर्म का आधार अष्टमार्ग है इस मार्ग पर चलकर मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान हो सकता है। अष्ट मार्ग में 8 आदर्श बातें हैं जिन पर चलने से निर्वाण (ज्ञान) की प्राप्ति हो सकती है।

- सम्यक कर्म : मनुष्य के कर्म शुद्ध होने चाहिये।
- सम्यक विचार : सभी मनुष्यों के विचार सत्य होने चाहिये। उन्हें सांसारिक बुराइयों तथा व्यर्थ के रीति-रिवाजों से दूर रहना चाहिये।
- सम्यक जीविका : कोई भी प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से हानिकारक व्यापार न करना।
- सम्यक प्रयास : अपने आप सुधरने की कोशिश करना।
- सम्यक स्मृति : स्पष्ट ज्ञान से देखने की मानसिक योग्यता पाने की कोशिश करना।
- सम्यक ध्यान : मनुष्य को अपना ध्यान पवित्र तथा सादा जीवन व्यतीत करने में लगाना चाहिये।
- सम्यक विश्वास : मनुष्य को यह सच्चा विश्वास होना चाहिये कि इच्छाओं का त्याग करने से दु:खों का अन्त हो सकता है।
- सम्यक समाधि : निर्वाण पाना।

कर्म सिद्धांत में विश्वास

बुद्ध कहते थे कि प्रत्येक व्यक्ति स्वयं अपने भाग्य का निर्माता है। जैसे वह कार्य करता है वैसा ही वह फल भोगता है।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

पुनर्जन्म	बुद्ध के अनुसार जब तक मनुष्य की तृष्णा तथा वासना समाप्त नहीं होती तब तक मनुष्य पुनः संसार में जन्म लेता है।
अहिंसा	महात्मा बुद्ध का विचार था कि मनुष्य को सभी जीवों अर्थात् मनुष्य पशु पक्षी तथा जीवजन्तु से प्रेम तथा सहानुभूति होनी चाहिये।
यज्ञ व बलि प्रथा में अविश्वास	महात्मा बुद्ध ने यज्ञ एवं बलि प्रथा को अंधविश्वास और ढोंग बताया था। उनका कथन था कि यज्ञों के साथ किसी व्यक्ति के कर्मों को नहीं बदला जा सकता।
वेदों व संस्कृत में अविश्वास	बुद्ध का मानना था कि धर्म ग्रंथों को केवल संस्कृत भाषा में पढ़ने से ही फल की प्राप्ति नहीं होती। उन्होंने अपना प्रचार लोक भाषा पाली में किया।
जाति प्रथा में अविश्वास	बुद्ध का मानना था कि अपने कर्मों के अनुसार मनुष्य छोटा या बड़ा हो सकता है न कि जन्म से।

उपरोक्त वर्णन के आधार पर कहा जा सकता है कि बौद्ध धर्म का उदय ऐसे अवसर पर हुआ जब समाज में अनेक बुराइयां आ गई थीं। लोग वैदिक धर्म की कठोरता से ऊब चुके थे और किसी सरल धर्म की खोज में थे। इसी उचित अवसर पर महात्मा बुद्ध ने अपनी सरल शिक्षाओं के द्वारा भारतीय समाज को राहत प्रदान की। महात्मा बुद्ध की सरल शिक्षाओं से प्रभावित होकर काफी संख्या में लोगों ने बौद्ध धर्म अपना लिया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप

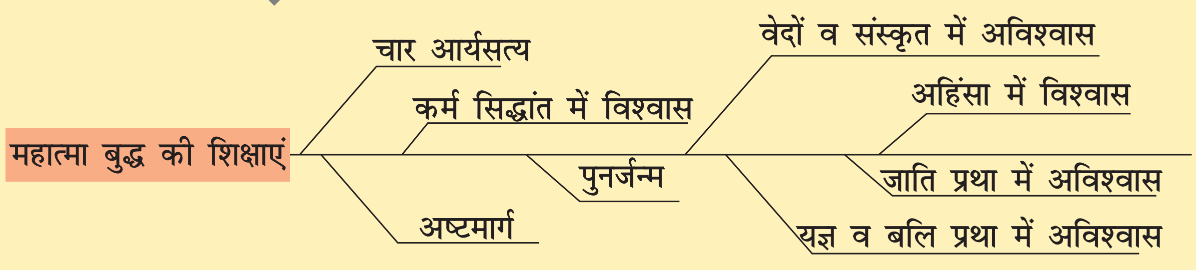

महावीर

जैन धर्म के संस्थापक महावीर स्वामी थे। महावीर स्वामी का मूल नाम वर्धमान था। भगवान महावीर का जन्म ईसा से 599 वर्ष पहले वैशाली (बिहार) गणतंत्र के कुण्डग्राम में हुआ था। जैन धर्म के अनुसार पहले तीर्थंकर ऋषभदेव थे तथा 23वें तीर्थंकर पार्श्वनाथ थे। महावीर स्वामी की माता का नाम त्रिशला था। पिता का नाम सिद्धार्थ था। पत्नी का नाम यशोदा था। पुत्री का नाम प्रियदर्शना था। वर्धमान बचपन से बहुत वीर थे।

- उन्होंने एक विशाल अजगर से अपने साथी के प्राण बचाये।
- पुनः पागल हाथी को अपने वश में करके अपने मित्रों की जान बचाई।

अतः वर्धमान का नाम महावीर पड़ गया।

चित्र 5.3 महावीर (काल्पनिक चित्र)

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

बचपन का नाम	वर्धमान
जन्म	599 ई.पू. वैशाली (बिहार) के कुण्डग्राम में हुआ।
पिता का नाम	सिद्धार्थ
माता का नाम	त्रिशला
पत्नी का नाम	यशोदा
पुत्री का नाम	प्रियदर्शना अथवा अनोजा

गृहत्याग व ज्ञान प्राप्ति

30 वर्ष की आयु में भाई नंदीवर्धन से आज्ञा लेकर घर त्याग दिया। तत्पश्चात् उन्होंने तप करते हुए शरीर को कई तरह के कष्ट दिए। 12 वर्ष की निरंतर तपस्या के बाद जृम्भिक ग्राम (बिहार) में ऋजुपालिका नदी के तट पर एक शाल वृक्ष के नीचे उन्हें ज्ञान प्राप्त हुआ।

प्रारंभ में वे कैवलिन (कैवल्य) नाम से जाने गए तत्पश्चात् अपनी इंद्रियों पर विजय के कारण वे जिन (विजेता) और बाद में जैन कहलाए।

महावीर की शिक्षाएं

महावीर स्वामी की शिक्षाएं प्राकृत भाषा में थी ताकि लोग उन्हें आसानी से समझ सकें। महावीर स्वामी के उपदेश समाज में फैली उन बुराइयों का विरोध कर रहे थे जिनके कारण समाज के विकास में बाधा आ रही थी। उनकी मुख्य शिक्षाएं इस प्रकार हैं :

त्रिरत्न : महावीर स्वामी के अनुसार अपने को पापों से बचाने के लिए तीन आदर्श बातों को जीवन में अपनाना चाहिए इन्हीं को त्रिरत्न कहा गया यह तीन रत्न थे –

- सच्ची श्रद्धा
- सच्चा ज्ञान
- सच्चा आचरण

पांच महाव्रत

महावीर स्वामी पांच महाव्रत पर बल देते थे तथा उनकी पालना करने को कहते थे ये महाव्रत हैं :

अहिंसा : अहिंसा प्रत्येक व्यक्ति का परम धर्म है किसी को भी मन से तथा तन से हिंसा नहीं करनी चाहिए।

चोरी न करना : मनुष्य को दूसरों की चीजें नहीं चुरानी चाहिए।

संग्रह न करना : व्यक्ति को आवश्यकता से अधिक धन आदि का संग्रहण नहीं करना चाहिए।

सत्य : महावीर स्वामी ने सदा सत्य बोलने पर बल दिया उन्होंने कहा ऐसी बातें न करो जिसमें कटुता हो।

ब्रह्मचर्य : मनुष्य को वासनाओं से दूर रहना चाहिए सच्चा ब्रह्मचारी वही है जो न तो विषय वासना के बारे में सोचता है और न ही इस बारे में बात करता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

व्रत और तपस्या

जैन धर्म में उपवास तथा तप पर बहुत अधिक बल दिया गया है जिससे बुरी प्रवृतियों का दमन होता है तथा मनुष्य कर्म के बंधनों से मुक्त हो जाता है।

ईश्वर में अविश्वास

महावीर स्वामी ईश्वर के अस्तित्व में विश्वास नहीं रखते थे। वह हिंदू धर्म के इस सिद्धांत को स्वीकार नहीं करते थे कि सृष्टि की रचना ईश्वर ने की है।

यज्ञ और बलि में अविश्वास

जैन धर्म में यज्ञ-बलि आदि का विरोध किया जाता है।

वेदों तथा संस्कृत की पवित्रता में अविश्वास

जैन धर्म के अनुसार वेद साधारण ग्रंथ है। उनके अनुसार वेदों तथा संस्कृत को पवित्र मानने की अवश्यकता नहीं है।

जाति प्रथा का विरोध

महावीर स्वामी जाति प्रथा में विश्वास नहीं रखते थे। उनका मानना था कि सभी जातियां समान हैं।

आत्मा के अस्तित्व में विश्वास

जैन धर्म आत्मा के अस्तित्व को स्वीकार करता है। उनके अनुसार आत्मा अमर है, आत्मा में ज्ञान है और यह सुख दु:ख का अनुभव करती है।

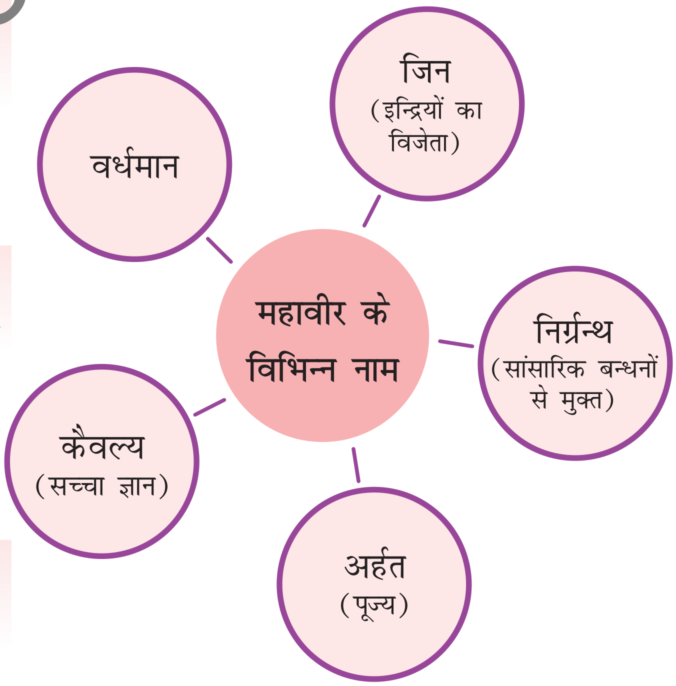

पुनर्जन्म

महावीर स्वामी पुनर्जन्म में विश्वास रखते थे। महावीर स्वामी के अनुसार कर्म तथा पुनर्जन्म साथ-साथ चलते हैं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

अठारह पाप

जैन धर्म में 18 प्रकार के पाप बताए गए हैं जो मनुष्य को पतन की आरे ले जाते हैं, यह 18 पाप हैं :

- हिंसा
- झूठ
- चोरी
- मैथुन
- परिग्रह
- क्रोध
- अहंकार
- माया
- लोभ
- राग
- द्वेष
- कलह दोषारोपण
- असंयम
- निंदा
- चुगलखोरी
- छल
- कपट
- मिथ्या दर्शन

मनुष्य को इन सब पापों से बचना चाहिए।

30 वर्ष लगातार प्रचार करने के बाद इनकी मृत्यु 527 ईसा पूर्व में राजगृह के पावा नामक स्थान पर हो गई। उस समय उनकी आयु 72 वर्ष की थी। उनकी मृत्यु के समय उनके अनुयायियों की संख्या हजारों में थी।

महावीर स्वामी जैन धर्म के 24वें तीर्थंकर थे। उन्होंने जैन धर्म को एक नई दिशा दी। उनके समय जैन धर्म बहुत लोकप्रिय हुआ। उनकी प्राकृत भाषा में दी गई सरल शिक्षाओं के कारण बड़ी संख्या में लोगों ने जैन धर्म को अपना लिया।

व्यक्तिगत गतिविधि

प्रत्येक छात्र महात्मा बुद्ध, महावीर, आदि शंकराचार्य अथवा किसी भी अन्य महापुरुष के जीवन से संबंधित एक प्रेरक प्रसंग अपनी पुस्तिका में लिखें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप

जैन धर्म की शिक्षाएं
- त्रिरत्न
- पांच महाव्रत
- ईश्वर में अविश्वास
  - वेदों तथा संस्कृत की पवित्रता में अविश्वास
  - यज्ञ और बलि में अविश्वास
  - जाति प्रथा का विरोध
  - पुनर्जन्म में विश्वास
  - आत्मा के अस्तित्व में विश्वास
- व्रत और तपस्या

आदि गुरु शंकराचार्य

चित्र 5.4 आदि गुरू शंकराचार्य (काल्पनिक चित्र)

आदि शंकराचार्य का जन्म उस काल में हुआ जब बौद्ध और जैन जैसे अनेक मत थे। इन सभी ने सनातन धर्म के मूल आधार आश्रम व्यवस्था, वर्ण व्यवस्था तथा पुरुषार्थों की आलोचना की। जिसके परिणामस्वरूप हिन्दू धर्म अवनति की तरफ अग्रसर हो रहा था।

जीवन परिचय

आदि शंकराचार्य का जन्म दक्षिण भारत के केरल राज्य के कालड़ी गांव में हुआ। इनके पिता का नाम शिवगुरु भट्ट और माता का नाम आर्यम्बा था। जब यह 3 वर्ष के थे तब इनके पिता का देहांत हो गया। यह बड़े ही मेधावी और प्रतिभाशाली थे। 6 वर्ष की अवस्था में ही यह प्रकांड पंडित हो गए थे और 8 वर्ष की अवस्था में इन्होंने संन्यास ग्रहण किया था।

माता ने उन्हें संन्यासी बनने की अनुमति नहीं दी थी, तब एक दिन नदी किनारे एक मगरमच्छ ने शंकराचार्य का पैर पकड़ लिया तब इस वक्त का फायदा उठाते हुए शंकराचार्य ने अपनी मां से कहा "मां मुझे संन्यास लेने की आज्ञा दो नहीं तो ये मगरमच्छ मुझे खा जाएगा।" इनकी माता ने इनको संन्यासी होने की आज्ञा दे दी, दूसरी ओर मगरमच्छ से भी इन्हें छुड़ा लिया। इस प्रकार यह 8 वर्ष की आयु में संन्यासी बन गए परन्तु माता ने इनसे आश्वासन लिया कि उनका अंतिम संस्कार यही करेंगे। उन्होंने इस आश्वासन को पूरा भी किया।

उन्होंने आरंभिक शिक्षा गुरु गोविंद भगवदपाद से ली जिनका आश्रम नर्मदा नदी के तट पर ओंकारेश्वर स्थल पर था। 3 वर्ष तक वहां रहकर इन्होंने ब्रह्मविद्या प्राप्त की। उनकी असाधारण प्रतिभा से इनके गुरु भी चकित थे और इन्हें शिव का अवतार मानते थे। गुरु की आज्ञा से इन्होंने ब्रह्मसूत्र की व्याख्या की और फिर काशी चले गए।

शिक्षाएं :

अद्वैत मत

शंकराचार्य से पहले भी अनेक वैदिक ऋषियों ने अद्वैतमत का सिद्धांत दिया है। इसमें जीव और ब्रह्म को एक ही माना गया है। इसे ही अद्वैतवाद कहा गया है। 'ब्रह्म सत्यं जगत मिथ्या' के अनुसार शरीर में व्याप्त आत्मा ही सत्य है जो भूत, वर्तमान एवं भविष्य में भी रही है।

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

भक्ति मार्ग

शंकराचार्य ने भक्ति का भी खूब प्रचार किया। उनका मानना था कि प्रेम और साधना से ईश्वर को प्राप्त किया जा सकता है और सच्चा ज्ञान तो प्रेम है। उन्होंने कहा भज गोविंदम भज गोविंदम भज गोविंदम मूढ़ मते अर्थात भगवान का नाम भजो।

कर्म मार्ग

इनका कर्म में अटूट विश्वास था। अपनी बाल्यावस्था में ही संन्यास लेने के उपरान्त एक गृहस्थ की भांति अपनी माता का विधिवत अंतिम संस्कार किया।

संप्रदायों में एकता

उन्होंने हिंदू धर्म की सभी विचारधाराओं को एक करके 5 भागों में विभाजित किया जिनमें वैष्णव, शैव, सूर्य, शाक्त और गणपति संप्रदाय शामिल थे। उन्होंने इसे पंचदेव उपासना का नाम दिया उन्होंने योग की दृष्टि से इन पांच देवताओं का संबंध पंच भूतों अग्नि, पृथ्वी, वायु, जल, आकाश से जोड़ दिया। विभिन्न संप्रदायों में विभाजित भारतीय जनता को एकता के सूत्र में बांध दिया।

योग साधना

उन्होंने योग साधना का भी काफी प्रचार किया जिसका प्रभाव गोरखनाथ, कबीर एवं नानक आदि संतों पर दिखाई देता है।

संन्यासियों का एकीकरण

आचार्य जी ने भारत में विभिन्न साधु संतों को भी 10 भागों में बांट दिया। जिनमें गिरि, पुरी, अरण्य, भारती, वन, पर्वत, सागर, तीर्थ, आश्रम और सरस्वती थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

चार मठों की स्थापना

भारत के चारों कोनों में एक प्रकार के धर्म दुर्ग स्थापित किए थे जो इस प्रकार हैं :

- उत्तर भारत के बद्रीनाथ, केदारनाथ में स्थित ज्योतिर्मठ। (उत्तराखंड)
- दक्षिण भारत के कर्नाटक में स्थित श्रृंगेरी मठ।
- पूर्वी भारत के जगन्नाथपुरी में स्थित गोवर्धन मठ। (उड़ीसा)
- पश्चिम भारत के द्वारका में स्थित शारदा मठ। (गुजरात)

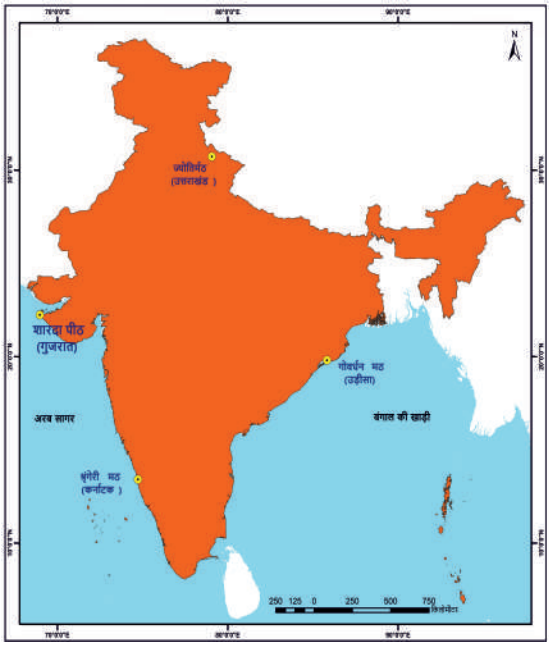

मानचित्र 5.1 चार मठ

सामूहिक गतिविधि

कक्षा को तीन समूहों में विभाजित करें और प्रत्येक समूह को महात्मा बुद्ध, महावीर जैन और आदि शंकराचार्य में से एक को चुनने के लिए कहें और चुने गए महापुरुष की जीवनी को नाटक के रूप में प्रस्तुत करें।

माइंड मैप

आदि गुरु शंकराचार्य की शिक्षाएं

- अद्वैत मत
- संप्रदायों में एकता
- भक्ति मार्ग
- कर्म मार्ग
- संन्यासियों का एकीकरण
- योग साधना
- चार मठों की स्थापना

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. महात्मा बुद्ध ने अपना पहला उपदेश किस स्थान पर दिया?
   क) गया ख) सारनाथ ग) कुण्ड्ग्राम घ) कपिलवस्तु

2. महावीर स्वामी का जन्म किस प्रान्त में हुआ था?
   क) उत्तर प्रदेश ख) उड़ीसा ग) असम घ) बिहार

3. महावीर स्वामी की माता का क्या नाम था?
   क) महामाया ख) प्रियादर्शनी ग) त्रिशला घ) गौतमी

4. शंकराचार्य ने साधु संतों को कितने भागों में बांटा था।
   क) 8 ख) 10 ग) 12 घ) 14

5. कितने वर्ष की आयु में शंकराचार्य ने संन्यास ग्रहण किया?

क) 6 ख) 8 ग) 9 घ) 10

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. महात्मा बुद्ध के बचपन का नाम .... था।
2. महात्मा बुद्ध के पुत्र का नाम .... था।
3. महावीर स्वामी का जन्म .... स्थान हुआ।
4. जैन धर्म के वास्तविक संस्थापक .... थे।
5. शंकराचार्य ने पश्चिम भारत में ....मठ की स्थापना की।

उचित मिलान करो :

1. 23 वें तीर्थंकर	क) ज्ञान प्राप्त होना
2. बोधगया	ख) प्रथम उपदेश
3. सारनाथ	ग) पार्श्वनाथ
4. प्रथम तीर्थंकर	घ) विजेता
5. जिन	ङ) ऋषभदेव

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाओ :

1. महात्मा बुद्ध ने 20 वर्ष की आयु में गृहत्याग किया। ( )
2. अशोक वृक्ष के नीचे महात्मा बुद्ध को ज्ञान प्राप्त हुआ। ( )
3. महावीर स्वामी के बड़े भाई का नाम नंदीवर्धन था। ( )
4. शंकराचार्य की माता का नाम सुभद्रा था। ( )
5. आदि शंकराचार्य का जन्म हरियाणा में हुआ। ( )

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

लघु प्रश्न :

1. सिद्धार्थ घर छोड़ने के बाद कहां पहुंचे एवं किनसे शिक्षा प्राप्त की?
2. किस घटना को धर्मचक्र प्रवर्तन कहा गया है?
3. आदि शंकराचार्य द्वारा रचित प्रमुख साहित्य कौन-सा है?
4. अद्वैतमत से क्या अभिप्राय है?
5. महावीर स्वामी को ज्ञान की प्राप्ति कब और कहां हुई?

आइए विचार करें :

1. सिद्धार्थ द्वारा देखें गए उन दृश्यों का वर्णन करें जिनसे प्रभावित होकर उन्होंने गृहत्याग करने की प्रेरणा ली।
2. चार आर्य सत्य क्या हैं?
3. महात्मा बुद्ध और महावीर स्वामी के जीवन में क्या समानताएं हैं?
4. महावीर स्वामी के द्वारा बताए गए पांच महाव्रत कौन से हैं?
5. आदि शंकराचार्य ने संन्यासी बनने की आज्ञा अपनी माता से कैसे ली?

आओ करके देखें

1. एक छात्र होने के नाते महात्मा बुद्ध, आदि शंकराचार्य और महावीर स्वामी की किन शिक्षाओं को आप अपनाना चाहोगे?
2. भारत के मानचित्र पर पाठ में आए विभिन्न स्थानों को दर्शाएं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

6 मौर्य साम्राज्य

आओ जानें

- मौर्य इतिहास के स्त्रोत/साधन (कौटिल्य का अर्थशास्त्र)
- चन्द्रगुप्त मौर्य
- अशोक महान
- मौर्य-युगीन संस्कृति

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

साम्राज्य एक बहुत ही विशाल क्षेत्र होता है, जहां सम्राट के पास समस्त अधिकार होते हैं। यह सम्पूर्ण क्षेत्र एक ही राजनीतिक इकाई का अंग होता है। यह किसी एक राजा अथवा उसके अधीन कुछ मुख्य अधिपतियों द्वारा साझेदारी में संभाला जाता है। इसका उद्देश्य सम्पूर्ण क्षेत्र को एक ही प्रशासनिक ढांचे के अन्तर्गत रखना होता है। साम्राज्य छोटे समय के अन्तराल में भी हो सकता है। परन्तु सामान्यत: वह पीढ़ी दर पीढ़ी कई सदियों तक चलता है।

चित्र 6.1 सारनाथ स्तम्भ का शीर्ष

भारत का राष्ट्रीय चिह्न अशोक स्तंभ है। यह सम्राट अशोक के सारनाथ के स्तंभ लेख से लिया गया है। इसके फलक पर चार सिंह चारों दिशाओं की ओर मुंह किये हुए दृढ़तापूर्वक बैठे हैं। इनसे सम्राट अशोक के चारों दिशाओं में राज्य तथा धर्म प्रचार की सूचना मिलती है। अशोक मौर्य साम्राज्य का एक महत्वपूर्ण शासक था। इस साम्राज्य की स्थापना चन्द्रगुप्त मौर्य ने की थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

मौर्य इतिहास के स्रोत

- **साहित्यिक**
  - **देशी**
    - कौटिल्य का अर्थशास्त्र
    - विशाखदत का मुद्राराक्षस
    - सोमदेवकृत कथासरितसागर
    - क्षेमेन्द्र की वृहत्कथामंजरी
    - पुराण
  - **विदेशी**
    - मेगस्थनीज की इण्डिका
  - **अन्य**
    - बौद्ध ग्रंथ- दीपवंश, महावंश, दिव्यावदान
    - जैन ग्रंथ- भद्रबाहु का कल्पसूत्र तथा हेमचन्द्र का परिशिष्टपर्व
- **पुरातात्त्विक**
  - अशोक के अभिलेख
  - रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख

भारत का सबसे बडा साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य भारत का सबसे बड़ा एवं शक्तिशाली साम्राज्य था। चन्द्रगुप्त ने लगभग 322 ई.पू. में मौर्य साम्राज्य की स्थापना की। इस साम्राज्य का अस्तित्व मौर्य वंश के कई योग्य उत्तराधिकारियों के बल पर लगभग 184 ई.पू. तक बना रहा।

ई.पू. : ईसा मसीह के जन्म अर्थात् 1 ई. से पूर्व का समय

कौटिल्य और उसका अर्थशास्त्र

मौर्य काल के साहित्यिक स्रोतों में कौटिल्य का अर्थशास्त्र सबसे महत्वपूर्ण है।

- चन्द्रगुप्त मौर्य के जीवन निर्माण में कौटिल्य का महत्वपूर्ण योगदान रहा है।
- वह इतिहास में विष्णुगुप्त, चाणक्य तथा कौटिल्य के नाम से जाना जाता है।
- वह तक्षशिला में पैदा हुआ।
- यहीं उसने शिक्षा ग्रहण की और इसी शिक्षा केन्द्र का प्रमुख आचार्य बना।
- एक बार नन्दराजा ने अपनी यज्ञशाला में उसे अपमानित किया था। इस कारण क्रोध में आकर उसने नन्द वंश को समूल नष्ट कर डालने की प्रतिज्ञा कर डाली।
- कौटिल्य ने अर्थशास्त्र नामक ग्रंथ की रचना की।

चित्र 6.2 कौटिल्य का काल्पनिक चित्र

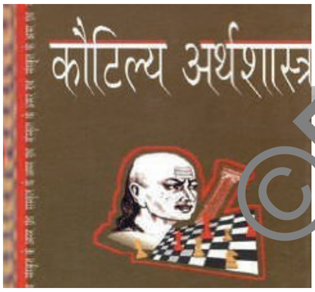

चित्र 6.3 कौटिल्य की पुस्तक अर्थशास्त्र

राजनीति पर आधारित यह पुस्तक मूल रूप से संस्कृत भाषा में लिखी गई है।

पुरुषार्थ के अन्य तीनों अंग अर्थ पर ही आश्रित माने गये हैं।

अर्थ की व्याख्या जीवन निर्वाह के साधन के रूप में की गयी है। इसका स्रोत सम्पूर्ण धरती और उस पर निवास करने वाले लोग बताये गये हैं।

अर्थशास्त्र धरती को अर्जित करने तथा उसे सुरक्षित रखने के साधनों की विवेचना करता है।

इस परिभाषा के अंतर्गत अर्थशास्त्र राज्य का विज्ञान है। यह विज्ञान अर्थ अर्थात् जीविकोपार्जन के साधनों पर राज्य के नियंत्रण के सिद्धांत की बात करता है।

सम्पूर्ण अर्थशास्त्र 15 अधिकरण अर्थात् भागों एवं 180 प्रकरणों में विभक्त है। इसमें 6000 श्लोक हैं।

पुस्तक की पाण्डुलिपि की एक प्रति तंजौर के एक पण्डित ने सन् 1905 में पुस्तकालयाध्यक्ष आर. शामशास्त्री को भेंट की थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

अर्थशास्त्र में निहित विषय

अर्थशास्त्र के संपूर्ण अध्ययन में एक शक्तिशाली राज्य के महत्व को दर्शाया गया है। किसी भी योग्य शासक के लिये यह ग्रंथ एक पथ प्रदर्शक का कार्य करता है। कौटिल्य के अनुसार :

- राजा को शक्तिशाली एवं स्वेच्छा से कार्य करने वाला होना चाहिये।
- राजा को प्रजा के हित में अपना हित समझना चाहिये। राजा को काम, क्रोध, लोभ, अहंकार, उद्दण्डता और विलास से बचना चाहिये।
- राजा को अपने मंत्रियों का चुनाव उनकी विद्वता के आधार पर करना चाहिये। अपने सारे कार्य राजा को इनसे छिपकर करने चाहिये।
- अपने मंत्रियों की कार्यप्रणाली को गुप्तचरों द्वारा जांचते रहना चाहिये। इसलिए राजा को अपने राज्य के हर क्षेत्र में गुप्तचर नियुक्त करने चाहिए। अन्य देशों में भी गुप्तचरों को नियुक्त करने की सलाह कौटिल्य ने दी है।
- कौटिल्य के अनुसार राज्य की स्थिरता आन्तरिक शांति पर निर्भर करती है।
- यदि प्रजा के पास खाने-पीने की वस्तुओं का अभाव हो तो जनता निश्चित तौर पर विद्रोह करती है। अत: राजा को प्रजाहित के कार्य करते रहना चाहिए।
- विदेश नीति के बारे में कौटिल्य का मत आक्रामक प्रकार का है। उनका कहना है कि दुश्मन का दुश्मन आपका मित्र होगा। इसी तरह से दुश्मन का मित्र आपका दुश्मन होगा। इस नीति के अन्तर्गत कौटिल्य शक्ति संतुलन के सिद्धान्त को स्पष्ट करते हैं।
- इस प्रकार शासन-प्रणाली के सभी सिद्धान्तों को अर्थशास्त्र में देखा जा सकता है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

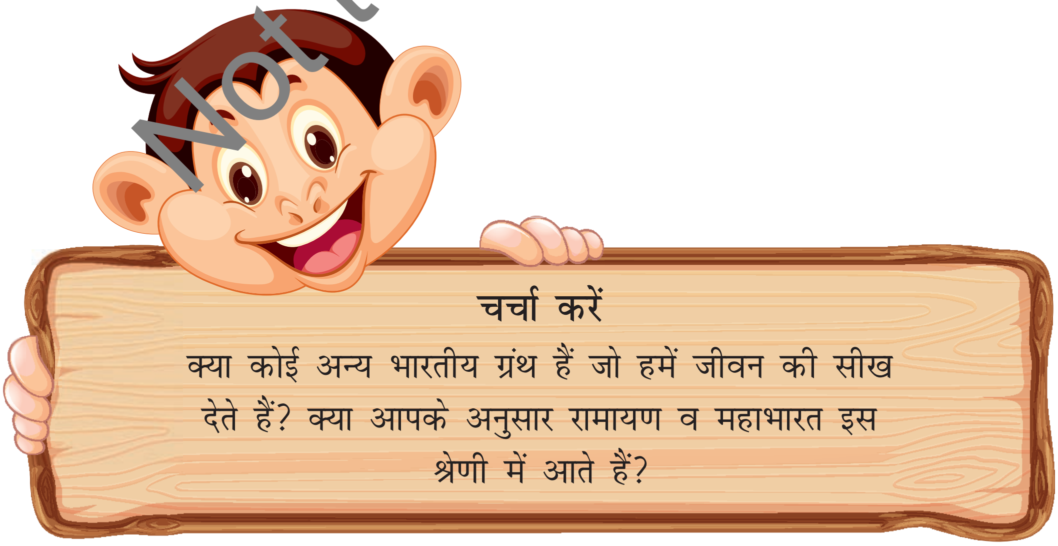

चन्द्रगुप्त मौर्य- प्रारंभिक जीवन एवं विजयाभियान

प्रारंभिक जीवन

चित्र 6.4 बालक चन्द्रगुप्त मौर्य की भारतीय संसद भवन में लगी प्रतिमा

चन्द्रगुप्त के जन्म के विषय में विद्वानों के अनेक मत है परन्तु सभी इस मत से सहमत है कि उसका बचपन कठिनाई में बीता था। बाल्यकाल में वह बालकों की मण्डली का राजा बनकर उनके झगड़ों के फैसले करता था। एक दिन जब वह इस 'राजकीलम' नामक खेल में व्यस्त था तभी चाणक्य वहां से गुजर रहे थे। अपनी सूक्ष्म दृष्टि से चाणक्य ने इस बालक के भावी गुणों का अनुमान लगा लिया। वह उसे तक्षशिला ले गया। वहां उसे अपने उद्देश्य के अनुकूल उचित शिक्षा दी गयी।

राजकीलम : एक प्रकार का खेल। इस खेल में चन्द्रगुप्त बालकों की मंडली का राजा बनकर उनके आपसी झगड़ों का फैसला करता था।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

पहले यह जानें

326 ई.पू. में यूनानी आक्रांता सिकंदर ने भारत की पश्चिमोत्तर सीमा पर आक्रमण किया। भारत में इस समय नन्द शासक धनानन्द का शासन था। आन्तरिक अशांति के साथ-साथ देश की सीमाएं भी असुरक्षित थी। अतः सिकंदर को भारतीय सीमा पर किसी खास प्रतिरोध का सामना नहीं करना पड़ा।

वह आगे बढ़ता हुआ सिंधु नदी पार करके भारत की मुख्य भूमि में प्रवेश कर गया। इससे आगे झेलम तथा चिनाब नदी के मध्यवर्ती प्रदेश का शासक पोरस था। पोरस बहुत ही स्वाभिमानी तथा मातृभूमि भक्त शासक था। सिकंदर ने उससे आत्मसमर्पण करने की मांग की। स्वाभिमानी पोरस महान ने कहला भेजा कि वह उसके दर्शन रणक्षेत्र में ही करेगा। यह सिकंदर के लिये खुली चुनौती थी। दोनों पक्ष की सेनाएं झेलम नदी के दोनों किनारों पर आ डटी।

भीषण वर्षा के बीच धोखे से सिकंदर की सेना ने आक्रमण कर दिया। जमीन दलदली हो जाने के कारण विशाल रथ मिट्टी में धंसने लगे। अतः पोरस की सेना का मुख्य भाग कोई खास भूमिका नहीं निभा पाया। लेकिन युद्ध का मंजर इतना भयानक था कि सिकंदर की सेना को सबक मिल चुका था। इसी कारण सिकंदर के बहुत समझाने के बाद भी उसके सैनिक भारत में आगे बढ़ने के लिए तैयार नहीं हुए। परिणामस्वरूप विश्व विजय का अधूरा सपना लेकर सिकंदर को 325 ई.पू. में वापस अपने देश लौटना पड़ा।

चन्द्रगुप्त मौर्य का विजयाभियान

चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रथम आक्रमण मगध पर किया। यह प्रयास असफल रहा। कहा जाता है कि मगध अभियान में असफल होने के बाद चंद्रगुप्त मौर्य और उसके प्रधानमंत्री कौटिल्य को एक गांव में ठहरने का मौका मिला। वहां उन्होंने देखा कि एक बुढ़िया अपने बच्चे को थाली के बीच से खिचड़ी उठाने से डांट रही थी। बुढ़िया ने बच्चे से कहा कि बीच का हिस्सा किनारों से कहीं अधिक गर्म होता है। इससे उन्हें एक सबक मिला। अब उन्होंने मगध साम्राज्य के बीच की अपेक्षा बाहरी क्षेत्रों पर आक्रमण शुरु किया।

पंजाब एवं सिंध विजय

325 ई.पू. में सिकंदर के भारत से जाने के साथ ही सिंध तथा पंजाब में विद्रोह उठ खड़े हुए। वहां अनेक यूनानी क्षत्रिय मौत के घाट उत्तार दिये गये। 325 ई.पू. के अन्त में इस क्षेत्र के प्रमुख क्षत्रप फिलिप द्वितीय की भी हत्या कर दी गयी। इससे पंजाब व सिंध में सिकंदर द्वारा स्थापित प्रशासनिक ढांचा भी ढहने लगा। यूनानी इतिहासकार जस्टिन इन सब घटनाओं में चंद्रगुप्त का हाथ बताता है। इन घटनाओं के बाद चन्द्रगुप्त ने एक सेना एकत्र कर स्वयं को राजा बनाया। अब उसने सिकंदर के बचे हुए क्षत्रपों के विरुद्ध राष्ट्रीय युद्ध छेड़ दिया। अंतिम मेसीडोनियन क्षत्रप यूडेमस ने 317 ई.पू. में बिना लड़े भारत छोड़ दिया। अब चन्द्रगुप्त सिंध व पंजाब का एकछत्र शासक था।

क्षत्रप : राज्यपाल

नंदों का उन्मूलन

सिंध तथा पंजाब के बाद चन्द्रगुप्त तथा चाणक्य मगध साम्राज्य की ओर बढ़े। मगध में इस समय धनानन्द का शासन था। अपने असीम सैनिक साधनों तथा सम्पत्ति के बावजूद भी वह जनता में अलोकप्रिय था। उसने एक बार चाणक्य को भी अपमानित किया था। इसी अपमान का बदला लेने के लिए कौटिल्य ने नन्दों को समूल नष्ट कर देने की प्रतिज्ञा की थी। अब उनके पास अपनी एक विशाल संगठित सेना थी। जिसका उपयोग उसने नन्दों के विरुद्ध किया।

चन्द्रगुप्त मौर्य की सैनिक शक्ति नन्द राजा के मुकाबले बहुत कम थी। यही एक ऐसा बिन्दु था जहां कौटिल्य की कूटनीति उपयोगी सिद्ध हुई। इस नीति के अन्तर्गत सर्वप्रथम उन्होने साम्राज्य के सीमावर्ती क्षेत्रों पर विजय प्राप्त की। हिमालय क्षेत्र में वे प्रर्वतक नामक शासक से सहायक लेकर आगे बढ़े। इसके बाद गंगा-युमना दोआब क्षेत्र के राज्यों पर विजय प्राप्त की। प्रवर्तक के साथ मिलकर बनाई गयी इसी संयुक्त सेना ने पाटलिपुत्र पर आक्रमण किया। धनानंद का वध कर दिया गया। इस प्रकार चन्द्रगुप्त मौर्य 322 ई.पू. में मगध साम्राज्य की गद्दी पर बैठा और भारत के विस्तृत साम्राज्य का शासक बन गया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

सैल्यूकस पर विजय

सिकंदर की मृत्यु के पश्चात् उसके पूर्वी प्रदेशों का उत्तराधिकारी सैल्यूकस हुआ। बेबीलोन और बैक्ट्रिया को जीतने के बाद वह भारत में सिकंदर के जीते हुऐ क्षेत्रों पर दावा करने लगा। इस उद्देश्य से उसने भारत पर चढ़ाई की।

चन्द्रगुप्त मौर्य की सेना यहां उसका सामना करने के लिए आतुर थी। 305 ई.पू. में सिंधु नदी के तट पर दोनों की सेनाओं में घमासान युद्ध हुआ। सैल्यूकस पराजित हुआ और एक संधि के अनुसार उसे अपनी लड़की हेलेना की शादी चंद्रगुप्त मौर्य से करनी पड़ी। यह निश्चय ही चन्द्रगुप्त की एक महत्वपूर्ण सफलता थी। इससे उसका साम्राज्य पारसीक साम्राज्य की सीमा को स्पर्श करने लगा।

पश्चिमी भारत में साम्राज्य का विस्तार

शक शासक रुद्रदामन के गिरनार अभिलेख से पश्चिमी भारत में चन्द्रगुप्त की विजय का पता चलता है। चन्द्रगुप्त ने बिना किसी बड़े विरोध के सौराष्ट्र के क्षेत्र को जीत लिया था। इस प्रदेश में पुष्यगुप्त वैश्य को राज्यपाल बनाया गया। इसने यहां सुदर्शन झील का निर्माण करवाया। इस झील को कृषि सिंचाई के लिये प्रयुक्त किया गया। सौराष्ट्र के दक्षिण में सोपारा तक का प्रदेश भी चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा विजित किया गया। इसकी राजधानी उज्जैन बनाई गयी।

> **अभिलेख :** किसी कठोर सतह पर उत्कीर्णित पठन सामग्री

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

दक्षिण भारत की विजय

तमिल लेखक 'मामुलनार' ने लिखा है कि मोरियर (मौर्य) नामक शासक ने दक्षिण भारत पर आक्रमण किया। यूनानी लेखक 'प्लूटार्क' लिखते है कि वह 6 लाख की विशाल सेना के साथ दिग्विजय के लिये निकला तथा मदुरा तथा तिन्नेवेल्ली तक पहुंच गया। 'जैन ग्रंथ' बताते है कि वृद्धावस्था में चन्द्रगुप्त श्रवणवेलगोला (कर्नाटक) में आकर तपस्या करने लगा। इन तथ्यों से माना जा सकता है कि यह क्षेत्र मौर्य साम्राज्य का ही अंग था।

इस प्रकार कौटिल्य का राष्ट्र निर्माण का कार्य चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा सम्पूर्ण किया गया। चन्द्रगुप्त मौर्य का साम्राज्य उत्तर-पश्चिम में ईरान की सीमा से दक्षिण में उत्तरी कर्नाटक तक विस्तृत था। पूर्व में यह ब्रह्मपुत्र के मुहाने से लेकर पश्चिम में कच्छ की खाड़ी तक फैला था। हिन्दुकुश पर्वत इस साम्राज्य की वह वैज्ञानिक सीमा थी, जिसे बाद में मुगल तथा अंग्रेज शासक भी प्राप्त करने के लिये असफल प्रयास करते रहे। पाटलिपुत्र इस साम्राज्य की राजधानी थी, जिस पर 298 ई.पू. में अपनी मृत्यु तक चन्द्रगुप्त ने शासन किया।

चन्द्रगुप्त मौर्य के उत्तराधिकारी शासक

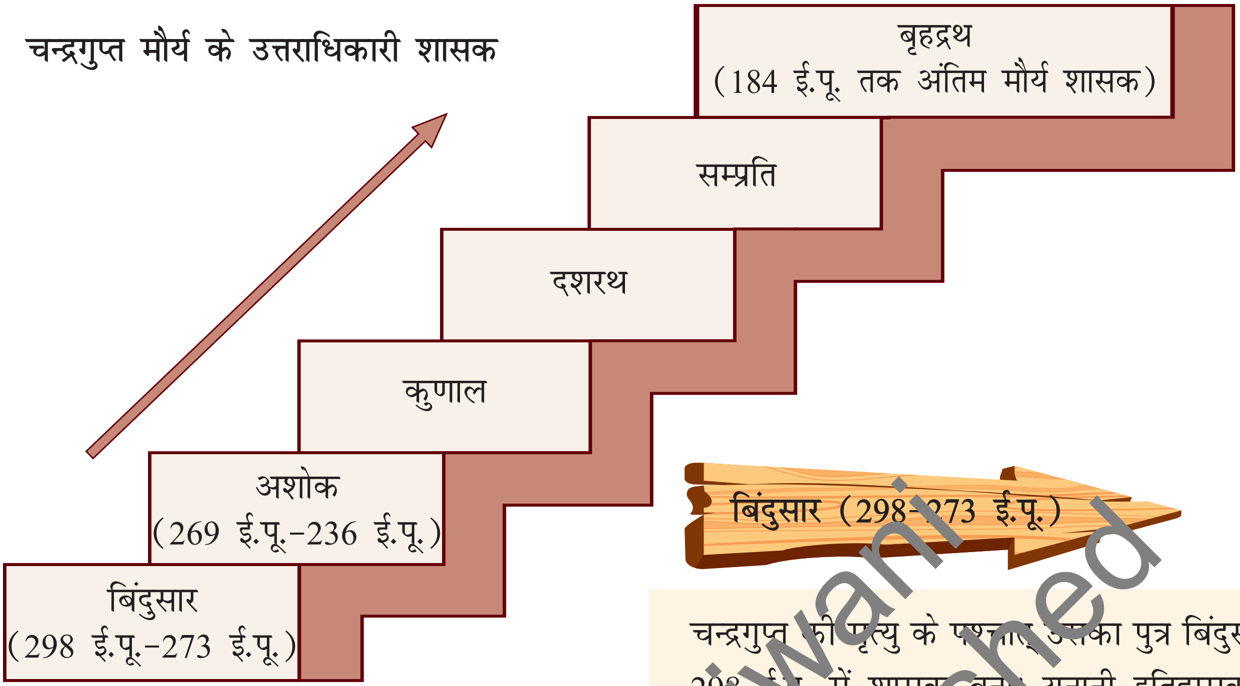

बिंदुसार (298-273 ई.पू.)

चन्द्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उसका पुत्र बिंदुसार 298 ई.पू. में शासक बना। यूनानी इतिहासकार उन्हें अमित्रघात (शत्रुओं का नाश करने वाला) बताते हैं। वायु पुराण में बिंदुसार का नाम भद्रसार मिलता है। चन्द्रगुप्त मौर्य की तरह बिंदुसार ने भी साम्राज्य का विस्तार किया। उसने कौटिल्य के कहने पर 6 राजधानियों के राजाओं और अमात्यों का नाश किया। एक लम्बे युद्ध के बाद पूर्वी व पश्चिमी समुद्रों के बीच की सम्पूर्ण भूमि पर भी अधिकार कर लिया।

उनके समय में तक्षशिला में दो बार विद्रोह हुआ। इस विद्रोह को दबाने के लिये राजकुमार अशोक को भेजा गया। अशोक ने इस विद्रोह को शांत कर दिया। बिंदुसार के समय ही सैल्यूकस के उत्तराधिकारी एण्टिओक्स ने अपना एक राजदूत बिंदुसार के राज्य में भेजा था। यह मेगस्थनीज के स्थान पर आया था। इसी तरह से मिस्त्र के राजा टॉलमी द्वितीय फिलाडेल्फस ने डाइनोसियस नामक एक राजदूत इसके दरबार में भेजा। इन राजदूतों से की जाने वाली संधियों से पता चलता है कि बिंदुसार के समय भारत का पश्चिमी एशिया से व्यापारिक संबंध बहुत अच्छा रहा था। 273 ई.पू. में बिंदुसार की मृत्यु हुई।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

अशोक प्रियदर्शी (269-232 ई.पू.)

बिंदुसार की मृत्यु के पश्चात् उसका सुयोग्य पुत्र अशोक मौर्य साम्राज्य की गद्दी पर बैठा। अशोक अपने पिता के शासनकाल में उज्जैन का राज्यपाल था। बिंदुसार की बीमारी का समाचार सुनकर वह पाटलिपुत्र आया। बिंदुसार के सोलह पत्नियों से 101 पुत्र थे। इस कारण उत्तराधिकार के लिये अशोक को अपने भाइयों से संघर्ष करना पड़ा। चार वर्षों के संघर्ष के पश्चात् 269 ई.पू. में अशोक का राज्याभिषेक हुआ। इस अवसर पर उसने देवानाम प्रिय तथा प्रियदर्शी की उपाधियां धारण की। अशोक की माता का नाम सुभद्रांगी था। वह एक ब्राह्मण की कन्या थी। अशोक की शिक्षा-दीक्षा अपने सगे भाइयों के साथ ही हुई थी। उसकी प्रतिभा, योग्यता और बुद्धि अपने सभी भाइयों से अलग थी। वह पहले उज्जैन तथा बाद में तक्षशिला का कुमार (राज्यपाल) बना।

कलिंग युद्ध तथा उसके परिणाम

अशोक को पिता से एक विशाल साम्राज्य प्राप्त हुआ। अशोक ने अपने राज्याभिषेक के नवें वर्ष तक अपने पूर्वजों की तरह साम्राज्यवादी नीति का अनुसरण किया। लेकिन अशोक के जीवन की सबसे महत्वपूर्ण विजय 261 ई.पू. में कलिंग राज्य को अपने साम्राज्य में मिलाना थी। क्योंकि कलिंग मगध साम्राज्य की सम्प्रभुता को चुनौती दे रहा था। कलिंग युद्ध में एक लाख लोग मारे गये तथा एक लाख पचास हजार लोग बन्दी बना लिये गये। इस युद्ध में लगभग दो लाख पचास हजार से अधिक लोग घायल भी हुए। कलिंग को विजित कर तोशाली इसकी राजधानी बनाई गयी। मौर्य साम्राज्य की पूर्वी सीमा बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत हो गयी। यह कलिंग युद्ध का तात्कालिक लाभ था। कलिंगं युद्ध में हुई हृदय विदारक हिंसा एवं नरसंहार की घटनाओं ने अशोक के हृदय को स्पर्श किया। इसके दूरगामी परिणाम हुए। उसने युद्ध नीति छोड़ दी व बौद्ध बन गया।

कल्हण की राजतरंगिणी के अनुसार सबसे पहले अशोक ने कश्मीर पर विजय प्राप्त की और श्रीनगर शहर की स्थापना की।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

अशोक के धम्म की शिक्षाएं

- सद्गुण व अहिंसा का पालन करना।
- दान देना व पवित्र जीवन जीना।
- बड़ों का आदर करना व छोटों से प्रेम करना।
- सच्चे रीति रिवाजों को मानना व कर्म के सिद्धांत में विश्वास करना।
- धार्मिक सहनशीलता को अपनाते हुऐ धर्म यात्राएं करना

धम्म प्रचार के उपाय

- धर्म-यात्राओं को प्रारंभ किया
- धर्मोपदेशों की व्यवस्था
- धर्म-महामात्रों की नियुक्ति
- राजकीय पदाधिकारियों की नियुक्ति
- विदेशों में धर्म प्रचारक भेजना (जैसे श्रीलंका में अपनी पुत्री संघमित्रा व पुत्र महेन्द्र को भेजा।)
- दिव्य रूपों का प्रदर्शन
- जन उपकार के कार्य
- धर्मोपदेशों को पत्थरों पर खुदवाना

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

साम्राज्य विस्तार

अशोक के अनेक अभिलेखों पर उसके राज्यादेश उत्कीर्णित करवाये गये हैं। इन अभिलेखों के प्राप्ति स्थलों के आधार पर उस के साम्राज्य की सीमा का पता चलता है। ये अभिलेख इस प्रकार हैं :

चौदह शिलालेख : शाहबाजगढ़ी (पेशावर) तथा मानसेहरा (हजारा, पाकिस्तान), कालसी (उ. प्र.), धौली जौगढ़ा (उड़ीसा), इरागुडी (आन्ध्रप्रदेश) आदि।

सात स्तम्भ लेख : टोपरा (हरियाणा), प्रयागराज, लौरिया-नन्दनगढ़ (बिहार), सांची (मध्य प्रदेश) सारनाथ, रूम्मिनदेई तथा निग्लिवासागर (नेपाल की तराई में)। स्तंभ लेखों में सारनाथ के स्तंभ का सिंह शीर्ष सर्वोत्कृष्ट है। इसके फलक पर चार सजीव सिंह पीठ से पीठ सटाये हुए तथा चारों दिशाओं की ओर मुंह किये दृढ़तापूर्वक बैठे हैं। ये चक्रवर्ती सम्राट अशोक की शक्ति के प्रतीक हैं। इनसे चारों दिशाओं में उसके राज्य तथा धर्म के प्रचार की सूचना मिलती है।

लघु शिलालेख : सहसराम (बिहार), बैराट (राजस्थान) जटिंग रामेश्वर (कर्नाटक) आदि।

गुफा लेख : ये संख्या में तीन हैं, जो बिहार की बराबर नामक पहाड़ी की गुफाओं में उत्कीर्ण मिले हैं।

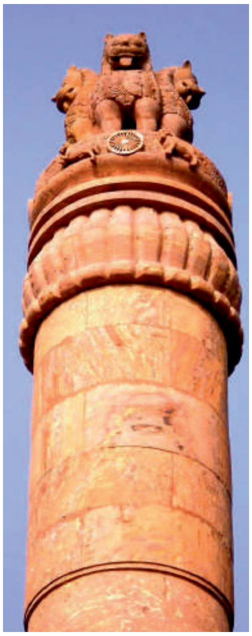

चित्र 6.5
अशोक स्तम्भ (सारनाथ)

इस प्रकार स्पष्ट है कि अशोक का साम्राज्य एक विशाल क्षेत्र में फैला हुआ था। उसका साम्राज्य पश्चिम में ईरान की सीमा से लेकर पूर्व में बंगाल की खाड़ी तक विस्तृत था। उत्तर में कश्मीर से दक्षिण में कर्नाटक तक फैला हुआ था।

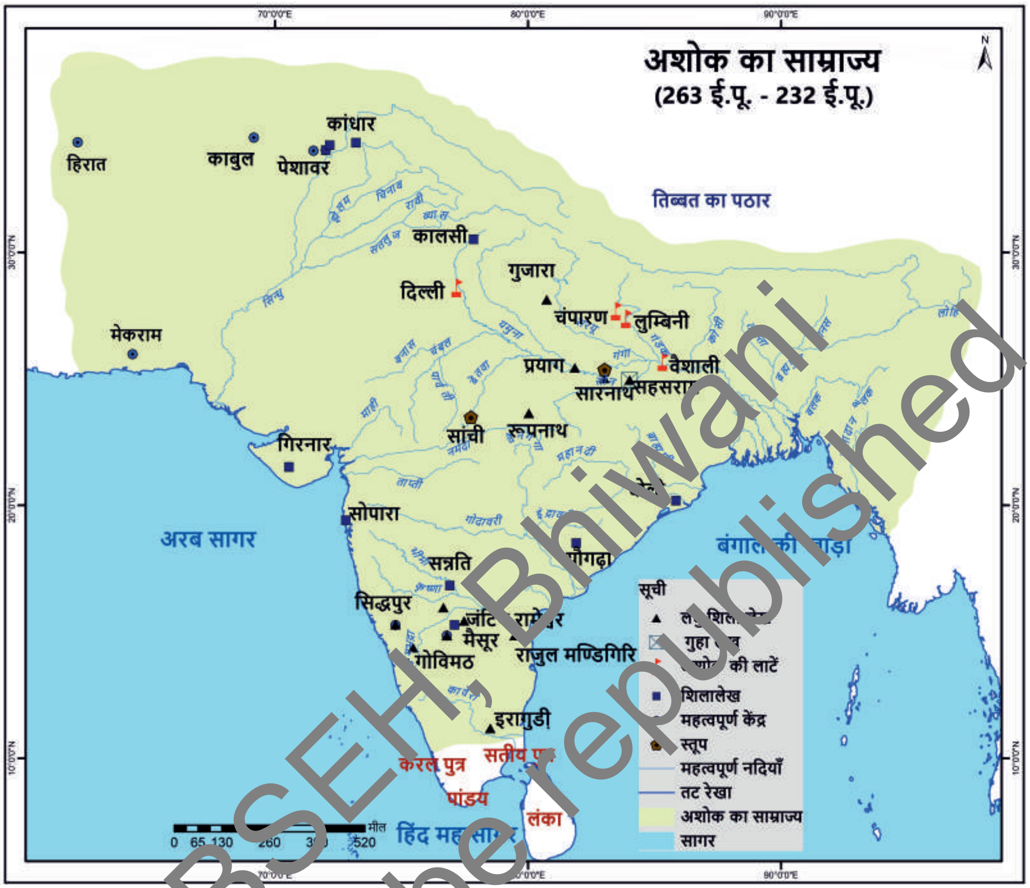

मानचित्र 6.1 – अशोक का साम्राज्य

मौर्य साम्राज्य का पतन

232 ई.पू. में सम्राट अशोक की मृत्यु के साथ ही साम्राज्य का पतन आरंभ हो गया। उसके उत्तराधिकारी अयोग्य सिद्ध हुए। इस वंश का अंतिम शासक बृहद्रथ था। बृहद्रथ को उसके सेनापति पुष्यमित्र शुंग ने 184 ई.पू. में मौत के घाट उतार दिया। बृहद्रथ के बाद साम्राज्य का पतन हो गया। मौर्य साम्राज्य के पतन के मुख्य कारण निम्नलिखित थे :

- अशोक के उत्तराधिकारियों का दुर्बल होना।
- साम्राज्य की विशालता।
- प्रांतीय अधिकारियों के अत्याचार।
- विदेशी आक्रमण।
- वित्तीय संकट का होना।
- उत्तराधिकार के नियम का अभाव होना।
- साम्राज्य का विभाजन।

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

मौर्य युगीन संस्कृति

मौर्य काल में देश में प्रथम बार एक विशाल साम्राज्य की स्थापना हुई। इससे राजनीतिक एकता और सुदृढ़ता का वातावरण तैयार हुआ। इस वातावरण में भौतिक एवं सांस्कृतिक उन्नति का मार्ग प्रशस्त हुआ। मौर्ययुगीन संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को इस प्रकार देखा जा सकता है :

प्रशासन

मौर्य शासन व्यवस्था का जनक चन्द्रगुप्त मौर्य था। इस व्यवस्था में सम्राट अशोक के समय आवश्यकतानुसार सुधार भी हुए। मौर्य शासन व्यवस्था का उद्देश्य हर परिस्थिति में जनता का हित साधना था। इस उद्देश्य की पूर्ति के लिये प्रशासन कई स्तर पर बांटा गया था।

केन्द्रीय प्रशासन :

सम्पूर्ण मौर्य काल में केन्द्रीय प्रशासन का प्रधान राजा होता था। अत: मौर्य साम्राज्य का स्वरूप राजतंत्रात्मक था। इस व्यवस्था के अनुरूप मौर्य सम्राट सर्वोच्च सेनापति, सर्वोच्च न्यायधीश तथा सर्वोच्च कार्यपालिका अध्यक्ष माना जाता था। राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिपरिषद का गठन किया गया था। इस परिषद के सदस्यों को राजा ही नियुक्त करता था। मंत्रिपरिषद राजा को सिर्फ परामर्श देती थी। मंत्रिपरिषद व राजा के द्वारा मुख्य रूप से नीति-निर्धारण का कार्य किया जाता था। इन नीतियों को लागू करने का कार्य अधिकारियों द्वारा किया जाता था। इस उद्देश्य हेतु 18 विभागों का गठन किया गया था। प्रत्येक विभाग को तीर्थ कहा जाता था। तीर्थ का अध्यक्ष अमात्य कहलाता था। समाहर्ता, सन्निधाता, मन्त्री, व्यावहरिक, मंत्रिपरिषदाध्यक्ष प्रशास्ता, आटविक आदि प्रमुख अमात्य थे।

कौटिल्य लिखता है कि राजा मंत्रिपरिषद में उन व्यक्तियों को नियुक्त करे जो उच्च योग्यता रखते हैं। इनमें वीरता, बुद्धिमानी, ईमानदारी व स्वामिभक्ति जैसे गुण हों।

प्रान्तीय प्रशासन :

चन्द्रगुप्त मौर्य के विशाल साम्राज्य के प्रान्तों की निश्चित संख्या हमें ज्ञात नहीं हैं। उनके पौत्र अशोक के अभिलेखों से हमें उसके समय में पांच प्रांतों की जानकारी मिलती है। इन प्रान्तों के राज्यपाल प्राय: राजकुल से संबंधित कुमार होते थे परन्तु कभी-कभी अन्य योग्य व्यक्तियों को भी यह अवसर दिया जाता था। उदाहरण : चन्द्रगुप्त ने पुष्यगुप्त वैश्य को काठियावाड़ का राज्यपाल बनाया। राज्यपाल को 12000 पण वार्षिक वेतन मिलता था। उनके पास अपनी मंत्रिपरिषद भी होती थी।

पण : 3/4 तौले का चांदी का सिक्का

प्रान्त	राजधानी
उत्तरापथ	तक्षशिला
अवन्ति	उज्जयिनी
कलिंग	तोशाली
दक्षिणापथ	सुवर्णगिरी
प्राच्य	पाटलिपुत्र

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

मण्डल, जिला तथा नगर प्रशासन :

प्रत्येक प्रांत में कई मण्डल होते थे। इसकी समता आधुनिक कमिश्नरी से की जा सकती है। इसका प्रधान प्रदेष्टा नामक अधिकारी था। अशोक के अभिलेखों में इसे प्रादेशिक कहा गया है। यह केंद्र सरकार के समाहर्ता के प्रति उत्तरदायी था। मण्डल का विभाजन जिलों में होता था। इन्हें आहार या विषय कहा जाता था। जिले के नीचे स्थानीय नामक इकाई थी। इसमें 800 गांव शामिल थे। स्थानीय के अन्तर्गत 400-400 ग्राम की द्रोणमुख नामक दो इकाइयां थीं। द्रोणमुख के अन्तर्गत 200-200 ग्राम की खार्वटिक इकाई थी। खार्वटिक के अन्तर्गत 20 संग्रहण थे। प्रत्येक संग्रहण में दस गांव होते थे। संग्रहण का प्रधान अधिकारी गोप कहलाता था। मौर्य युग में नगरों का प्रशासन नगरपालिकाओं द्वारा चलाया जाता था। नगर की एक सभा होती थी जिसका प्रमुख नागरक कहलाता था।

मेगस्थनीज ने पाटलिपुत्र के नगर-परिषद् की 5-5 सदस्यों वाली छः समितियों का उल्लेख किया है। ये समितियां थी :

शिल्पकला समिति	वाणिज्य समिति
वैदेशिक समिति	उद्योग समिति
जनसंख्या समिति	कर समिति।

अपने नाम के अनुरूप इन सब समितियों के अलग-अलग कार्य निर्धारित थे।

ग्राम प्रशासन :

प्रशासन की सबसे छोटी इकाई ग्राम थी। इसका अध्यक्ष ग्रामणी होता था। वह ग्रामवासियों द्वारा निर्वाचित होता था। अर्थशास्त्र में वर्णित ग्राम वृद्ध परिषद में गांवों के प्रमुख व्यक्ति होते थें। ये ग्राम प्रशासन में ग्रामणी की मदद करते थे। राज्य ग्राम प्रशासन में हस्तक्षेप नहीं करता था। गांव की भूमि, सिंचाई तथा न्याय से संबंधित सभी कार्यों को निपटाने का अधिकार ग्रामणी को था।

न्याय-व्यवस्था :

मौर्यों की एकतन्त्रात्मक शासन व्यवस्था में सम्राट सर्वोच्च न्यायाधीश होता था। सामान्यत: सम्पूर्ण साम्राज्य में दो प्रकार के न्यायालय थे :

1. **धर्मस्थलीय (दीवानी न्यायालय)**
2. **कण्टक शोधन (फौजदारी न्यायालय)**

राजस्व-प्रशासन :

भूमि कर राज्य की आय का मुख्य साधन था। यह उपज का 1/6 भाग होता था। इसके अतिरिक्त सेतु शुल्क (चुंगी), बिक्रीकर, दंड तथा राजकीय उद्योगों आदि से भी आय होती थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

पुलिस और गुप्तचर व्यवस्था : राज्य में सुरक्षा के लिए पुलिस तथा गुप्तचर व्यवस्था थी। गुप्तचर अनेक रूप में रहते थे।

सैन्य प्रशासन :

- चन्द्रगुप्त मौर्य के पास एक अत्यंत विशाल सेना थी। इसमें 6 लाख पैदल, 30 हजार घुड़सवार, 9 हजार हाथी तथा 800 रथ थे।
- सैनिकों की संख्या कृषकों के बाद सर्वाधिक थी। सैनिकों को नकद वेतन मिलता था।
- इस सेना का प्रबन्ध छः समितियों द्वारा होता था। प्रत्येक समिति में पांच-पांच सदस्य होते थे। ये समितियां थी-

पैदल सेना समिति	अश्वारोही समिति
नौ सेना समिति	गज सेना समिति
रसद समिति	रथ सेना समिति

- दुर्ग पांच प्रकार के होते थे-स्थल दुर्ग, जल दुर्ग, वन दुर्ग, गिरि दुर्ग तथा मरु दुर्ग।

लोकहित के कार्य

चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रजा के भौतिक जीवन को सुखी तथा सुविधापूर्ण बनाने के लिए अनेक उपाय किये। कृषि सिंचाई तथा पीने के पानी के लिए सुदर्शन झील का निर्माण करवाया। सड़कों के किनारे वृक्ष लगवाये। औषधालय तथा पशु अस्पताल बनवाये गये। इन सब कार्यों से चन्द्रगुप्त की शासन व्यवस्था एक कल्याणकारी राज्य की अवधारणा को चरितार्थ करती है।

सामाजिक स्थिति

- मौर्य काल तक आते आते वर्णाश्रम व्यवस्था को एक निश्चित आधार प्राप्त हो चुका था। चार वर्णों के अतिरिक्त अनेक उपजातियों का भी उल्लेख अर्थशास्त्र में मिलता है। इन उपजातियों की उत्पत्ति विभिन्न अनुलोम एवं प्रतिलोम विवाहों के कारण हुई थी।
- नृत्य, वाद्य, गायन, घुड़-दौड़, शतरंज तथा जुआ खेलना समाज में लोकप्रिय खेल थे। लोग सूती, ऊनी, रेश्मी वस्त्र धारण करते थे। उच्च वर्ग के लोग सोना-चांदी व रत्न-जड़ित वस्त्र पहनते थे।
- इस काल में शिक्षा का प्रचार हुआ। शिक्षा के केंद्र गुरुकुल व मठ होते थे। तक्षशिला, बनारस, उज्जैन उच्च शिक्षा के विख्यात केंद्र थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

गतिविधि

प्राचीन भारत में शिक्षा के और कौन-कौन से केंद्र आपने सुने हैं।

आर्थिक जीवन

जनता का मुख्य व्यवसाय कृषि एवं पशुपालन था। सिंचाई की व्यवस्था थी। अनेक प्रकार के अन्न तथा फल-सब्जियां उत्पन्न होती थी। कपड़ा, चमड़ा, आभूषण, लकड़ी आदि के उद्योग उन्नत थे। सिक्कों का प्रचलन था व अनेक देशों से व्यापार होता था।

चित्र 6.[illegible] आहत सिक्के

धार्मिक जीवन

- मौर्य काल में वैदिक, बौद्ध, जैन तथा आजीवक मत एवं सम्प्रदाय मुख्य थे। बुद्ध को देवता मानकर उनके अवशेषों एवं प्रतीकों की पूजा की जाने लगी थी।

माइंड मैप

प्रमुख मौर्य शासक

- चन्द्रगुप्त मौर्य
- बिंदुसार (298-273 ई.पू.)
- अशोक प्रियदर्शी (269-232 ई.पू.)

तिथिक्रम

326 ई.पू.	सिकंदर का भारत पर आक्रमण
325 ई.पू.	सिकंदर की भारत से वापसी
322 ई.पू.	चन्द्रगुप्त द्वारा मौर्य साम्राज्य की स्थापना
321 ई.पू.	चन्द्रगुप्त द्वारा पश्चिमोत्तर (पंजाब तथा सिंध) विजय
305 ई.पू.	चन्द्रगुप्त का सैल्यूकस से युद्ध
298 ई.पू.	चन्द्रगुप्त मौर्य की मृत्यु
273 ई.पू.	बिंदुसार की मृत्यु
269 ई.पू.	अशोक का राज्याभिषेक
261 ई.पू.	कलिंग विजय
184 ई.पू.	मौर्य साम्राज्य का पतन

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. मेगस्थनीज के अनुसार चंद्रगुप्त मौर्य की विशाल सेना का प्रबंध .... समितियों द्वारा होता था।

   क) 4 ख) 3 ग) 6 घ) 5

2. मौर्य साम्राज्य की स्थापना किसने की थी?

   क) अशोक ख) सिकंदर ग) चंद्रगुप्त घ) बिंदुसार

3. निम्न में से कौन-सा एक स्तंभ लेख का उदाहरण नहीं है?

   क) टोपरा (हरियाणा) ख) सांची (मध्य प्रदेश)
   ग) लौरिया नंदनगढ़ (बिहार) घ) इरागुडी (आंध्र प्रदेश)

4. कौटिल्य का अर्थशास्त्र मूल रूप से किस भाषा में लिखी गई है?

   क) हिन्दी ख) संस्कृत ग) अवधि घ) मगधी

5. मंत्रिपरिषद में नीति निर्धारण के कार्यों के लिए 18 विभागों का गठन किया गया था प्रत्येक विभाग को .... कहा जाता था।

   क) तीर्थ ख) दुर्ग ग) गण घ) विषय

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. मौर्य साम्राज्य .... ई.पू. तक अस्तित्व में रहा।
2. कौटिल्य की पुस्तक का नाम .... था।
3. चन्द्रगुप्त मौर्य ने प्रथम विजय .... क्षेत्र पर प्राप्त की थी।
4. अशोक के बृहद शिलालेख कुल .... स्थानों से प्राप्त हुए हैं।
5. मौर्यों के नगर प्रशासन का वर्णन .... की पुस्तक .... में मिलता है।

उचित मिलान करो :

1. अशोक का राज्याभिषेक	क) 261 ई.पू.
2. सैल्यूकस से युद्ध	ख) 305 ई.पू.
3. कलिंग विजय	ग) 325 ई.पू.

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

4. सिकंदर का भारत से प्रस्थान — घ) 1905 ई.
5. अर्थशास्त्र की पाण्डुलिपियों की प्राप्ति — ड.) 269 ई.पू.

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाओ :

1. बौद्ध ग्रंथ बताते हैं कि वृद्धावस्था में चंद्रगुप्त मौर्य श्रवणवेलगोला में जाकर तपस्या करने लगे। ( )
2. चंद्रगुप्त ने पुष्यगुप्त को सौराष्ट्र प्रदेश का राज्यपाल बनाया। ( )
3. अशोक की माता का नाम लीलावती था। ( )
4. मौर्य साम्राज्य का अंतिम शासक बृहद्रथ था। ( )
5. मंडल का विभाजन जिलों में होता था जिन्हें द्रोणमुख कहा जाता था। ( )

लघु प्रश्न :

1. चंद्रगुप्त मौर्य के तीन उत्तराधिकारियों के नाम बताओ।
2. सुदर्शन झील किस प्रांत में विद्यमान थी?
3. अर्थशास्त्र कुल कितने अधिकरण एवं प्रकरणों में विभक्त है?
4. अशोक का राज्याभिषेक कब हुआ और इस अवसर पर उसने कौन-सी उपाधियां धारण की?
5. अशोक का 'मत' क्या था? इसके किन्हीं दो सिद्धांतों का वर्णन करें।

आइए विचार करें :

1. अशोक के सम्राट बनने से पहले के जीवन का वर्णन करो।
2. मेगस्थनीज कौन था? उसने पाटलिपुत्र के नगर परिषद की पांच-पांच सदस्यों वाली कितनी समितियों का उल्लेख किया है? उनके नाम भी बताइए।
3. किस युद्ध के बाद अशोक का हृदय परिवर्तन हो गया था और क्यों?
4. मौर्य साम्राज्य के पतन के किन्हीं तीन कारणों का वर्णन करें।
5. कौटिल्य द्वारा रचित अर्थशास्त्र की प्रमुख विशेषताएं क्या है?

आओ करके देखें

1. कल्पना करें कि आप चन्द्रगुप्त या अशोक की तरह देश के राजा हैं, तो आप देश के लिए क्या करेंगे?
2. आपके गांव या शहर की प्रशासनिक व्यवस्था का नीचे से ऊपर तक क्रम सजाएं।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

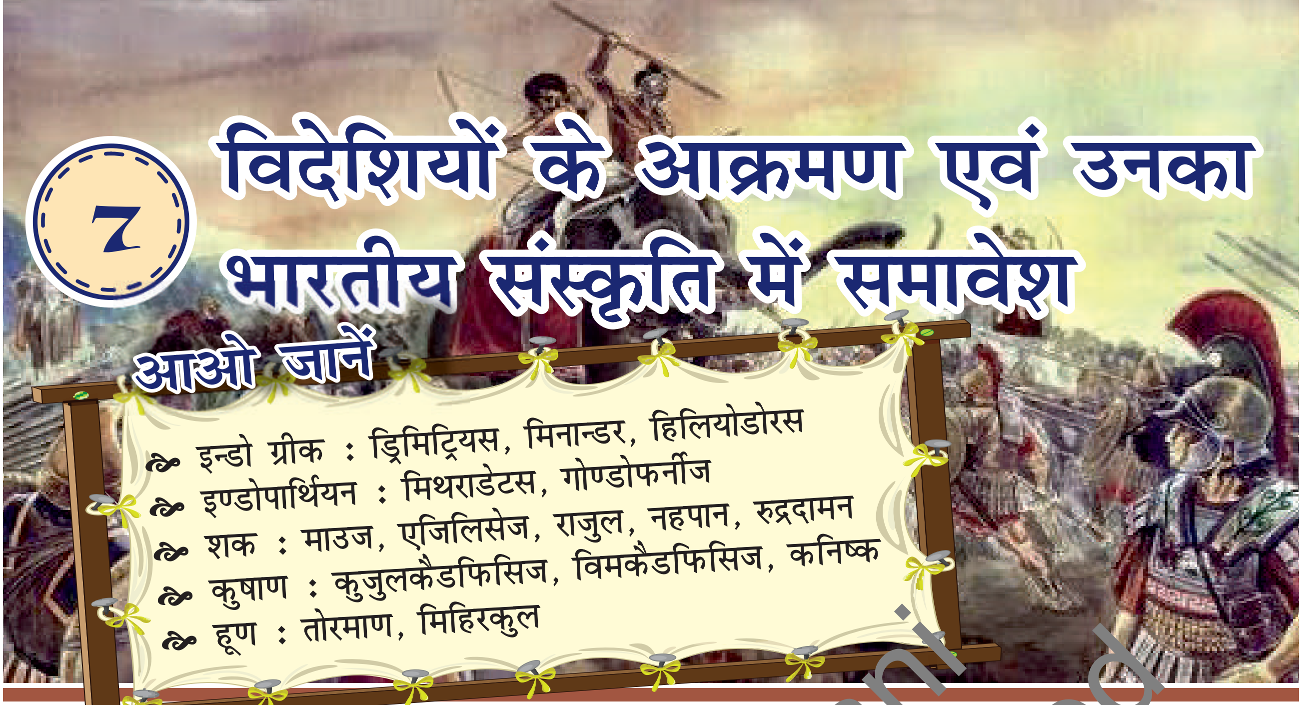

7 विदेशियों के आक्रमण एवं उनका भारतीय संस्कृति में समावेश

आओ जानें

- इन्डो ग्रीक : डिमिट्रियस, मिनान्डर, हिलियोडोरस
- इण्डोपार्थियन : मिथराडेटस, गोण्डोफर्नीज
- शक : माउज, एजिलिसेज, राजुल, नहपान, रुद्रदामन
- कुषाण : कुजुलकैडफिसिज, विमकैडफिसिज, कनिष्क
- हूण : तोरमाण, मिहिरकुल

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

भारत का विदेशों से संबंध प्राचीन काल से रहा है। छठी शताब्दी ईसा पूर्व में ईरान के राजा साइरस एवं डेरियस ने आक्रमण किया था। इसके अतिरिक्त मध्य एशिया व उत्तर पश्चिमी भू-भाग में अनेक खानाबदोश जातियां थी। जो आपस में संघर्षरत थी। 326 ईसा पूर्व में यूनान के राजा सिकंदर ने भारत पर आक्रमण किया। 323 ईसा पूर्व में उसकी मृत्यु के पश्चात् उसके उत्तराधिकारी उसके साम्राज्य को संभालने में असमर्थ रहे और अनके राज्यों ने अपने आप को स्वतंत्र घोषित कर दिया।

इन जातियों ने समय-समय पर भारत पर आक्रमण किए, अपने राज्य भी स्थापित किए परन्तु ये भारत से बाहर कब गए, इसका कोई प्रमाण नहीं मिलता। इसका अभिप्राय यह है कि ये बर्बर जातियां भारतीय समाज में ही विलीन हो गई और भारतीय धर्म-संस्कृति के प्रचार-प्रसार में लग गईं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

इण्डो ग्रीक

250 ईसा पूर्व के लगभग बैक्ट्रिया के गवर्नर डायोडोटस प्रथम ने स्वयं को स्वतंत्र घोषित किया और इसके बाद डायोडोटस द्वितीय, यूथीडेमस प्रथम, द्वितीय, एन्टियोकस प्रथम ने शासन किया। डिमिट्रियस प्रथम इस वंश का पहला शासक था जिसने भारतीय भू-भाग पर हमला किया और अफगानिस्तान और पश्चिमी भू-भाग के प्रदेशों को जीता। डिमिट्रियस द्वितीय को हराकर यूक्रेटाईडस प्रथम ने अपना राज्य स्थापित किया। इन शासकों की जानकारी के लिए हमें सिक्कों पर ही आश्रित रहना पड़ता है फिर भी इतिहासकारों ने अपने परिश्रम से इनका कालक्रम निर्धारित किया। इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक मिनान्डर था जिसने 155 से 130 ईसा पूर्व के लगभग शासन किया। उसकी राजधानी शाकल (स्यालकोट) थी।

मिनान्डर

यह मूल रूप से अलसन्दा के निकट कलसी का रहने वाला था जिसकी पहचान काकेशस भू-भाग के एलेग्जांड्रिया नगर से की गई है। इसका राज्य पश्चिम में अराकोशिया से पूर्व में रावी तक तथा उत्तर में स्वात घाटी से दक्षिण में पंचनद तक था। इन भू-भागों से हमें सिक्के प्राप्त होते हैं। मिनान्डर ने साकेत व पाटलिपुत्र पर भी आक्रमण किए थे। इसे विजय भी प्राप्त हुई थी परन्तु आपसी फूट के कारण इसे वापिस जाना पड़ा। पंतजलि के महाभाष्य, युग पुराण की गार्गी संहिता व कालिदास के नाटक मालविकाग्निमित्रम् से हमें इन आक्रमणों की पुष्टि होती है। इसने सोटर व डिकेयॉय की उपाधियां प्राप्त की थीं।

चित्र 7.1

एजीलीसस का चांदी का सिक्का जिसमें लक्ष्मी कमल पर खड़ी है हाथी अभिषेक कर रहे है। 57-35 ई.पू.

मिलिन्दपन्हों पुस्तक में मिनान्डर की बौद्ध भिक्षु नागसेन के साथ वार्तालाप का वर्णन मिलता है। जिससे सिद्ध होता है कि नागसेन से अत्याधिक प्रभावित हुआ और इसने बौद्ध धर्म अपना लिया। इसने सिक्कों पर बौद्ध प्रतीक, चक्र को भी अंकित करवाया। इसके काल को इण्डोग्रीक राजाओं में सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। जनता इसे भगवान की तरह मानती थी और इसकी लोकप्रियता इतनी थी, इसकी मृत्यु होने पर इसके शरीर की राख के लिए भी लड़ाई हो गई थी। इसीलिए इसके बारे में कहा जाता है कि मिनान्डर जैसा शक्तिशाली योद्धा शासक अपनी विजयों की अपेक्षा एक चिंतक के रूप में प्रसिद्ध हुआ।

एण्टीआलकिड्स इस वंश का अन्य राजा था जिसने भागवत धर्म अपना लिया था और उसके काल में गर्वनर हेलियोडोरस ने एक गरुड़ स्तंभ स्थापित किया। इस वंश का अंतिम शासक हर्मियस था जिसने 75 से 55 ईसा पूर्व में शासन किया था और इसके बाद शक और कुषाण राजाओं ने इनकी सत्ता को समाप्त कर दिया।

चित्र 7.2
हेलियोडोरस का विष्णुध्वज
113 ई.पू. बेस नगर विदिशा

इण्डोपार्थियन

अरसाकोज के नेतृत्व में पार्थिया (ईरान) स्वतंत्र हो गया। मिथराडेटस इस वंश का पहला राजा था। जिसने इण्डोग्रीक राजाओं से सिन्ध् व झेलम नदियों के बीच का भू-भाग जीत लिया। इन राजाओं में गोण्डोफर्नीज सबसे प्रसिद्ध राजा था। उसने शक और कुषाणों से संघर्ष करके अपना राज्य विशाल कर लिया था। इसके काल में ईसाई धर्म-प्रचारक संत थॉमस भारत आया था।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

शक

प्रथम शताब्दी ईसा पूर्व में भारत के उत्तर-पश्चिम में शक जाति ने आक्रमण करने शुरू किए। चीनी प्रमाणों के अनुसार ह्यूंग-नू जाति के लोगों ने यूची जाति पर हमला किया तो यूची जाति ने पश्चिम की ओर पलायन किया और वहां रहने वाली शक जाति को दक्षिण की ओर खदेड़ दिया। पतंजलि के महाभाष्य ने इन्हें सुदूर उत्तर-पश्चिमी सीमा पर यवनों के साथ रहने वाला बताया है। महाभारत में भी इन्हें शाकल (स्यालकोट) से आगे उत्तर-पश्चिम की ओर बर्बरों एवं यवनों के साथ रहने वाला बताया है।

शकों ने कि-पिन पर अधिकार किया जिसे इतिहासकारों ने कश्मीर से पहचाना है।

मध्ययुगीन जैन ग्रन्थ कालकाचार्य कथानक में शकों के आक्रमण के विषय में एक कथा मिलती है। इसके अनुसार कालक नामक आचार्य मालवा के राजा गर्गभिल्ल से अधिक नाराज था। उसे सबक सिखाने के लिए वह उत्तर दिशा में गया तथा शक नेताओं को आक्रमण के लिए प्रेरित किया। शक सिन्धु नदी पार करके सौराष्ट्र प्रदेश में आए और सारे प्रदेश को आपस में बांट लिया। आचार्य कालक शकों को उज्जैन ले गया जहां उसने गर्गभिल्ल शासक को परास्त करके बंदी बना लिया। मालवा में शक राज्य स्थापित हुआ जिसे विक्रमादित्य द्वारा समाप्त किया गया। इस जैन ग्रन्थ में कितनी ऐतिहासिकता है यह तो नहीं कहा जा सकता परन्तु बिना आधार के इसे निर्मूल भी नहीं मान सकते।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

भारत में शकों के चार राज्य मिलते हैं।

- उत्तर-पश्चिमी तक्षशिला
- पश्चिम में उज्जैन
- पूर्व में मथुरा
- दक्षिण में नासिक

तक्षशिला के शक : माउज इस वंश का प्राचीनतम राजा था जिसके सिक्के हमें उपलब्ध होते हैं। जिन पर खरोष्ठी लिपि में राजा तिराज महान लिखा है। इसके उत्तराधिकारी एजेज प्रथम व एजेज द्वितीय थे जिनकी जानकारी केवल सिक्कों से मिलती है। इण्डों पार्थियन राजा गोण्डोफर्नीज ने इस वंश का अंत किया।

मथुरा के शक : मथुरा से प्राप्त सिंह-शीर्ष लेख से हमें राजुल व सोडाव राजाओं का उल्लेख मिलता है। इन दोनों को महाक्षत्रप कहा गया है। इस वंश की स्वतंत्रता कनिष्क के राज्यकाल में समाप्त हो गई जब महाक्षत्रप खरपल्लान व क्षत्रप वनस्पर ने कनिष्क की अधीनता स्वीकार की।

चित्र 7.3 राजुल का मथुरा से प्राप्त सिंह-शीर्ष लेख प्रथम शताब्दी

चित्र 7.4 जूनागढ़ अभिलेख, रुद्रदामन 150 ई. भाषा संस्कृत, लिपि ब्राह्मी

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

नासिक के शक : यहां के दो शासकों भूमक तथा नहपान का उल्लेख मिलता है। नहपान इस वंश का शक्तिशाली राजा था जिसके राज्य में राजस्थान, गुजरात, पश्चिमी मालवा, उत्तरी कोंकण, नासिक व पूना का इलाका शामिल था। नासिक गुहा अभिलेख में इसकी जानकारी दी गई है। नहपान की राजधानी मिन्नगर थी। इस वंश का पतन गौतमी पुत्र शातकर्णि द्वारा किया गया।

क्ष मुद्रा : प्रचलित सिक्के

उज्जैन के शक : इस राज्य की स्थापना चष्टन ने की थी। इसके मुद्राओं पर चैत्य प्रतीक मिलता है। सम्भवतः उसने बौद्ध धर्म अपनाया था। रूद्रदामन इस वंश का प्रसिद्ध शासक था जिसके जूनागढ अभिलेख से हमें बहुत जानकारी मिलती है। उसने अनेक सफलताएं अर्जित की और दक्षिणापथ-पति शातकर्णि को युद्ध में दो बार हराया। उसने सिन्धु सौवीर का प्रदेश भी जीता। उसने सुदर्शन झील का जीर्णोद्वार करवाया। गुप्त वंश के समय में इस वंश का अंत हुआ।

कुषाण

कुषाण, यूची जाति का ही एक हिस्सा थे जिसे हूण जाति ने निकाल दिया था और ये जाति दक्षिण की ओर आगे बढ़ी और इन्होनें शक जाति पर हमला करके अपना राज्य स्थापित कर लिया था। इन संघर्षों के दौरान यह जाति पांच भागों में बंट गई और इन्हीं पांचों में एक भाग कुषाणों का था। ईसा की पहली शताब्दी में इस कुषाण शाखा ने अन्य चारों को भी जीत लिया और अपना राज्य स्थापित किया।

कुषाण वंश के प्रमुख शासक इस प्रकार हैं :

कैडफिसिज-प्रथम

यह इस वंश का पहला ऐसा शासक था, जिसने देवपुत्र की उपाधि धारण की। इसका साम्राज्य सिंधु नदी और ईरान की सीमा के बीच था। इसने इण्डोग्रीक एवं इण्डोपार्थियन राजाओं को हराया। इसका राज्य संभवतः 40 ई. से 65 ई. तक रहा।

कैडफिसिज-द्वितीय

इसने शक राजाओं को हराकर पंजाब, उत्तर प्रदेश, कश्मीर, मथुरा और वाराणसी तक अपने राज्य का विस्तार कर लिया था। इसने भी अनेक उपाधियां धारण की जैसे महाराज, राजाधिराज, महेश्वर, देव पुत्र आदि। उसने शैव धर्म को अपना लिया था परन्तु वह अन्य धर्म का भी सम्मान करता था। इसका राज्यकाल सम्भवतः 65 ई. से 78 ई. तक था।

कनिष्क

इस वंश का सबसे शक्तिशाली शासक कनिष्क था जिसनें 78 ई. से लेकर 120 ई. तक शासन किया। इसकी राजधानी आधुनिक पेशावर (पुरुषपुर) थी जिसे उसने सार्वजनिक भवनों, महलों और बौद्ध विहारों से सजाया था। इसने एक विशाल स्तंभ का भी निर्माण करवाया था जो लकड़ी की 13 मंजिलों का था।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

चित्र 7.5 **कैडफिसिज द्वितीय (कनिष्क का पिता) 65-78 ई.**

चित्र 7.6 कैडफिसिज (65-78 ई.) कांसे का सिक्का एक तरफ राजा, दूसरी ओर नन्दी के साथ शिव

भिक्षु : बौद्ध साधु

कनिष्क द्वारा प्राप्त सफलताएं

कश्मीर की विजय : कनिष्क ने सर्वप्रथम कश्मीर पर विजय प्राप्त की और वह इसे इतना अच्छा लगा कि वहां पर कनिष्कपुर नामक नगर की स्थापना की जो आज भी एक छोटे से गांव के रूप में जाना जाता है। जिसे नीस्पोर के रूप में जाना जाता है।

शक राजाओं के साथ युद्ध : उसने पंजाब, मथुरा एवं उज्जैन के शक राजाओं को हरा कर अपने राज्य का विस्तार किया।

मगध की विजय : कनिष्क की महत्वपूर्ण सफलता मगध की विजय है। चीनी और तिब्बती प्रमाणों के आधार पर यह माना जाता है कि उसने पाटलीपुत्र पर हमला किया और राजा से सबसे अधिक मूल्यवान वस्तु मांगी तो राजा ने उसे बौद्ध भिक्षु अश्वघोष को दे दिया। अश्वघोष के प्रभाव से उसने बौद्ध धर्म अपना लिया।

चीन के राजा के विरुद्ध सफलता : कनिष्क ने चीन के राजा के पास अपना राजदूत यह कहकर भेजा कि वह उसकी अधीनता स्वीकार कर ले। चीन के राजा ने राजदूत को बंदी बना लिया। उसके बाद चीनी राजा का कनिष्क के साथ युद्ध हुआ तो कनिष्क को हार का सामना करना पड़ा परन्तु अगले वर्ष पूरी तैयारी के साथ चीन पर हमला किया परिणामस्वरूप उसे काशगर, यारकन्द और खोतान प्राप्त हुए।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

बौद्ध मत : कनिष्क ने बौद्ध मत से प्रभावित होकर इसे स्वीकार किया। लेकिन कनिष्क की मुद्राओं पर सभी देवी-देवताओं के चित्र मिलते हैं जो उसकी धार्मिक उदारता का प्रमाण है। उसके प्रयासों से ही बौद्ध मत मध्य एशिया, चीन, तिब्बत आदि प्रदेशों में फैला।

कनिष्क ने प्राचीन बौद्ध विहारों का जीर्णोद्धार करवाया तथा नए स्तूप-विहारों का निर्माण करवाया। भिक्षुओं के जीवनयापन के लिए आर्थिक सहायता दी। महात्मा बुद्ध की अनेक मूर्तियां इस काल में बनीं।

चित्र 7.7 (लोक सभा गैलरी से साभार)

अश्वघोष नागार्जुन वसुबन्धु दीगनाग

उसके काल में बौद्ध धर्म की चौथी महासभा कुण्डलवन (कश्मीर) में बुलाई गई जिसमें 500 के लगभग भिक्षुओं ने भाग लिया।

इस सभा के प्रमुख धर्माचार्य अश्वघोष, वसुमित्र, नागार्जुन आदि थे। बौद्ध धर्म में आए अनेक मतभेदों को समाप्त नहीं किया जा सका और बौद्ध धर्म दो भागों में बंट गया। जो प्राचीन सिद्धान्तों में ही विश्वास रखता था, उसे हीनयान कहा गया और जिस वर्ग ने समय के अनुसार उसमें परिवर्तन कर लिया और महात्मा बुद्ध की मूर्ति की पूजा करनी शुरू कर दी, उसे महायान संप्रदाय के रुप में मान्यता दी गई। बौद्ध धर्म के प्राचीन ग्रन्थ पर टीका लिखी गई जिसे महाविभाष कहा गया।

कला व साहित्य के क्षेत्र में उन्नति : कनिष्क कला और साहित्य का भी संरक्षक था और उस काल में ऐसे अनेक क्षेत्रों में विकास हुआ। उस काल में मूर्ति निर्माण में गांधार कला का विकास हुआ जिसमें मूर्ति बनाने के तरीके यूनानी थे परन्तु मूर्तियां भारतीय देवी-देवताओं की बनाई जाती थी। इसी भांति सारनाथ भी मूर्ति कला के केन्द्र बने। उस काल में साहित्य भी बहुत लिखा गया। अश्वघोष ने 'बुद्धचरित सौदरानन्द ग्रन्थ' लिखे। नागार्जुन ने 'शून्यवाद' का प्रचार किया और माध्यमिक सूत्र ग्रंथ की रचना की। आयुर्वेद का ग्रंथ 'चरक संहिता' भी उसी काल में लिखा गया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आर्थिक उन्नति : कनिष्क के काल में भारत का व्यापार सबसे उन्नत था। यह रोम, दक्षिण भारत चीन और पार्थियन साम्राज्य तक फैला हुआ था और इन प्रदेशों में भारत से जो सामान जाता था उसके बदले में सोना, चांदी ही आता था। यह व्यापार जल और स्थल मार्गों से होता था और भारत उस समय बहुत धनी बन गया था।

- त्रिपिटक : बौद्धों के तीन विशेष ग्रन्थ
- हीनयान : बुद्ध के मूल सिद्धान्तों को मानने वाले
- महायान : नए विचारों को अपनाने वाले एवं मूर्तिपूजा करने वाले बौद्ध

हूण

कुषाण वंश के बाद एक अन्य बर्बर जाति ने भारत पर आक्रमण किया, जिन्हें हूण या श्वेत हूण नामों से जाना जाता है। भारत में इनका प्रवेश पांचवीं सदी में होता है और 150 वर्षों तक ये राज्य करते रहे। चीनी स्रोतों के अनुसार हिंगु-नु (हूण)जंगुरिया नामक स्थान पर रहते थे। इन्होंने 165 ईसा पूर्व के लगभग यूची जाति को पश्चिम-उत्तर सीमा से बाहर निकाला और कुछ समय से स्वयं भी पश्चिम की ओर बढ़े। इनकी दो शाखाएं थी, एक यूरोप की ओर बढ़ी तथा दूसरी आक्सस घाटी में बस गई। इन्हीं लोगों ने पर्शिया (ईरान)पर हमला किया जिसमें उन्हें हार का सामना करना पड़ा, फिर ये भारत की ओर मुड़ गए। 465 ई. में इन्होंने गांधार को जीत लिया।

भारत पर हूणों के आक्रमण का पहला प्रमाण स्कन्दगुप्त के भीतरी स्तम्भ लेख में मिलता है जब उसने हूणों को भंयकर युद्ध में परास्त किया था।

तोरमाण का आक्रमण (484-51) : पांचवीं सदी के अंत में तोरमाण नामक हूण राजा का उल्लेख मिलता है, जिसने ईरान के राजा पिफरोज की हत्या करके अपना प्रभाव बढ़ा लिया था। उसने भारत के उत्तर पश्चिमी सीमा प्रांत से आगे बढ़कर पंजाब व कश्मीर में अपनी सत्ता स्थापित की। उसने गुप्तों के विरुद्ध भी सफलता प्राप्त की और उसके पश्चिमी क्षेत्र मालवा तक अपना प्रभाव बढ़ा लिया। उसकी पुष्टि अभिलेख, सिक्कों व साहित्य से भी होती है। उसने यौधेय, मालव, मद्र व आर्जुनायन गणराज्यों को भी नष्ट किया। इसके बाद वह सौराष्ट्र व पूर्वी प्रदेश मगध को रोंदता हुआ गौड़ नगर तक पहुंचा। इसके सिक्के कौशांबी व काशी तक मिलते हैं। मंजुश्रीमूलकल्प में भी इसका उल्लेख है।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

मिहिरकुल : 510 ई. में तोरमाण की मृत्यु के बाद उसका पुत्र मिहिरकुल शासक बना। वह बहुत क्रूर था। उसने बौद्ध विहारों, चैत्यों मठों को नष्ट करना शुरू कर दिया। पाटलीपुत्र पर मिहिरकुल ने अधिकार करके गुप्त राजा बालादित्य का पीछा करना शुरू किया जिसनें एक टापू पर शरण ली हुई थी। मिहिरकुल जब द्वीप पर पहुंचा तो बालादित्य के सैनिकों ने उसे बंदी बना लिया। बालादित्य ने अपनी माता के कहने पर उसे मुक्त कर दिया परन्तु उससे राज्य छीन लिया। कश्मीर के राजा ने उसे शरण दी परन्तु वह उस शासक को मारकर स्वयं गद्दी पर बैठ गया। यशोधर्मन के मन्दसौर अभिलेख से पता लगता है कि भारतीय राजाओं ने यशोधर्मन के नेतृत्व में एक संयुक्त मोर्चा बनाकर मिहिरकुल को पूरी तरह परास्त किया था। मिहिरकुल की पराजय से हूणों की शक्ति क्षीण हो गई। केवल छोटे-छोटे सामन्तों के रूप में वे उत्तर-पश्चिमी भारत में राज्य करते रहे और भारतीय समाज में ही विलीन हो गए।

चित्र 7.8 यशोधर्मन का मन्दसौर अभिलेख, जिसमें मिहिरकुल को हराने का वर्णन है। भाषा-संस्कृत लिपि ब्राह्मी

इस प्रकार प्राचीन काल में भारत पर विदेशी जातियों इण्डो-ग्रीक, इण्डो पार्थियन, शक, कुषाण और हूणों ने आक्रमण किया लेकिन ये जातियां भारत में आकर भारतीय सभ्यता, संस्कृति, धर्म एवं दर्शन से प्रभावित हुई तथा भारतीय सम्पर्क में आने से शीघ्र ही ये भारतीय जनमानस में घुल-मिलकर लुप्त हो गईं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. सन्त थामस .... के काल में भारत आए।
   क) अरसाकोज   ख) मिथराडेट्स   ग) गोण्डोफर्नीज   घ) इन में से कोई नहीं

2. आयुर्वेद ग्रंथ .... कुषाण काल में लिखा गया।
   क) चरक संहिता   ख) बुद्ध चरित   ग) गोण्डोफर्नीज   घ) इन में से कोई नहीं

3. कनिष्क की राजधानी .... थी।
   क) मथुरा   ख) पेशावर   ग) कश्मीर   घ) वाराणसी

4. इण्डो ग्रीक वंश का पहला शासक .... था।
   क) डिमीट्रियस प्रथम   ख) मिनान्डर   ग) एण्टीआलकिडस   घ) हेलियोडोरस

5. कनिष्कपुर नगर की स्थापना .... में की गई।
   क) चीन   ख) मगध   ग) कश्मीर   घ) मथुरा

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

क) मिनान्डर की राजधानी .... थी।

ख) बेसनगर में गरुड़ध्वज की स्थापना .... ने की।

ग) .... शैव धर्म अपनाने वाला प्रथम कुषाण शासक था।

घ) चीन के क्षेत्रों पर अधिकार करने वाला शासक .... था।

ड.) बौद्धों की चौथी सभा .... नामक स्थान पर बुलाई गई।

उचित मिलान करो :

1. कलकाचार्य	क) राजुल
2. अश्वघोष	ख) रुद्रदामन
3. जूनागढ़ अभिलेख	ग) जैन लेखक
4. मथुरा सिंह शीर्ष	घ) कश्मीर विजय
5. कनिष्क	ड़) बौद्ध विद्वान

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाओ :

1. इण्डो ग्रीक वंश का सबसे शक्तिशाली शासक मिनान्डर था। ( )
2. कुषाण शक जाति का हिस्सा थे। ( )
3. नागार्जुन ने शून्यवाद का प्रचार किया। ( )
4. तोरमाण की मृत्यु के बाद मिहिरकुल शासक बना। ( )
5. कनिष्क ने वसुमित्र के प्रभाव से बौद्ध धर्म अपनाया। ( )

लघु प्रश्न :

1. किन प्रमुख विदेशी जातियों ने भारत पर हमले किए।
2. भारत में शकों के चार राज्य कौन से थे?
3. कुषाण वंश के प्रमुख शासकों के नाम बताएं।
4. चौथी बौद्ध सभा के धर्माचार्य कौन थे?
5. भारत पर हूणों के आक्रमण का पहला प्रमाण किस से मिलता है?

आइए विचार करें :

1. ''मिनान्डर अपनी विजयों की अपेक्षा एक चिंतक के रूप में ज्यादा प्रसिद्ध था।'' कथन की पुष्टि करें।
2. तक्षशिला, मथुरा, नासिक व उज्जैन के शक शासकों के बारे में हमें कहां से और क्या-क्या जानकारी मिलती है?
3. "विदेशी जातियों ने भारत पर हमला किया परन्तु भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति से प्रभावित होकर यहीं लुप्त हो गईं।" सिद्ध करें।
4. कनिष्क द्वारा प्राप्त किन्हीं दो विजयों का मूल्यांकन कीजिए।
5. बौद्ध धर्म की चौथी महासभा की उपलब्धियां बताएं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

आओ करके देखें

1. विश्लेषण करें की अपनी संस्कृति को संरक्षित करने, उस का प्रचार और प्रसार करने में हमारी क्या भूमिका हो सकती है?

8 गुप्तकाल : विजय एवं राज्य विस्तार

आओ जानें

- गुप्त साम्राज्य की स्थापना
- गुप्त काल के महान शासक
- समुद्रगुप्त : एक शक्तिशाली शासक और महान विजेता
- चंद्रगुप्त विक्रमादित्य का साम्राज्य विस्तार
- गुप्तकाल : प्राचीन भारतीय इतिहास का स्वर्णयुग
- गुप्त साम्राज्य का पतन

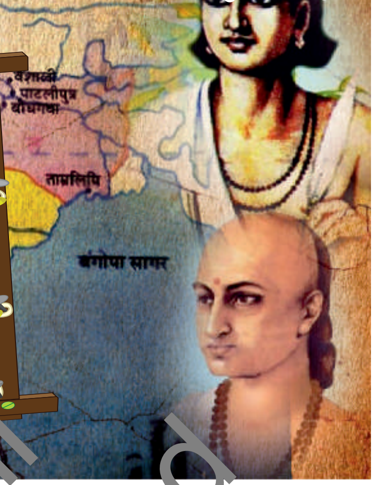

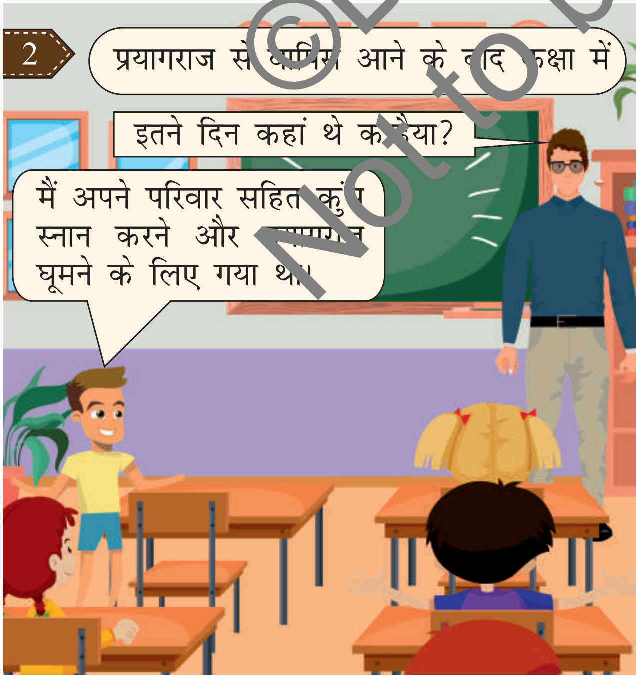

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

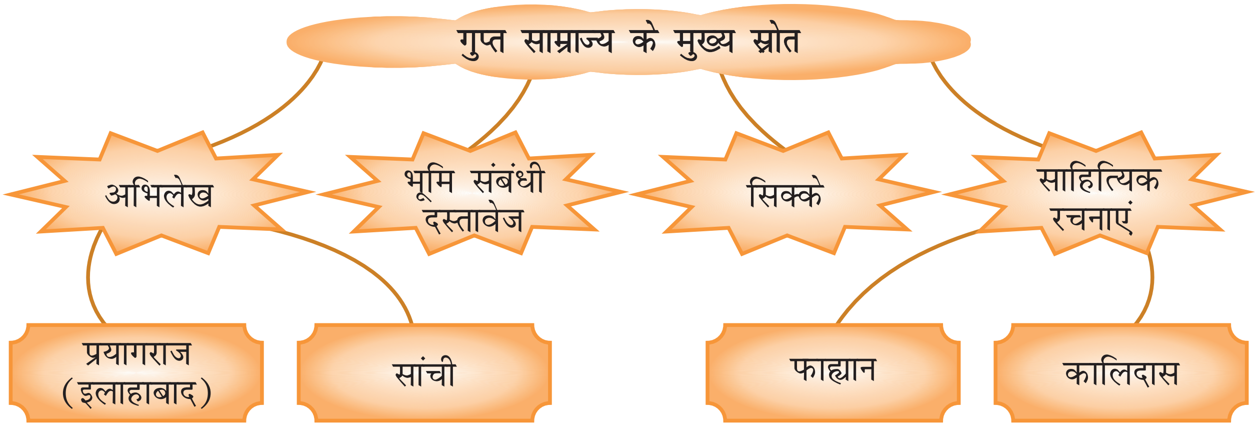

मौर्य साम्राज्य के विघटन के पश्चात् उत्तरी-भारत में कुषाणों और दक्षिण-भारत में सातवाहनों का साम्राज्य स्थापित हो गया। ये दोनों साम्राज्य तीसरी शताब्दी ई० में समाप्त हो गये। कुषाण साम्राज्य के पतन के बाद भारत में राजनीतिक अव्यवस्था फैल गई। इस अव्यवस्था का लाभ उठाकर स्थानीय शासकों तथा सामन्तों ने अपने क्षेत्रों को छोटे-छोटे राज्यों के रूप में संगठित करना आरंभ कर दिया। इसी समय में श्रीगुप्त ने मगध में गुप्त साम्राज्य की स्थापना की । उन्होंने 'महाराज' की उपाधि धारण करके सन् 280 ई. तक शासन किया।

श्रीगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र घटोत्कच ने सन् 319 ई. तक शासन किया। उन्होंने पाटलिपुत्र तथा उसके आसपास के क्षेत्र से साम्राज्य की शुरुआत की, लेकिन इस साम्राज्य का वास्तविक संस्थापक चन्द्रगुप्त प्रथम को माना जाता है। इस वंश के शासकों ने छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्यों को अपने अधीन करके भारतवर्ष को राजनीतिक सूत्र में बांधा और शक्तिशाली साम्राज्य की स्थापना की। इस वंश के शासनकाल में हमारे देश ने प्रत्येक क्षेत्र में प्रगति की। देश का गौरव दूर-दूर तक फैला। भारतीय इतिहास में यह काल 'स्वर्ण युग' के नाम से जाना जाता है। इस वंश के प्रमुख शासक थे - चन्द्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमारगुप्त, स्कन्दगुप्त, बुद्धगुप्त आदि।

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

गुप्त वंश के प्रमुख शासक

1. चन्द्रगुप्त प्रथम

घटोत्कच के बाद चन्द्रगुप्त प्रथम शासक बने। उसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। लिच्छवी वंश की राजकुमारी, कुमारदेवी से विवाह करके अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ बनाया। चन्द्रगुप्त प्रथम ने बंगाल, बिहार, अवध तथा प्रयागराज आदि। क्षेत्रों को अपने अधीन करके अपने साम्राज्य का विस्तार किया। उसने सन् 335 ई. तक शासन किया। चन्द्रगुप्त प्रथम ने अपने जीवन काल में ही कुमारदेवी के पुत्र समुद्रगुप्त को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त कर दिया था।

क्या आप जानते हैं?

गुप्त सम्वत शुरू करने का श्रेय चंद्रगुप्त प्रथम को दिया जाता है ।

2. समुद्रगुप्त

चन्द्रगुप्त प्रथम के पश्चात् समुद्रगुप्त राजसिंहासन पर बैठे। वे निस्सन्देह एक महान विजेता थे। उन्होंने अपनी योग्यता तथा बाहुबल से गुप्त साम्राज्य का विस्तार किया। प्रयागराज स्थित स्तम्भ लेख में उनकी 'सैकड़ों युद्धों में भाग लेने में दक्ष' कहकर प्रशंसा की गई है। उसने 'महाराजाधिराज' की उपाधि धारण की। उसने कला व साहित्य की उन्नति में भी अभूतपूर्व योगदान दिया।

उनका विजय अभियान इस प्रकार है :

उत्तर भारत की विजय

समुद्रगुप्त ने उत्तर भारत पर दो बार आक्रमण किया था। प्रथम आक्रमण में तीन शासकों अच्युत, नागसेन तथा कोटकुलज को संयुक्त रूप से पराजित किया तथा उनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया। आक्रमण के पश्चात् समुद्रगुप्त दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त करने चले गए। उनकी इस अनुपस्थिति का लाभ उठाकर भारत के नौ राजाओं ने समुद्रगुप्त के विरुद्ध संघ बनाने का निर्णय किया। इनमें रुद्रदेव का शासन बुन्देलखण्ड, अच्युत का बरेली, नागसेन का ग्वालियर, गणपति नाग का मथुरा, मातिल का बुलन्दशहर, चन्द्रवर्मन का बंगाल, बलवर्मा का असम, नन्दीनाग का मध्यभारत व नागदत्त का मध्यप्रदेश में था। समुद्रगुप्त ने इन सभी राजाओं को कौशाम्बी नामक स्थान पर पराजित कर दिया व इनके राज्यों को अपने साम्राज्य में मिला लिया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

दक्षिण भारत की विजय

समुद्रगुप्त ने आर्यावर्त उत्तर भारत के विजय अभियान के पश्चात् दक्षिण भारत पर विजय प्राप्त करने की योजना बनाई। इस विजय-अभियान में उन्होंने 12 शासकों को पराजित किया। इस अभियान के लिए उन्हें चार हजार आठ सौ किलोमीटर की दूरी जगलों से होकर तय करनी पड़ी। समुद्रगुप्त ने अपनी कुशलता एवं उच्च कोटि की नेतृत्व-क्षमता से अपने दक्षिण भारत की विजय अभियान को पूरा किया। समुद्रगुप्त द्वारा पराजित राजाओं व उनके राज्यों का संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है :

समुद्रगुप्त के अधीन राज्य

राजा	राज्य	क्षेत्र
महेन्द्र	रायपुर	सम्बलपुर, गंजम
व्याघ्रराज	महाकांतार	मध्य भारत का जंगली क्षेत्र
मण्टराज	कौशल	मध्य प्रदेश व उड़ीसा

महेन्द्रगिरी	पिष्टपुर	गोदावरी नदी क्षेत्र
स्वामीदत्त	कोट्टर	आन्ध्र प्रदेश क्षेत्र
राजा दमन	एरंडेपल्ल	कलिंग के दक्षिण का प्रदेश
विष्णुगोप	कांची	चेन्नई के आस पास का क्षेत्र
हस्तिवर्मन	वेंगी	कृष्णा व गोदावरी नदी का प्रदेश
नीलराज	अवमुक्त	कांची तथा वेंगी के मध्य का क्षेत्र
उग्रसेन	पल्लक	नेल्लोर का क्षेत्र
कुबेर	देवराष्ट्र	विशाखापट्टनम का क्षेत्र
धनंजय	कुंतलपुर	कोल्लुर व अर्काट का क्षेत्र

दक्षिण भारत के उपरोक्त राजाओं द्वारा समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार करने के पश्चात् उन्हें उनके राज्य वापिस कर दिए गए थे क्योंकि आधुनिक संचार संसाधनों के अभाव के कारण प्रत्यक्ष शासन संभव नहीं था।

मानचित्र 8.1 - चंद्रगुप्त द्वितीय का साम्राज्य

व्यक्तिगत गतिविधि

समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य द्वारा जीते गए स्थानों की पहचान करें और उन्हें भारत के मानचित्र पर चिह्नित करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

विंध्य तथा आटविक राज्यों पर विजय	विंध्याचल प्रदेश में अनेक छोटे-छोटे स्वतन्त्र राज्य थे। समुद्रगुप्त ने आक्रमण करके उन्हें पराजित किया व अपनी अधीनता स्वीकार करने के लिए बाध्य किया।
सीमान्त राज्यों पर विजय	विंध्य तथा आटविक राज्यों को जीतने के बाद समुद्रगुप्त ने अपने राज्य के पूर्वी तथा पश्चिमी सीमाओं पर स्थित राज्यों को जीतने के लिए अभियान चलाया। इन राज्यों ने सरलता से उनकी अधीनता स्वीकार कर ली थी।

पश्चिमी सीमा पर स्थित विजयी किए गए नौ गणराज्य

राज्य	क्षेत्र
मालव	राजस्थान के प्रदेश
आर्जुनायन	आगरा, अलवर व भरतपुर क्षेत्र
मद्रक	रावी व चिनाब नदियों का मध्य भाग
प्रार्जुन	राजपूताना, भिलसा व झांसी क्षेत्र
सनकानिक	मध्य प्रदेश का नरसिंहपुर क्षेत्र
काक	सांची के निकट क्षेत्र
खार्परिक	मध्य प्रदेश का दमोह क्षेत्र
यौधेय	पूर्वी पंजाब व साथ लगते उत्तर प्रदेश के क्षेत्र

पूर्वी सीमा पर स्थित जीते गए पांच राज्य

राज्य	क्षेत्र
समतट	बंगाल का समुद्रतटीय क्षेत्र
कामरूप	असम
ड्वाक	मध्य बंगाल क्षेत्र
नेपाल	नेपाल के प्रदेश
कर्तृपुर	करतारपुर, कुमाऊं, गढ़वाल व रूहेलखण्ड क्षेत्र

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

विदेशों से संबंध

समुद्रगुप्त की बढ़ती शक्ति से प्रभावित होकर अनेक विदेशी शासकों ने उनसे मैत्रीपूर्ण संबंध स्थापित किए थे। इनमें कुषाण व शक शासकों के अतिरिक्त लंका, जावा, सुमात्रा तथा मलाया के शासक प्रमुख थे।

अश्वमेध यज्ञ

समुद्रगुप्त ने 'चक्रवर्ती सम्राट' बनने के उद्देश्य से अश्वमेध यज्ञ किया। उसने अपने नाम के विभिन्न सिक्के जारी किए थे। समुद्रगुप्त ने एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की थी।

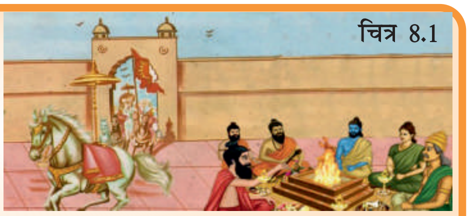

चित्र 8.1

अश्वमेध यज्ञ को दर्शाता काल्पनिक चित्र

समुद्रगुप्त ने दर्शन, धर्म व राजनीति शास्त्र का गहन अध्ययन किया था। वह न केवल एक महान विजेता था। बल्कि एक योग्य, निष्पक्ष एवं न्यायप्रिय शासक भी था। उसे कला व साहित्य से बहुत प्रेम था। वह उच्च कोटि का विद्वान तथा कवि भी था। 375 ई. में उसकी मृत्यु हो गई थी। सौ युद्धों का विजेता समुद्रगुप्त इतना महत्वपूर्ण शासक था कि उसकी वीरता के कारण यूरोपियन इतिहासकार उसके नाम के साथ नेपोलियन का नाम जोड़ते हैं यद्यपि समुद्रगुप्त की उपलब्धियां उससे कहीं महान थी और वह नेपोलियन से लगभग एक हजार वर्ष पूर्व हुआ। इसलिए फ्रांसीसी शासक नेपोलियन को 'फ्रांसीसी समुद्रगुप्त' भी कहा जा सकता है।

3. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य

समुद्रगुप्त की मृत्यु के पश्चात् उनका पुत्र रामगुप्त शासक बना। 380 ई. में शकों से अपमान-जनक सन्धि करने के कारण उसके छोटे भाई चन्द्रगुप्त-द्वितीय ने उसकी हत्या कर दी थी और शासक बन कर गुप्त वंश के सिकुड़ते साम्राज्य को फिर से अपने पिता की तरह विस्तार देना शुरू किया था।

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने विभिन्न शासकों से वैवाहिक संबंध स्थापित करके अपनी स्थिति को सुदृढ़ किया। इसके अतिरिक्त उन्होंने अपने साम्राज्य के विस्तार के लिए युद्ध भी किए। इसी कारण उनकी ख्याति एक महान विजेता के रूप में दूर-दूर तक फैल गई थी।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य की विजय

शकों एवं कुषाणों पर विजय

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने मालवा, गुजरात और काठियावाड़ क्षेत्रों में शकों एवं कुषाणों का दमन किया। उन्होंने वाकाटक नरेश की सहायता से 21 शक राजाओं पर आक्रमण किया। वह युद्ध लंबे समय तक चलता रहा। अन्त में शकों की पराजय हुई। शक शासक रुद्रसिंह तृतीय मारा गया था। इसी के साथ उन्होंने अवन्ती के कुषाणों का भी दमन किया था। इस विजय अभियान के परिणामस्वरूप गुप्त साम्राज्य की सीमाएं अरब सागर को छूने लगी थीं। इस विजय अभियान के बाद उन्होंने 'विक्रमादित्य' (शूरवीरता का सूर्य) तथा 'शकारि' (शकों का नाश करने वाला) की उपाधि धारण की थी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

बंग के सरदारों का दमन

बंगाल में कुछ सामन्त एवं सरदारों ने विद्रोह कर दिया था। चन्द्रगुप्त द्वितीय के लिए यह असहनीय था। इसलिए उन्होंने बंगाल पर आक्रमण करके विद्रोही सरदारों का दमन किया और उस प्रदेश पर पुनः अधिकार किया।

क्या आप जानते हैं?

शक मध्य एशिया के रहने वाले थे। पश्चिमी चीन की यूची जाति ने शकों को उनकी मातृभूमि मध्य-एशिया से भगा दिया था। शक पहले दक्षिण अफगानिस्तान में बसे और बाद में उन्होंने वहां से धीरे-धीरे भारत में अपना साम्राज्य स्थापित किया।

बल्ख की विजय

चन्द्रगुप्त द्वितीय ने सिन्धु नदी के आस पास के क्षेत्र में फैली वाह्लीक जाति को पराजित किया। यह सात शाखाओं में फैली विदेशी जाति थी। उसने इनका दमन करके पंजाब के क्षेत्र पर अपना अधिकार कर लिया।

फाह्यान एक चीनी यात्री था। वह भारत में बौद्ध धर्म से संबन्धित ग्रंथों को प्राप्त करने तथा महात्मा बुद्ध के जीवन से संबन्धित स्थानों की यात्रा करने के उद्देश्य से भारत आया। वह भारत में 399-414 ई. तक रहा। उसने भारत के संबंध में 'फो-कुओ-की' नामक ग्रंथ लिखा।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

चित्र 8.2 **चीनी यात्री फाह्यान**
(काल्पनिक चित्र)

चित्र 8.3 **कालीदास**
(काल्पनिक चित्र)

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य ने 380 ई. से 414 ई. तक शासन किया। इनके शासनकाल में भारत खूब समृद्ध हुआ। उसने अपने साम्राज्य का विस्तार दूर-दूर तक किया था। उसके समय में गुप्त साम्राज्य की सीमाएं उत्तर में हिमालय से लेकर दक्षिण में नर्मदा नदी तक तथा पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी से पश्चिम में अरब सागर तक फैली हुई थी। उन्होंने 'विक्रमादित्य' की उपाधि के साथ-साथ 'सिंह विक्रम', 'सिंह चन्द्र', 'विक्रमांक देवराज' आदि उपाधियाँ भी धारण की। उसने अश्वमेध यज्ञ भी करवाया।

चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य एक अच्छे विजेता होने के साथ-साथ अपने पिता की तरह ही कुशल शासन-प्रबन्धक भी थे। उसका शासन प्रबन्ध धर्मशास्त्रों पर आधारित और जन कल्याणकारी था। चीनी यात्री फाह्यान भी उसके ही शासनकाल में भारत आया था। कालिदास जैसे महान कवि उसके दरबार की शोभा बढ़ाते थे।

उसने अपने साम्राज्य को सुदृढ़ एवं शक्तिशाली बनाने के लिए शक्तिशाली राज्यों के साथ वैवाहिक संबंध स्थापित किए। उसने स्वयं नागवंश की राजकुमारी कुबेर नागा के साथ विवाह किया। कालान्तर में उसने वाकाटक राजा रुद्रदेव द्वितीय के साथ अपनी कन्या प्रभावती का विवाह किया तथा कुंतल राजा की पुत्री के साथ अपने पुत्र का विवाह किया। इन विवाह-संबंधों के कारण उसकी ख्याति में वृद्धि हुई।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

4. कुमारगुप्त

414 ई. में चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य का पुत्र कुमारगुप्त गद्दी पर बैठा। वह पट्टमहादेवी ध्रुवदेवी का पुत्र था। उसने 'महेन्द्रादित्य' की उपाधि धारण की तथा अश्वमेध यज्ञ भी किया। कुमारगुप्त का सौभाग्य था कि उसे कोई भी युद्ध नहीं लड़ना पड़ा। उसके शासन काल में शान्ति, स्थिरता तथा सुव्यवस्था बनी रही। उसने विभिन्न प्रकार के सोने-चाँदी के सिक्के भी चलाए। कुमारगुप्त महेन्द्रादित्य ने सन् 455 ई. तक शासन किया। उसके शासन के अन्तिम वर्षों में पुष्यभूतियों ने आक्रमण कर दिया था। लेकिन उसके पुत्र स्कन्दगुप्त ने उन्हें बुरी तरह पराजित कर दिया था।

5. स्कन्दगुप्त

कुमारगुप्त की मृत्यु के बाद उसका पुत्र स्कन्दगुप्त सिंहासन पर बैठा। वह एक कुशल राजनीतिज्ञ तथा वीर योद्धा था। वह अपने पिता के शासन काल में ही पुष्यभूतियों के भयंकर विद्रोह को दबाकर अपनी वीरता का प्रमाण दे चुका था। उसके शासनकाल में संघर्षों की भरमार रही। उसकी सबसे अधिक परेशानी

क्या आप जानते हैं?

हूण मध्य एशिया के बर्बर लोग थे। उन्होंने स्कन्दगुप्त के शासन काल में गुप्त साम्राज्य पर आक्रमण कर दिया परन्तु स्कन्दगुप्त ने हूणों को बुरी तरह से पराजित कर भगा दिया। तोरमाण और मिहिरकुल के नेतृत्व में हूण शक्ति अपनी चरम सीमा पर थी।

मध्य एशियाई बर्बर जाति हूण ने बढ़ाई। स्कन्दगुप्त ने अपने रण कौशल का परिचय देते हुए हूणों को करारी शिकस्त दी। अगले 50 वर्षों तक हूणों को भारत की सीमा से दूर रहे। इसके बाद, उसके छोटे चाचा गोविन्दगुप्त ने मालवा में किए गए विद्रोह को दबाया। उसने कुछ क्षेत्रों के सामन्ती विद्रोहों को भी आसानी से दबाया। हूणों को पराजित करने के बाद उन्होंने भितरी (गाजीपुर जिला) नामक गांव में विष्णु स्तम्भ भी बनवाया। स्कन्दगुप्त ने अपने शासन काल में सौराष्ट्र (काठियावाड़) में चन्द्रगुप्त मौर्य द्वारा बनवाई गई सुदर्शन झील की मरम्मत करवाई। प्रान्तीय गवर्नर पर्णदत्त ने स्कन्दगुप्त के आदेशानुसार इस झील का जीर्णोद्धार करवाया। उसके तट पर भगवान् विष्णु का मन्दिर बनवाया। स्कन्दगुप्त अपनी वीरता, जनकल्याण की भावना एवं चारित्रिक अच्छाई के लिए विख्यात था। उसकी तुलना धर्मराज युधिष्ठिर से करके 'परहितकारी' बतलाया गया है।

स्कन्दगुप्त की मृत्यु 467 ई. में हो गई। उसके पश्चात् के गुप्त शासकों में कोई भी ऐसा शासक नहीं था जो गुप्त साम्राज्य की एकता और अखण्डता को बनाए रख सके। जिसके कारण महान गुप्त साम्राज्य का पतन शुरू हो गया।

स्कन्दगुप्त के बाद कई शासक बने जैसे पुरुगुप्त, बुद्धगुप्त, नरसिंह गुप्त, कुमार गुप्त तृतीय तथा विष्णु गुप्त, भानु गुप्त आदि हुए परन्तु समुद्रगुप्त और चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के बाहुबल से निर्मित गुप्त साम्राज्य गर्त में डूब गया।

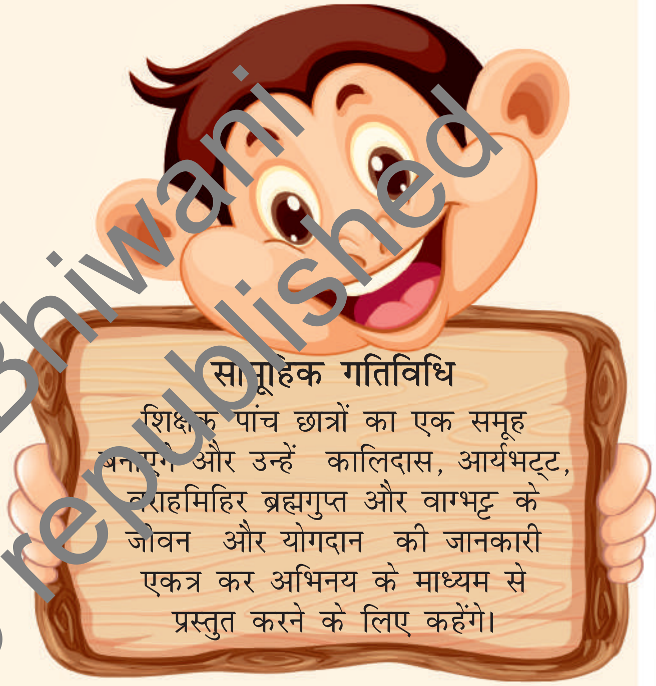

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

गुप्त काल : भारतीय इतिहास का स्वर्ण युग

- गुप्त काल को भारतीय इतिहास में स्वर्ण युग के रूप में जाना जाता है।
- गुप्त शासकों ने साम्राज्य को विकास की ऊंचाइयों तक पहुंचाया। सम्पूर्ण भारत को एकता के सूत्र में बांधा।
- पूरे भारत में शान्ति एवं खुशहाली थी।
- विदेशों से भारत के अच्छे संबंध थे।
- गुप्त काल में भारत ने राजनीतिक, सामाजिक, आर्थिक, धार्मिक तथा सांस्कृतिक क्षेत्रों में अभूतपूर्व उन्नति की और पूरी दुनिया में भारत की समृद्धि का परचम लहराने लगा।
- आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त, वाग्भट्ट जैसे महान विज्ञानी गुप्त काल को विकास की चरम सीमा पर ले गए।

- इस काल में भारतीय संस्कृति का विदेशों में प्रसार हुआ।
- कृषक तथा साधारण जनता प्रसन्न थी। अपराध कम थे।
- उस समय कला एवं संस्कृति के क्षेत्रों में भी अभूतपूर्व उन्नति हुई।

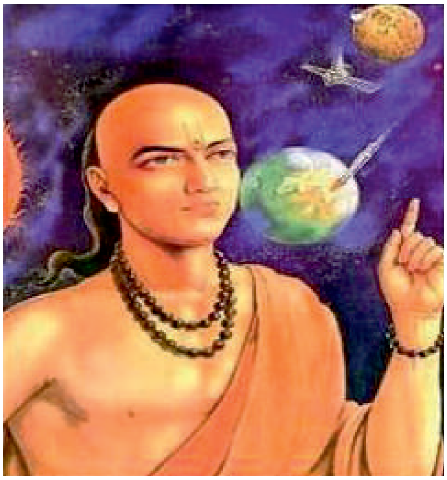

चित्र 8.4 **आर्यभट्ट** (काल्पनिक चित्र)

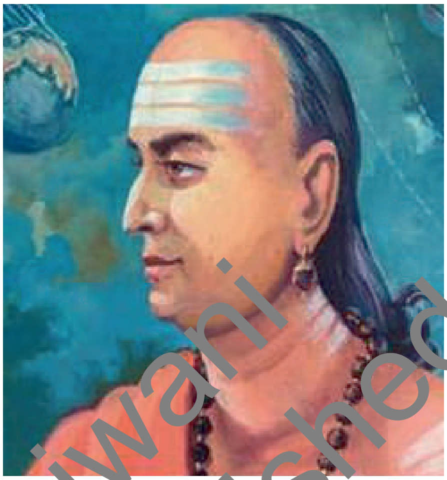

चित्र 8.5 **वराहमिहिर** (काल्पनिक चित्र)

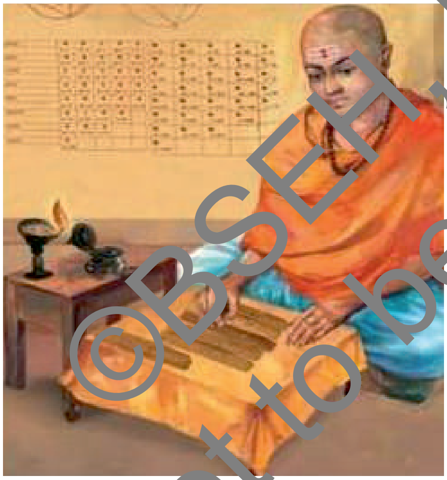

चित्र 8.6 **ब्रह्मगुप्त** (काल्पनिक चित्र)

चित्र 8.7 **वाग्भट्ट (काल्पनिक चित्र)**

चित्र 8.8 **चंद्रगुप्त विक्रमादित्य, महान कवि कालिदास एवं अन्य** (लोक सभा गैलरी से साभार)

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

गुप्त साम्राज्य का पतन

स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद गुप्त साम्राज्य का पतन होने लगा। इसके पतन के कारण निम्नलिखित रहे :

प्रान्तीय गवर्नरों का विद्रोह : केन्द्र (शासक) के कमजोर होने के कारण प्रान्तीय गवर्नर अपनी स्वतंत्रता के लिए विद्रोह कर देते थे। इन विद्रोहों को दबाने के लिए कोई उचित कदम नहीं उठाया गया। ये विद्रोह पतन के कारण बने।

कमजोर उत्तराधिकारी : स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद सभी गुप्त उत्तराधिकारी निर्बल सिद्ध हुए और उनसे विशाल साम्राज्य का संचालन सही नहीं हो सका।

हूणों के आक्रमण : स्कन्दगुप्त की मृत्यु के बाद हूणों के आक्रमण निरन्तर बढ़ गए जिससे आर्थिक हानि अधिक हो गई और ये आक्रमण साम्राज्य के पतन का कारण बने।

पतन के कारण

आन्तरिक कलह : गुप्त वंश के उत्तराधिकारियों में स्कन्दगुप्त के बाद गद्दी पर बैठने के लिए आपसी झगड़े निरन्तर बढ़ने लगे। एक दूसरे को दुर्बल करने का प्रयास किया जाने लगा।

साम्राज्य का विशाल होना : उस समय संसाधनों की कमी थी और साम्राज्य का क्षेत्र विशाल था जिसके कारण सुरक्षा व्यवस्था सही समय पर सभी जगह उपलब्ध नहीं हो पा रही थी।

अन्य कारण : विदेशी आक्रमण, दण्ड-व्यवस्था का उचित प्रबन्ध न होना एवं उत्तराधिकार के नियमों का अभाव होने के कारण गुप्त साम्राज्य पूरी तरह से छिन्न-भिन्न हो गया और यह साम्राज्य पूर्णरूप से समाप्त हो गया।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

माइंड मैप

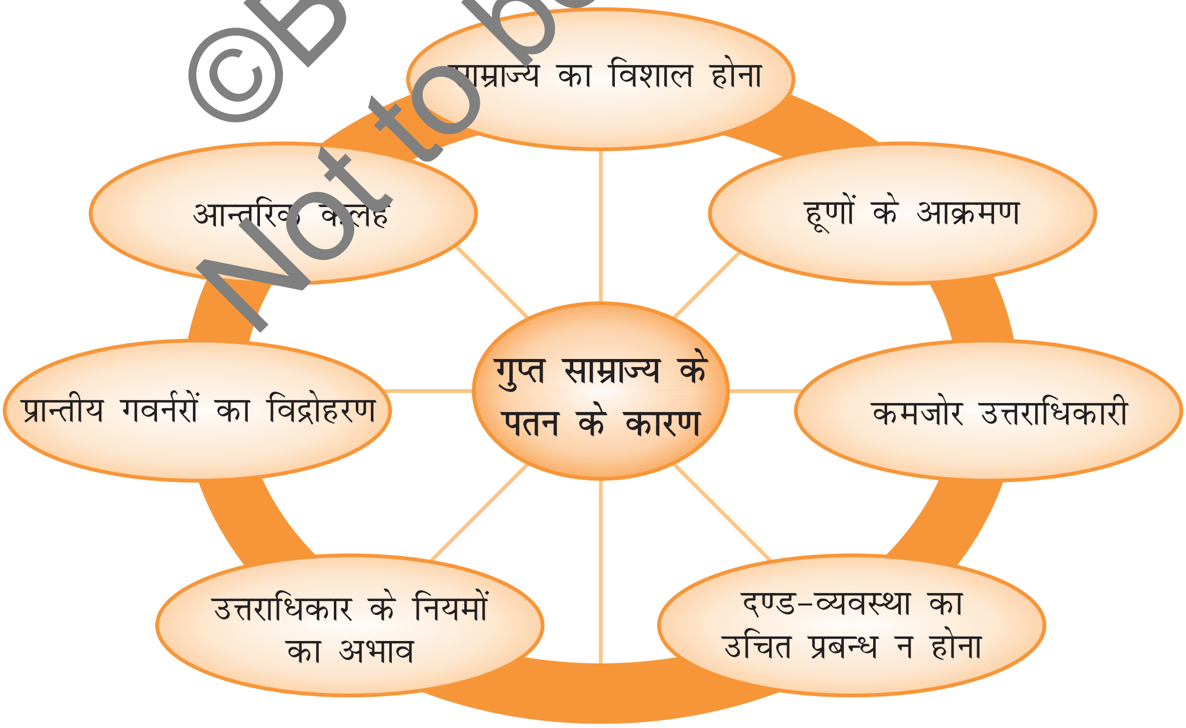

इस प्रकार श्रीगुप्त द्वारा स्थापित छोटे से गुप्त साम्राज्य को चंद्रगुप्त प्रथम, समुद्रगुप्त, चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य, कुमारगुप्त व स्कंदगुप्त जैसे योग्य वीर एवं महान शासकों ने अपनी योग्यता से अनेक विजयों के द्वारा विशाल साम्राज्य में परिवर्तित कर दिया। भारत को उन्नति के लिए एक सूत्र में बांधने का विशेष श्रेय गुप्त वंश को प्राप्त है। शक्तिशाली गुप्त सम्राटों ने भारत का नाम विश्व में चमकाया। अनेक क्षेत्रों में जो योगदान गुप्त वंश का रहा है शायद ही अन्य किसी वंश ने यह गौरव प्राप्त किया हो। स्कंदगुप्त के बाद के सभी गुप्त शासक अयोग्य व कायर थे जिससे एकता व अखण्डता को धक्का लगा आंतरिक कलह व विद्रोह होने लगे। बार-बार विदेशी आक्रमण होने लगे जिससे यह विशाल साम्राज्य समाप्त हो गया।

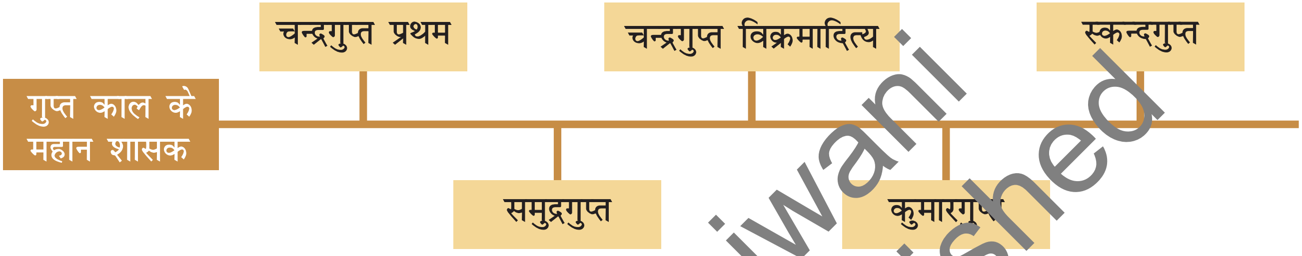

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

आओ जाने, कितना सीखा

सही उत्तर छांटे :

1. शक .... के रहने वाले थे।
   क) पश्चिमी चीन ख) मध्य एशिया ग) ईरान घ) इनमें से कोई नहीं
2. चन्द्रगुप्त प्रथम ने .... से विवाह करके अपनी राजनीतिक स्थिति को सुदृढ़ किया।
   क) कुमार देवी ख) पट्टीमहादेवी ग) कुबेर नागा घ) प्रभावती
3. स्कंदगुप्त ने सुदर्शन झील के तट पर .... का मन्दिर बनवाया।
   क) भगवान शिव ख) भगवान ब्रह्मा ग) भगवान विष्णु घ) मां सरस्वती
4. चन्द्रगुप्त विक्रमादित्य के दरबार के प्रसिद्ध कवि .... थे।
   क) कालिदास ख) आर्यभट्ट ग) वाणभट्ट घ) वराहमिहिर
5. चीनी यात्री फाह्यान भारत में .... ई. तक रहा।
   क) 410-412 ख) 399-414 ग) 366-370 घ) 310-322

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. गुप्त वंश का संस्थापक .... था।
2. .... ने गुप्त सम्वत आरंभ किया।

3 गुप्त वंश के शासक .... ने हूणों को बुरी तरह पराजित किया।

4. स्कंदगुप्त ने .... झील की मुरम्मत करवाई।

उचित मिलान करो :

1. हूण	क) चीनी यात्री
2. कालिदास	ख) महान वैज्ञानिक
3. आर्यभट्ट	ग) महान संस्कृत नाटककार
4. फाह्यान	घ) शकारि
5. चन्द्रगुप्त द्वितीय	ड़) मध्य एशिया

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाओ :

1. समुद्रगुप्त ने दक्षिण भारत विजय अभियान में सात राजाओं को हराया। ( )
2 चन्द्रगुप्त प्रथम ने कुमारगुप्त को अपना उत्तरधिकारी बनाया। ( )
3 स्कंदगुप्त ने हूणों को पराजित करने के बाद भीतरी गांव में विष्णु स्तंभ बनवाया। ( )
4 तोरमाण और मिहिरकुल के नेतृत्व में हूण शक्ति अपने चरम सीमा पर थी। ( )
5 समुद्रगुप्त ने चक्रवर्ती सम्राट बनने के लिए अश्वमेध यज्ञ करवाया। ( )

लघु प्रश्न :

1. गुप्त वंश के किन्हीं दो शासकों के नाम लिखें।
2. समुद्रगुप्त कितने युद्धों का विजेता था?
3. 'महाराज' की उपाधि धारण करने वाले गुप्त शासक का नाम लिखें।
4. गुप्त काल के किन्हीं चार वैज्ञानिकों के नाम बताएं?
5. चीनी यात्री फाह्यान किस गुप्त शासक के समय भारत में आया? उनके द्वारा रचित ग्रंथ का नाम बताएं।

आइए विचार करें :

1. "गुप्त काल को प्राचीन भारतीय इतिहास का 'स्वर्ण युग' कहते हैं।" तर्क सहित सिद्ध करें।
2. चन्द्रगुप्त द्वितीय की उपलब्धियों का मूल्यांकन करें।
3. हूण कौन थे? गुप्त काल में हूणों के आक्रमणों का वर्णन करें।
4. गुप्त साम्राज्य के पतन के कोई चार कारण बताएं।

आओ करके देखें

1. महान वैज्ञानिक जैसे आर्यभट्ट, वराहमिहिर, ब्रह्मगुप्त और वाग्भट्ट के योगदान के बारे में पता करें एवं कक्षा में उसकी चर्चा करें।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

9 गुप्तकाल : शासन, समाज एवं संस्कृति

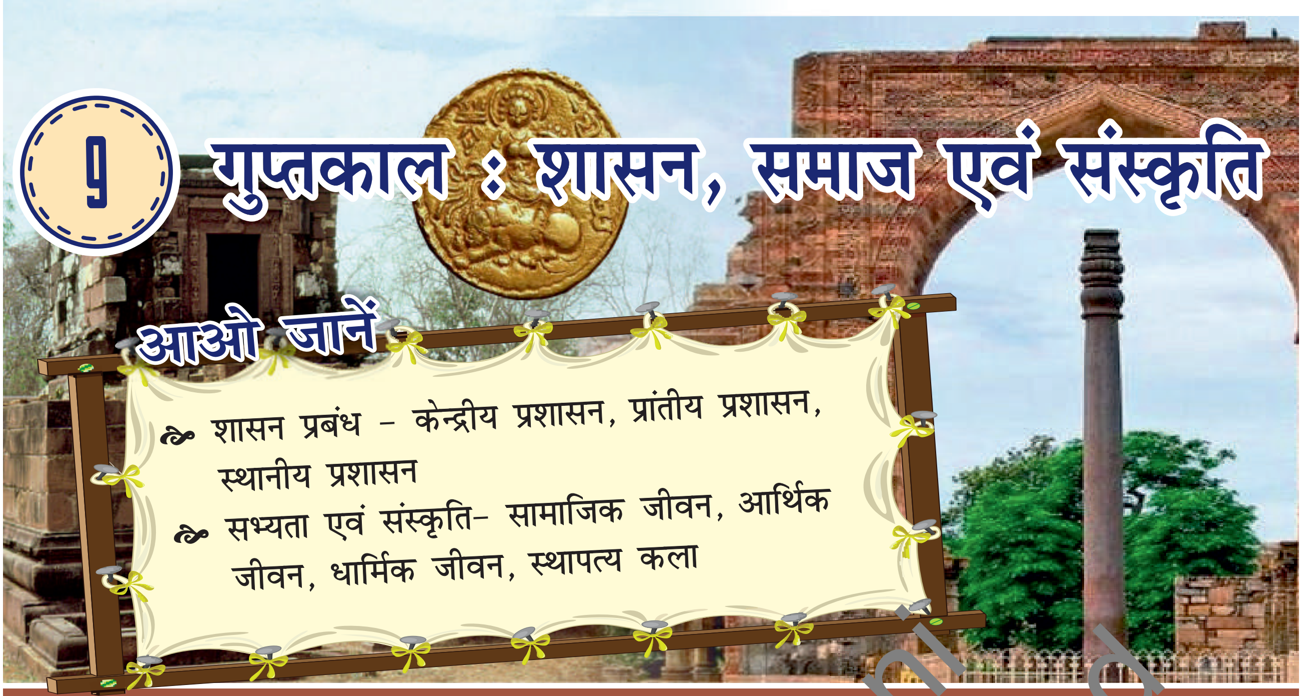

आओ जानें

- शासन प्रबंध – केन्द्रीय प्रशासन, प्रांतीय प्रशासन, स्थानीय प्रशासन
- सभ्यता एवं संस्कृति– सामाजिक जीवन, आर्थिक जीवन, धार्मिक जीवन, स्थापत्य कला

विद्यार्थी अध्याय 8 की पुनरावृत्ति करते हुए नीचे दिए गए चित्रों को पहचान कर दिए गए स्थान पर लिखें :

____

____

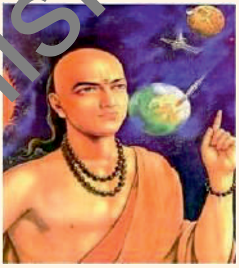
____

____

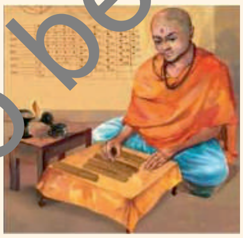
____

____

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

प्यारे बच्चों, पिछले अध्यायों में हमने पढ़ा था कि किस प्रकार विदेशी जातियों ने हमला करके भारत की एकता को छिन्न–भिन्न कर दिया। भारत को पुनः एकता के सूत्र में बांधने का श्रेय गुप्त राजाओं को है। इस वंश के राजाओं ने न केवल एक विशाल साम्राज्य की स्थापना की अपितु उच्च कोटि का शासन प्रबंध भी स्थापित किया। इसकी जानकारी हमें चीनी यात्री फाह्यान के यात्रा वर्णन, विशाखादत्त व कालिदास के नाटकों, विष्णु शर्मा के पंचतंत्र, हिन्दू धर्म ग्रंथ–स्मृतियां व पुराणों और इस काल में शिलालेखों, सिक्कों, मूर्तियों व अन्य पुरा अवशेषों से मिलती है।

गुप्त शासन व्यवस्था

किसी राजा के बारे में जानने के लिए उसके शासन प्रबंध को जानना आवश्यक है। गुप्त शासन व्यवस्था में केन्द्रीय, प्रांतीय तथा स्थानीय शासन के अतिरिक्त, आर्थिक व न्याय व्यवस्था पर भी उचित ध्यान दिया गया।

गुप्त काल को जानने के साधन

- चीनी यात्री फाह्यान का यात्रा वर्णन
- विशाखादत्त व कालिदास के नाटक
- हिन्दू धर्म ग्रंथ-स्मृति, पुराण व अन्य धार्मिक ग्रंथ
- अभिलेख, शिला लेख, सिक्के, मूर्तियां व अन्य प्राचीन अवशेष

केन्द्रीय शासन

राजा : इस काल में राजतंत्रीय शासन प्रणाली थी जिसमें सारी शक्तियां राजा के हाथ में होती थी। परन्तु वह प्रजा की भलाई में ही लगा रहता था। राजा निरंकुश होते हुए भी प्रजा की भलाई में कार्य करते थे। इसलिए प्रजा उनका सम्मान करती थी और देवता की तरह पूजा करती थी।

राजा अनेक उपाधियां धारण करता था

- महाराजाधिराज
- परम भट्टारक
- परमभागवत

मंत्रिमण्डल : राजा की सहायता के लिए एक मंत्रिमंडल का गठन किया गया था। एक मंत्री को कई विभाग भी दिए जाते थे। प्रशासन में राजकुमारों को शिक्षा देने के लिए उन्हें भी प्रशासनिक पद दिए जाते थे।

अधिकारीगण : राजा और मंत्रियों की सहायता के लिए योग्य अधिकारी रखे जाते थे। ये अधिकारी मुख्यत: सैनिक व्यवस्था, विदेश नीति, अभिलेख विभाग, वित विभाग, दान विभाग, पुलिस विभाग, राज महल की सुरक्षा का विभाग इत्यादि रखते थे। ये अधिकारी प्रशासनिक कार्यों में राजा की सहायता करते थे। इनके अतिरिक्त कुमारामात्य भी होते थे जो राज परिवार से सम्बधित होते थे।

सैनिक प्रबन्ध : राजा प्रधान सेनापति होता था। गुप्त शासकों ने शक्तिशाली सेना तैयार की, जो मुख्यत: चार भागों में विभाजित थी।

सेना के चार अंग थे

- थल सेना
- घुड़सवार सेना
- रथ सेना
- हाथी सेना

सेना का मुखिया महाबालाधिकृत होता था। हाथी सेना महापीलपति व घुड़सेना महाअश्वपति के अधीन थी। सैनिकों को नकद वेतन मिलता था बाद में वेतन के बदले भू-क्षेत्र दिए जाने लगे जिससे ये लोग शक्तिशाली होने लगे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

पुलिस : पुलिस की भी कुशल व्यवस्था थी। इसका मुखिया दण्डपाशिक था। दण्ड व्यवस्था सामान्य थी। पुलिस के भय से चोरी, हत्या के अपराध बहुत कम होते थे। गुप्तचर भी काफी मददगार होते थे।

क्या आप जानते हैं?

पुलिस कर्मचारियों को चाट या भाट कहा जाता था और पहरेदार को रक्षिन् कहते थे।

न्याय प्रबन्ध : गुप्त साम्राज्य में न्याय प्रणाली काफी उत्तम थी। राजा को सर्वोच्च न्यायाधीश माना जाता था। उसके अधीन प्रांत, जिला तथा नगरों में न्यायालय थे। गांव में झगड़ों का समाधान पंचायत करती थी। अपराधियों को सामान्यत: आर्थिक दण्ड दिया जाता था। विद्रोह करने वाले या बार-बार अपराध करने वालों को अंग-भंग का दण्ड मिलता था। प्राण दण्ड बहुत कम दिया जाता था।

प्रांतीय प्रशासन

प्रशासन में कुशलता लाने के लिए राजाओं ने अपने साम्राज्य को विभिन्न प्रांतों में बांटा हुआ था जिन्हें 'भुक्ति' कहते थे। प्रांत का प्रशासक उपारिक कहलाता था और ये राजपरिवार से सम्बधित होते थे इन्हें स्थानीय, भोगपति, गोप्ता इत्यादि भी कहते थे। इनका कार्य राजाओं की आज्ञा का पालन करना। अपने प्रांत में शांति बनाए रखना, सुरक्षा करना, कर एकत्रित करना, तथा प्रजा की भलाई करना शामिल था। इनकी सहायता के लिए भी अनेक अधिकारी होते थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

स्थानीय प्रशासन

विषय (जिला) : प्रांतों को आगे विषयों (जिलों) में बांटा गया था। जिसके अध्यक्ष विषयपति होते थे। इनकी सहायता के लिए भी अनेक अधिकारी होते थे। जैसे श्रेष्ठी सार्थवाह कुलिक कायस्थ इत्यादि।

नगर : विषयों को आगे नगर और ग्रामों में बांटा गया था। नगर का पदाधिकारी पुरपाल कहलाता था। जिसका कार्य नगर को साफ सुथरा बनाए रखना, स्वास्थ्य पर ध्यान देना, नगर से कर एकत्रित करना, नगर की सुरक्षा करना, रोशनी का प्रबन्ध करना इत्यादि शामिल था।

ग्राम : ग्राम का प्रबन्ध ग्रामपति के हाथ में होता था जिसे महतर भी कहते थे इसकी सहायता के लिए ग्रामिक, कुटम्बिन इत्यादि होते थे। जिनका कार्य ग्राम में शांति बनाए रखना, कर इकट्ठा करना, जमीन का लेखा-जोखा करना, सफाई रखना, झगड़ों का निपटारा करना इत्यादि होता था।

व्यक्तिगत गतिविधि

पता लगाएं :
1. गांव के प्रमुख/प्रधान को क्या कहा जाता है?
2. यदि आप गांव से हैं तो आपके गांव का मुखिया/प्रधान कौन है? नाम बताएं।
3. गांव का मुखिया/प्रधान कैसे चुना जाता है?
4. गांव के मुखिया/प्रधान के क्या कार्य हैं?

प्रशासनिक इकाई	प्रशासनिक अधिकारी
साम्राज्य	सम्राट
प्रान्त (भुक्ति)	उपारिक
विषय (जिला)	विषयपति
नगर (शहर)	पुरपाल
ग्राम (गांव)	ग्रामपति, महतर

विभाग	मुखिया
सेना	महाबालाधिकृत
हाथी सेना	महापीलपति
घुड़सेना	महाअश्वपति
पुलिस	दण्डपाशिक
न्यायपालिका	राजा

आय-व्यय का प्रबंध

राज्य की आय का मुख्य साधन भूमि कर था जो उपज का 1/6 भाग होता था आय के अन्य साधनों में चुंगी कर, चरागाहों व वनों से मिलने वाला कर, नमक कर इत्यादि शामिल थे। अपराधियों पर आर्थिक दण्ड, विजित प्रदेशों व अन्य राजाओं से मिलने वाले उपहारों से भी आय होती थी। राष्ट्र के अंदर तथा बाहर व्यापार उन्नत था। उद्योगों से भी राज्य की आय होती थी।

राज्य का खर्च सेना की आवश्यकताएं, अधिकारियो को वेतन, राजमहल की आवश्यकताओं तथा प्रजा हित कार्यो पर होता था।

प्रजाहित कार्य

सिंचाई के लिए सौराष्ट्र (गुजरात) में गुप्त शासक स्कन्दगुप्त ने सुदर्शन झील का पुनर्निर्माण करवाया, यातायात के लिए सड़कों का निर्माण करवाया। प्राकृतिक आपदा में राजा प्रजा की सहायता करता था। गुप्त शासक सनातन संस्कृति को मानने वाले थे, परन्तु वे सभी मतों का सम्मान करते थे। उस काल में हिन्दूओं के अनेक मंदिर बने। बौद्ध मत की गुफाएं, चैत्य और मठों-विहारों का निर्माण हुआ।

चित्र 9.1 सुदर्शन झील का वर्तमान चित्र

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

सभ्यता एवं संस्कृति

सामाजिक जीवन : गुप्त काल में सामाजिक जीवन काफी सुखी और समृद्ध था। चीनी यात्री फाह्यान यहां के सामाजिक जीवन की प्रंशसा करता है। वह लिखता है कि यहां पर खान-पान की वस्तुएं काफी सस्ती हैं। यहां पर चोरी का कोई भय नहीं है। इस काल की सामाजिक विशेषताएं इस प्रकार हैं :

वर्ण व्यवस्था : उस काल का समाज चार वर्णो में विभक्त था।

वर्ण

ब्राह्मण	क्षत्रिय	वैश्य	शूद्र
ब्राह्मणों का कार्य यज्ञ करना और कराना, पढ़ना और पढ़ाना तथा दान लेना और देना था।	क्षत्रियों का कार्य साम्राज्य और समाज की सुरक्षा करना था।	कृषि का समस्त कार्यभार और व्यापारिक कार्य वैश्यों के लिए निधारित था, इन्हें श्रेष्ठी, वणिक व सार्थवाह भी कहा जाता था।	शूद्रों का मुख्य कार्य मिट्टी, लकड़ी, चमड़े तथा धातुओं की वस्तुएं बनाना तथा कृषि कार्य में सहायता करना था।

आपात काल में ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र एक दूसरे के कार्य भी करते थे। उस काल में एक अंत्यज (चाण्डाल) जाति का भी उल्लेख मिलता है। ये जाति जंगली जानवरों का शिकार, शमशान घाट की रखवाली इत्यादि कार्य करते थे इन्हें समाज से बाहर रहना पड़ता था और इन्हें निम्न दृष्टि से देखा जाता था।

विवाह प्रथा : वैसे सामान्यत: मनुष्य अपने वर्ण में ही शादी करते थे। परन्तु अंतर्जातीय विवाहों के भी प्रमाण मिलते हैं ऊंची जाति के व्यक्ति द्वारा निम्न जाति की स्त्री से विवाह को अनुलोम विवाह कहते थे। निम्न जाति के व्यक्ति द्वारा उच्च जाति की स्त्री से विवाह को प्रतिलोम विवाह कहते थे। राजाओं में बहु-विवाह की प्रथा भी प्रचलन में थी।

खान-पान : गुप्तकाल में अधिकांशत: जनता का भोजन शुद्ध और सात्विक था। लोग प्याज व लहसुन का भी प्रयोग नहीं करते थे। शाकाहारी भोजन में गेहूं, चावल, दूध, दही एवं फलों इत्यादि का प्रयोग होता था। मांस-मदिरा के प्रयोग को घृणा की दृष्टि से देखा जाता था।

मनोरंजन के साधन : मनोरंजन के लिए संगीत जिसमें गाना, बजाना, नाचना तीनों का प्रचलन था। चौपड़ व शतरंज जैसे खेल होते थे, पशुओं की लड़ाई, रथ दौड व शिकार से भी मनोरंजन होता था नाटक व खेल-तमाशे भी मनोरंजन के प्रमुख साधन थे।

वस्त्र-आभूषण : उस काल में सूती और रेशमी कपड़े का प्रयोग होता था। पुरुष धोती-कुर्ता का प्रयोग करते थे और सिर पर पगड़ी धारण करते थे। विदेशी जातियां जैसे कुषाणों के प्रभाव से कोट-पजामा का प्रयोग भी बढ़ रहा था। स्त्रियां साड़ी से शरीर ढकती थी। पुरुष एवं स्त्रियां दोनों ही आभूषणों के शौकीन थे। स्त्रियां कानों में बालियां, मालाएं और हार, हाथों में कंगन, चूड़ियां, पैरों में पायल आदि पहनती थी। गले में विभिन्न प्रकार की मालाएं, हाथों में कड़े एवं अंगूठी पहनते थे। बालों को संवारने के भी कई तरीके थे।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

स्त्रियों की स्थिति : इस काल में स्त्रियों की स्थिति में कुछ गिरावट आ गई थी और शिक्षा भी कम स्त्रियां ले पाती थी। केवल उच्च घराने की स्त्रियां ही शिक्षा एवं अन्य क्षेत्रों में प्रवीणता प्राप्त करती थी। वे कुशल शासिका, शिक्षिका और कला में निपुण थी। सती प्रथा का आरम्भ हो चुका था। विधवाओं की स्थिति अच्छी नहीं थी।

आर्थिक जीवन

कृषि : इस काल में मुख्य कर्म कृषि ही था। वराहमिहिर ने वर्ष में तीन फसल लेने का उल्लेख किया है जिनमें ठण्ड में (रबी), बरसात में (खरीफ) एवं साधारण समय में होने वाली फसलें थी। प्रमुख फसलें गेहूं, धान, ज्वार, ईख, बाजरा, मटर, दाल, तिल, सरसों, मसालें इत्यादि। सिंचाई के लिए वर्षा पर निर्भर थे परन्तु नहरों, तालाबों, झीलों, कुओं का भी प्रयोग किया जाता था। जंगलों से कीमती लकड़ी प्राप्त की जाती थी। जमीन पर व्यक्ति का अधिकार होता था। परन्तु पंचायत की आज्ञा के बिना वह उसे खरीद/बेच नहीं सकता था।

उद्योग-धंधे : कृषि के अतिरिक्त उद्योग-धंधे प्रमुख व्यवसाय था। कपड़े बुनना, धातु के बर्तन बनाना, पत्थर को तराशना, मिट्टी के बर्तन बनाना, आभूषण बनाना, हाथी दांत, कीमती पत्थरों के आभूषण बनाना इत्यादि प्रमुख उद्योग थे।

व्यापार : उस काल में व्यापार में काफी उन्नत था। आंतरिक और बाह्य दोनों व्यापार होते थे। जल मार्ग और स्थल मार्ग से व्यापार होता था। नदियों के किनारे प्रमुख नगर स्थित थे जैसे- पाटलिपुत्र, मथुरा, कौशाम्बी, वैशाली, ताम्रलिप्ति, विदिशा, उज्जयिनी, पैठन और भरूकच्छ इत्यादि। जिन देशों से व्यापार होता था, उनमें अरब, ईरान, मिस्र, रोम, चीन, पूर्वी द्वीपसमूह तथा अनेक यूरोपियन और अनेक अफ्रीकी देश प्रमुख हैं। उस काल में व्यापारियों, शिल्पियों के अपने-अपने संघ होते थे। ये श्रेणियां पैसे भी जमा करती थी। और एक प्रकार से बैंक का कार्य होता था।

क्या आप जानते हैं?

दक्षिण-पूर्वी देशों बर्मा, जावा, कम्बोज आदि में व्यापार के साथ-साथ भारतीय धर्म और संस्कृति का प्रचार-प्रसार हुआ। वे इन परम्पराओं को आज तक संजोए हुए हैं।

धार्मिक जीवन

हिन्दू संस्कृति : यह काल हिन्दू धर्म के पुनरुत्थान का काल था। गुप्त वंश के राजा हिन्दू धर्म व संस्कृति के पोषक थे। इस संस्कृति के प्रसार में इन्होंने कोई कमी नहीं छोड़ी। हिन्दू संस्कृति के प्रमुख मत वैष्णव, शैव, देवी-पूजा (शाक्त) तथा सूर्य मत के प्रमाण प्राप्त होते हैं।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

विष्णु के दस अवतारों में वराह, राम, कृष्ण की मूर्तियां प्राप्त होती हैं। शिव की आराधना के भी प्रमाण मिलते हैं। शिव परिवार के सदस्यों और विभिन्न प्रतीक चिह्नों शिवलिंग, त्रिशूल, गणेश, कार्तिकेय, नन्दी की भी पूजा की जाती थी। शक्ति के प्रतीक देवी पूजा में लक्ष्मी, दुर्गा, पार्वती की भी पूजा होती थी। इनकी प्रतिमाएं विभिन्न भागों में पाई जाती हैं। सूर्य मन्दिरों के भी अवशेष मिलते हैं। मध्य प्रदेश के मंदसौर, ग्वालियर, इन्दौर आदि में सूर्य प्रतिमाएं मिलती हैं।

हिन्दू सम्प्रदाय

वैष्णव मत : इसमें विष्णु और उसके दस अवतारों की पूजा की जाती है – 1.मत्स्य 2.कूर्म 3.वराह 4.नरसिंह 5.वामन 6.परशुराम 7.राम 8.कृष्ण 9.बुद्ध 10.कल्कि।

शैव मत : शिव के प्रतीक शिवलिंग, पार्वती, कार्तिकेय, गणेश, नन्दी आदि की पूजा की जाती है।

सौर मत : इसमें भगवान सूर्य की अराधना की जाती है।

शाक्त मत : शक्ति की प्रतीक विभिन्न देवियों की पूजा की जाती है।

©BSEH Bhiwani
Not to be republished

बौद्ध मत : फाह्यान ने अफगानिस्तान, कश्मीर, पंजाब, बंगाल, मथुरा में बौद्ध मत के प्रभाव का उल्लेख किया। इस काल में सारनाथ, अजन्ता, नागार्जुनकोंडा, एलोरा आदि स्थानों पर बौद्धकला मिलती है। नालंदा और वल्लभी जैसे विश्वविद्यालय बौद्ध शिक्षा के प्रमुख केन्द्र थे। गुप्त सम्राट बौद्ध शिक्षण स्थानों को भी राजकीय सहायता देते थे।

चित्र 9.2 **अजन्ता एलोरा की बौद्धकला**

जैन मत : हिन्दू सनातन संस्कृति और बौद्ध मत की भांति जैन मत में भी तीर्थंकरों की मूर्तियों की पूजा मन्दिरों में होती थी। इस काल में जैन मत के श्वेताम्बर शाखा की सभाएं एक मथुरा में तथा दूसरी वल्लभी में आयोजित हुई। इस काल की प्रमुख विशेषता विभिन्न मतों के प्रति सहनशीलता है जिसके अनुसार विभिन्न मत साथ-साथ रहते हुए विकास करते थे। गुप्त शासकों द्वारा सभी मतों को समान माना जाता था।

- जैन धर्म की दो मुख्य शाखाएँ हैं – दिगम्बर और श्वेतांबर
- श्वेतांबर शाखा के अनुयायी श्वेत वस्त्र धारण करते हैं।
- दिगम्बर शाखा के अनुयायी निर्वस्त्र रहते हैं।

व्यक्तिगत गतिविधि

नालंदा और तक्षशिला विश्वविद्यालय गुप्त काल में उच्च शिक्षा प्रदान करते थे। पता लगाएं कि
1. हरियाणा में कुल कितने विश्वविद्यालय हैं?
2. हरियाणा के विश्वविद्यालयों और शेष भारत के कुछ प्रमुख विश्वविद्यालयों के नामों की सूची बनाएं।

कलात्मक और वैज्ञानिक उन्नति

कलात्मक और वैज्ञानिक क्षेत्रों में जितना विकास इस काल में हुआ इतना किसी भी समय में नहीं हुआ। इसी आधार पर कुछ इतिहासकार गुप्त काल को स्वर्ण युग मानते हैं क्योंकि इस काल में एक तरफ शान्ति और व्यवस्था स्थापित हुई और दूसरी ओर विभिन्न कला क्षेत्रों में उन्नति हुई। आर्थिक दृष्टि से देश काफी धनी बना और सोने के सिक्के प्रचलन में आए। इस काल के विभिन्न कलात्मक विकास को हम निम्न प्रकार से देख सकते हैं :

चित्र 9.3 गुप्तकालीन सिक्के

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

स्थापत्य कला : इस काल में अनेक मन्दिरों का निर्माण हुआ, जिनमें से कुछ अब भी बचे हुए हैं, इनमें देवगढ़ (झांसी) का दशावतार (विष्णु) मन्दिर, भीतरी गांव का दशावतार, भूमरा (मध्य प्रदेश) का शिव मन्दिर, नचना कुठार (मध्यप्रदेश) का पार्वती मन्दिर, तिगवा (मध्य प्रदेश) का वैष्णव मन्दिर। बौद्ध गया तथा सांची के मन्दिर इत्यादि। इन मन्दिरों की छत चपटी होती थी परन्तु बाद में इनके ऊपर शिखर निर्मित किए जाने लगे। प्रवेश द्वार के स्तम्भों और चौखटों पर कलाकृतियां उत्कीर्ण हैं।

इस काल में बौद्धों के अनेक गुफाओं, विहारों, चैत्यों और स्तूपों का निर्माण हुआ। उदयगिरि की पहाड़ी में वैष्णव और शैवमत की गुफाओं में अनेक देवी-देवताओं की मूर्तियां बनाई गई।

चित्र 9.4 देवगढ़ (झांसी)

चित्र 9.5 भूमरा (मध्य प्रदेश)

चित्र 9.6 नचना कुठार (मध्यप्रदेश)

चित्र 9.7 तिगवा (मध्य प्रदेश)

मूर्तिकला : इस काल में महात्मा बुद्ध, विष्णु, शिव एवं सूर्य आदि देवी-देवताओं की मूर्तियां मिलती हैं, जो पत्थर, धातु या मिट्टी की बनी हुई हैं। मथुरा व अमरावती मूर्ति बनाने के प्रमुख केंद्र थे। यह कला पूर्णतया भारतीय थी। दूसरी विशेषता इनकी सरलता है। तीसरी विशेषता इनकी सुन्दरता है। इनमें वस्त्रों को इतनी कुशलता से बनाया है कि उनमें स्वाभाविक सौन्दर्य और मनोहरता झलकती है।

चित्र 9.8 मूर्तिकला (दशावतार मंदिर, देवगढ़)

चित्र 9.9 चित्रकला (अजंता की गुफाएं)

चित्रकला : गुप्त काल में चित्रकला के प्रमाण अजन्ता, एलोरा, बाघ आदि की गुफाओं में बने चित्र हैं। इन चित्रों ने गुप्त कला को अमर बना दिया है। इन चित्रों में पशु-पक्षी, फूल-पत्ती, नर-नारी आदि का बड़ा सजीव चित्रण मिलता है इन चित्रों से तत्कालीन वेशभूषा, केश-विन्यास तथा अलंकार प्रसाधन को समझने में सुविधा होती है।

धातुकला : धातु को गलाना, ढालना और उसको आकार देने की उच्च कला उस काल में थी। महरौली (दिल्ली) में चन्द्रगुप्त द्वारा बनवाया गया लौह स्तम्भ इस कला का अद्भुत नमूना है इसे पिछले 1600 साल से आज तक तूफान, वर्षा और हवा के पश्चात भी जंग नहीं लगा।

बिहार से महात्मा बुद्ध की नालंदा से मिली कांसे की प्रतिमा आज भी हमें गर्व अनुभव कराती है। उस काल में सिक्के बनाने की कला भी बहुत विकसित थी। हमें सोने तथा चांदी के सिक्के प्राप्त होते हैं, जिन पर देवी-देवताओं और राजाओं के चित्रण मिलते हैं। संस्कृत भाषा में शासकों के नाम भी मिलते हैं।

चित्र 9.10 लौह स्तम्भ, महरौली (दिल्ली)

चित्र 9.11 समुद्रगुप्त के सिक्के

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

साहित्य : गुप्त शासको ने संस्कृत भाषा को प्रोत्साहित किया। साहित्य के क्षेत्र में कालिदास इस काल के महान साहित्यकार थे। उस काल के अन्य लेखक विशाखादत्त, भारवि, शूद्रक, अमर सिंह और दण्डिन थे। उस काल में पंचतन्त्र तथा हितोपदेश कहानी के संग्रह लिखे गए, जिनका संसार के अन्य भाषों में अनुवाद हो चुका है।

कालिदास की प्रमुख रचनाएं

- अभिज्ञानशाकुन्तलम्
- मालविकाग्निमित्र
- विक्रमोर्वशीयम्
- कुमारसम्भव
- रघुवंश
- ऋतुसंहार
- मेघदूत

वैज्ञानिक उन्नति

विज्ञान के क्षेत्र में भी विशेषत: गणित, ज्योतिष तथा चिकित्सा में कई खोजें हुईं और ग्रंथ लिखे गए। इस काल के महान वैज्ञानिक आर्यभट्ट, वराहमिहिर तथा ब्रह्मगुप्त आदि थे।

गणित : आर्यभट्ट ने बीजगणित के सूत्र निकाले। पाई का शुद्ध मान बताया था। अक्षरों द्वारा अंक लिखने की प्रथा, अंकों का स्थानीय मान खोजा। इसी काल में शून्य और दशमलव प्रणाली का जन्म भी हुआ। ब्रह्मगुप्त ने ब्रह्मास्फुट सिद्धांत की रचना की। ब्रह्मगुप्त ने गणित, बीजगणित और रेखागणित के अनेक सिद्धान्त बनाए। गुरुत्वाकर्षण का सिद्धान्त भी इन्होंने दिया।

खगोल : आर्यभट्ट ने पृथ्वी को गोल बताया। इसके धुरी पर घूमने तथा इसकी परिधि का मान तथा वर्ष का मान निकाला। वराहमिहिर ने बृहत्संहिता तथा ज्योतिष का ग्रंथ बृहत्जातक भी लिखा। भूगोल और वनस्पति-विज्ञान के विषय में वराहमिहिर ने बहुत कुछ स्पष्ट किया।

चित्र 9.12 भगवान बुद्ध की प्रतिमा (सारनाथ)

चिकित्सा : इस क्षेत्र में चरक तथा सुश्रुत ने अपनी संहिताएं लिखीं। वाग्भट्ट ने अष्टांग संग्रह की रचना की। इसी काल में हाथी तथा घोड़े की चिकित्सा पर हस्त्यायुर्वेद व अश्वशास्त्र लिखे गए।

तकनीक : महरौली का लौह स्तंभ, सुल्तानगंज तथा सारनाथ में तांबे की भगवान बुद्ध की प्रतिमाएं इसी काल में बनी।

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

शिक्षा

गुप्तकाल में शिक्षा अपनी चरम सीमा पर थी। इस समय नालंदा विश्वविद्यालय एवं उदयगिरी विश्वविद्यालय प्रमुख थे। उड़ीसा में उदयगिरी, रत्नगिरी, ललितगिरी को मिलाकर विशाल विश्वविद्यालय बनाया गया था, जो बौद्ध शिक्षा का प्रमुख केंद्र था। यहां माधवपुर महाविहार का उल्लेख मिलता है। इनके अतिरिक्त वल्लभी, पाटलिपुत्र, बनारस, मथुरा, उज्जैन, सारनाथ आदि स्थान भी शिक्षा के प्रमुख केंद्र थे। इनमें शिक्षा प्राप्त करने के लिए दूर-दूर के क्षेत्रों व विदेशों से भी विद्यार्थी आते थे।

चित्र 9.13 नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष

नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना गुप्त सम्राट कुमारगुप्त ने की थी। इस विश्वविद्यालय में प्रवेश करने के लिए एक प्रवेश परीक्षा होती थी। जिसे उत्तीर्ण करने पर ही विद्यार्थी को प्रवेश मिलता था। इसमें लगभग 10000 विद्यार्थी और 1500 के लगभग आचार्य पठन-पाठन का कार्य करते थे। यहां पर 3 मंजिला विशाल पुस्तकालय था। यहां पर भाषाएं, व्याकरण, धर्म, दर्शन, इतिहास, भूगोल, राजनीतिशास्त्र, विज्ञान, कूटनीति इत्यादि विषय पढाये जाते थे। शिक्षा के इन महान केन्द्रों ने भी गुप्तकाल को स्वर्णकाल बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी।

©BSEH, Bhiwani Not to be republished

माइंड मैप

गुप्त काल को स्वर्ण युग क्यों मानते हैं

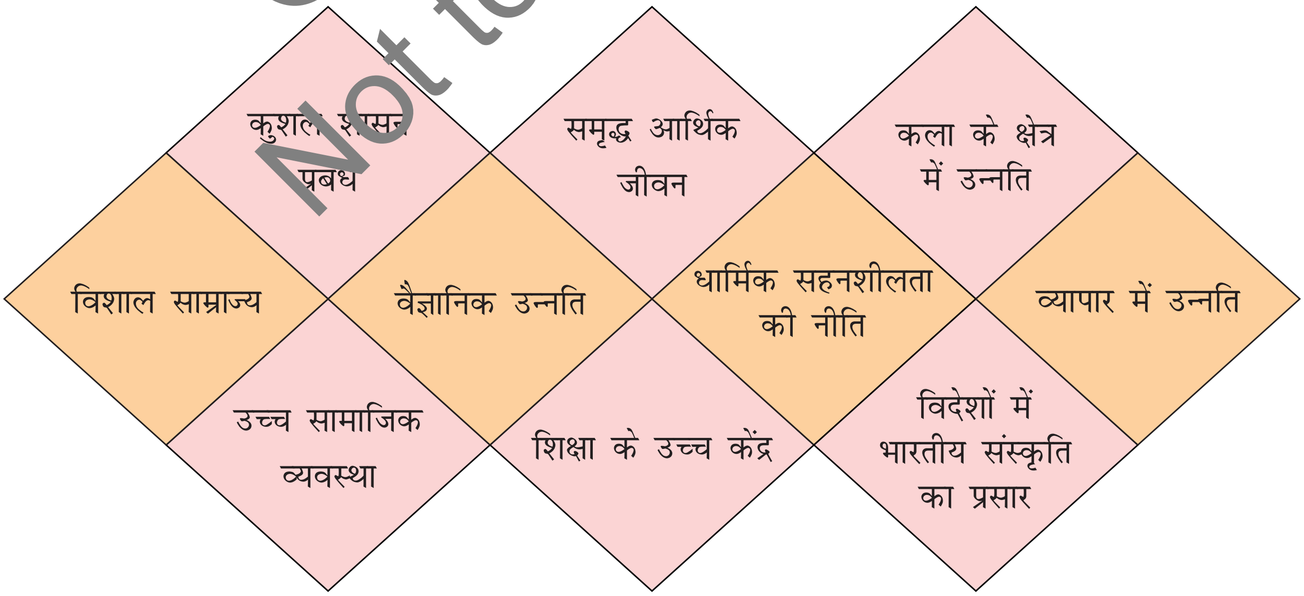

आओ जानें, कितना सीखा

सही उत्तर छांटें :

1. गुरुत्वाकर्षण का सिद्धांत .... ने दिया।
   क) कालिदास ख) विष्णु शर्मा ग) ब्रह्मगुप्त घ) चरक
2. घुड़सवार सेना .... के अधीन थी।
   क) पुरपाल ख) रक्षित ग) कुटम्बिन घ) महाअश्वपति
3. भूमि कर उपज का .... भाग होता था।
   क) 1/2 ख) 1/6 ग) 1/3 घ) 1/8
4. गुप्त काल में समाज .... वर्णों में बंटा था।
   क) 4 ख) 8 ग) 2 घ) 5
5. नालंदा विश्वविद्यालय की स्थापना .... ने की थी।
   क) कुमारगुप्त ख) चन्द्रगुप्त प्रथम ग) स्कन्दगुप्त घ) हर्षवर्धन

रिक्त स्थान की पूर्ति करें :

1. गुप्तकाल में .... शासन प्रणाली प्रचलित थी।
2. पुलिस कर्मचारियों को .... या .... कहा जाता था।
3. गांव में झगड़ों का समाधान .... करती थी।
4. गुप्तकालीन शासक .... धर्म को मानते थे।
5. सिंचाई के लिए .... , ... , ... का भी प्रयोग किया जाता था।

उचित मिलान करो :

1. पहरेदार	क) भुक्ति
2. प्रांत	ख) रक्षित
3. हाथी सेना	ग) सौराष्ट्र
4. सुदर्शन झील	घ) महापीलपति
5. ग्रामपति	ड़) महतर

निम्नलिखित कथनों में सही (✓) अथवा गलत (✗) का निशान लगाओ :

1. गुप्त राजाओं ने हिंदी भाषा को प्रोत्साहित किया। (   )
2. महरौली में चन्द्रगुप्त द्वारा बनवाया लौह स्तंभ धातु कला का अद्भुत नमूना है। (   )

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished

3. आर्यभट्ट ने पृथ्वी को गोल बताया था। ( )
4. सती प्रथा का आरंभ गुप्त काल में हो चुका था। ( )
5. नगर के मुखिया को पुरपाल कहते थे। ( )

लघु प्रश्न :

1. गुप्तकाल में सेना के चार अंग कौन से थे?
2. गुप्तकाल में भारत का व्यापार किन देशों के साथ होता था?
3. वाग्भट्ट द्वारा रचित रचना का नाम बताएं।
4. गुप्तकालीन शासकों ने प्रजा के हित के लिए क्या कार्य किए?
5. गुप्तकाल में जैन मत की श्वेतांबर शाखा की सभाएं कहां आयोजित की गई थीं?

आइए विचार करें :

1. अनुलोम और प्रतिलोम विवाह में क्या अंतर होता है? बताएं।
2. हिन्दू धर्म के संप्रदायों का वर्णन करें।
3. गुप्तकाल की कौन-कौन से देवी-देवताओं की मूर्तियां मिली हैं और इस काल की मूर्तिकला की क्या विशेषताएं हैं?
4. साहित्य के क्षेत्र में इस काल में बहुत उन्नति हुई, तर्क दें।
5. गुप्तकालीन प्रांतीय शासन व्यवस्था पर नोट लिखें।

आओ करके देखें

1. अपने स्थान के निकटवर्ती संग्रहालय में जाकर तत्कालीन मूर्तियों व सिक्कों का अध्ययन करें।

कुछ सुझाए गए संग्रहालय

- कृष्ण संग्रहालय, कुरुक्षेत्र
- धरोहर संग्रहालय, कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय
- जयंती पुरातात्विक संग्रहालय, जींद
- गुरुकुल, झज्जर
- बालभवन, सिरसा
- अस्थलबोहर मठ, रोहतक
- हरियाणा पुरातत्व विभाग, पंचकुला
- पुरातत्व विभाग, पंजाब
- ए.एस.आई. म्यूजियम, दिल्ली
- मथुरा संग्रहालय, उत्तरप्रदेश

©BSEH, Bhiwani
Not to be republished